।। जय भवानी जय शिवराय ।।

हिंदवी स्वराज्य

अखंड संस्करण और मूल रूप संस्करण
अधिकृत संस्करण

श्री हर्षित मनोज जगताप

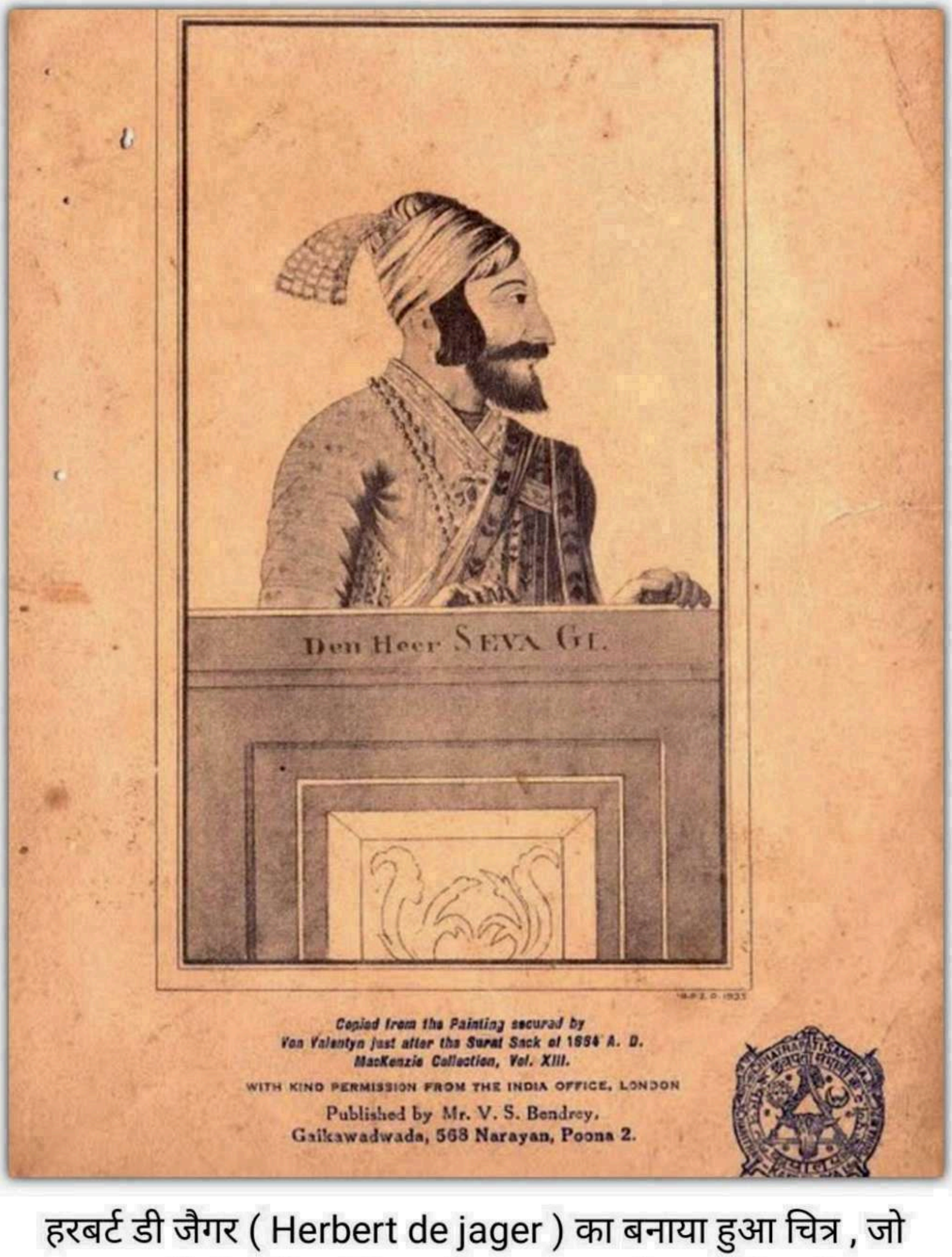
हिंदवी स्वराज्य (Hindvi Swarajya)
हर्षित मनोज जगताप

भाषा :- हिंदी

प्रथम संस्करण प्रकाशित :- भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रतिपदा २०८२ विक्रम संवत (10 August 2025)

ISBN :- 978-93-343-4521-6

हर्षित मनोज जगताप द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित ।



हरबर्ट डी जैगर (Herbert de jager) का बनाया हुआ चित्र , जो बाद में लंदन के म्यूजियम में रखा गया , और इस चित्र को वासुदेव सीताराम बेंद्रे जी ने भारत वापिस लाया ... ।


Sieuwagie gewezen
Maratise Vorst.



छत्रपति संभाजी महाराज का चित्र





वासुदेव सीताराम बेंद्रे जी



हिंदवी स्वराज्य – अंतर्वस्तु

१ – शिवराय के जन्म से पहले का इतिहास

• बाबाजी राजे भोसले और मालोजी राजे भोसले :-

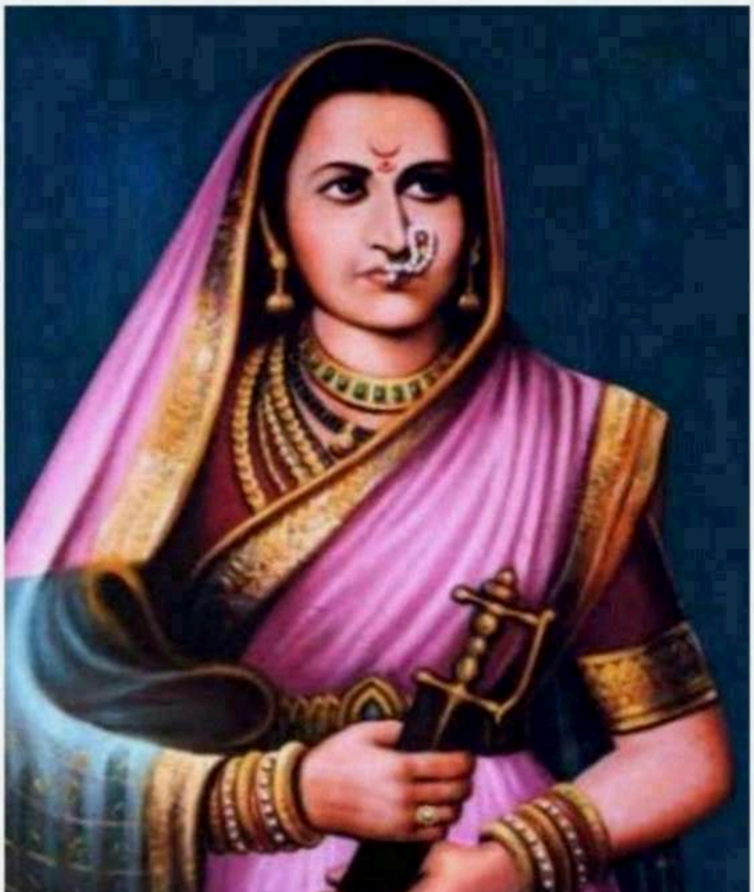
बाबाजी राजे भोसले असल में शाहजी राजे भोसले (छत्रपति शिवाजी महाराज के पिता) के दादाजी थे , इनका इतिहास पुरातन होने के कारण इनकी कम माहिती है , और इनके पुत्र थे 'मालोजी राजे भोसले ' (शाहजी राजे भोसले के पिताजी) , तो इन्हें पुत्र प्राप्ति नहीं हो रही थी , इस लिए इन्होंने इच्छा मांगी कि उन्हें पुत्र प्राप्ति हो और फिर उन्हें २ पुत्र प्राप्त हुए , बड़े पुत्र का नाम रखा 'शाहजी राजे' और छोटे पुत्र का नाम रखा गया 'शरीफ जी राजे' ।

मालोजी राजे ने 'वेरूल के घृष्णेश्वर महादेव मंदिर' का जीर्णोद्धार कराया था , और इन्होंने कई अच्छे काम किए और वह एक महान सरदार थे , और इंदापुर के युद्ध में इन्हें वीरगति प्राप्त हुई ।

कई लोगों का यह मानना है कि छत्रपति शिवाजी महाराज असल में राजपूत थे और वह ये मानते है कि भोसले परिवार असल में पहले राजपूत परिवार था , मगर यह असत्य है क्यों कि भोसले परिवार प्राचीन समय में एक किसान परिवार था (और है यह सत्य है कि शिवराय जन्म से राजा नहीं थे , बल्कि वो अपने दम पर राजे बने और उन्होंने ***हिंदवी स्वराज्य*** की स्थापना की और हमारे देश भारत को बचाया) , और इसके बारे में आगे जानकारी मिलेगी कि कैसे शिवाजी महाराज राजपूत नहीं थे ।

• शाहजी राजे भोसले और जीजाबाई :-





• शाहजी राजे भोसले और जीजाबाई :-

शिवराय में युद्ध की वीरता , कुशल प्रशासक की बुद्धिमत्ता और स्वतंत्र शासन के मूल गुणों का बीजारोपण करने वाले व्यक्ति थे 'शाहजी राजे' , और इन्होंने अपना स्वतंत्र शासन भी चलाया था , और यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि छत्रपति शिवाजी महाराज को बुद्धिमत्ता , वीरता , और शौर्य शाहजी राजे से धरोहर में मिला होगा , चलिए शाहजी राजे के बारे में और जानते है - तो १६०३ ईसा में लखुजी जाधव की पुत्री जीजाबाई (राजमाता जीजाबाई) का विवाह शाहजी राजे से हुआ , और शाहजी राजा और राजमाता जीजाबाई दोनों के मानो में स्वराज्य करने का संकल्प था , जिसके लिए उन्होंने अनेक काम किए , और ऐसे पुणे की जागीरदारी उनके पास आई , और उन्हें २ पुत्र हुए , उनके बड़े पुत्र थे 'संभाजी राजे' जो कि शिवराय के बड़े भाई भी थे , इनके बारे में कम जानकारी मिलती है , क्यों कि इन्हें कर्नाटक की जागीरदारी दी गई थी (और १६५५ ईसा में इनको अफ़ज़ल खान ने मारा वो भी धोखे से) , और जीजाबाई-शाहजी राजे के छोटे पुत्र हुए 'छत्रपति शिवाजी महाराज' , और बचपन से ही जीजाबाई और शाहजी महाराज ने शिवराय को धर्म के मार्ग पर चलना सिखाया , और उन्होंने शिवराय को हिंदवी स्वराज्य बनाने के लिए प्रेरित किया , जिसे शिवराय ने आखिर कर ही दिखाया था (और हम लोगों को उन्होंने बचाया था) , और स्वराज्य स्थापित करने हेतु अत्यंत अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित की थीं इसी समय श्यामराज रंजक , बालकृष्ण पंत , हनुमते , रघुनाथ बल्लाल , अत्रे कांजी जेड नाइक और कई अन्य महत्वपूर्ण सरदारों को छत्रपति शिवाजी महाराज के साथ राज्य में भेजा गया , राज्य के प्रशासन के लिए आवश्यक वस्तु शाहजी राजे ने शिवराय को दी थी , और २३ जनवरी १६६४ ईसा में जब शाहजी राजे वन में शिकार कर रहे थे , तब उनका घोड़ा एक पेड़ में फंस कर गिर गया , और उस घोड़े के साथ ही शाहजी महाराज की दुखद मृत्यु हो गई , मगर छत्रपति शिवाजी महाराज के मन में स्वराज्य करने का संकल्प राजमाता जीजाबाई और शाहजी ने ही डाला था , जिससे उहोंने स्वराज्य बनाया ।

२ – शिवराय का जन्म और बालपन

• छत्रपति शिवाजी महाराज का बालपन :–

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म फाल्गुन शुक्लपक्ष तृतीय १६८७ (विक्रम संवत) / १९ फरवरी १६३० ईसवी में हुआ था , छत्रपति शिवाजी महाराज की माता और उनके पिता ने बचपन से ही उन्हें अच्छे संस्कार दिए थे , और इसलिए उन्होंने सनातनियों को एकत्रित कर १६४५ ईसा में 'हिंदवी स्वराज्य' की शपथ खाई थी , और १६४६ में ही उन्होंने अपना पहला गढ़–किल्ला जीता (जो कि 'तारणा' था) , और उन्होंने अपना आयुष हिंदवी स्वराज्य के लिए अर्पित किया , उन्होंने बहारी आक्रांताओं को हराया और फिर उनसे सारे दुश्मन डरने लगे और इसी कारण से औरंगज़ेब छत्रपति शिवाजी महाराज के काल में कभी महाराष्ट्र (दक्खन में भी कभी नहीं आया) में नही आया , और इस लिए शिवाजी महाराज की उपलब्धियों को लेकर मै कहना चाहूंगा कि –

"३५ साल की आयु में ३६०+ किल्ले जितनी वाले भारत के महान राजा , जितनी युद्धनीति इतनी कारगर थी कि आज भी इनकी युद्धनीति पर १३६ देशों में शोध की जाती है , और इनके गनिमी कावा (गुरिल्ला वॉरफेयर सिस्टम) के बारे में दुनिया के ३२ देशों में पढ़ाया जाता है , इससे ही आप समझ सकते हो कि कितने ताकतवर और बुद्धिमान राजा थे वो , और मुगल , डच , अंग्रेज , पोर्तुगीज , आदिल शाह , निजाम शाह , कुतुब शाह , और इन जैसी १७६९ सल्तनत इस देश पर राज करने आई थी ,....

और इन १७६० सुल्तनतो को उखाड़ फेंकने वाले एक राज – छत्रपति शिवाजी महाराज , जिनकी वजह से आज हमारा अस्तित्व है ।"

शिवराय के बालपन के किस्से भी प्रख्यात है , जिसमें से एक है वो किस्सा जिसमें बाल शिवराय ने कसाई के हाथ काट दिए थे , तो इस कथा में हुआ यह था कि , एक कसाई गौमाता को काटने वाला था , और क्यों कि छत्रपति शिवाजी महाराज जागरूक सनातनी थे , इस लिए उन्होंने यह अत्याचार नहीं सहा और उस कसाई के दोनों हाथ काट दिए , और उन्होंने यह उचित न्याय किया .. ।

• *शिवबा के बालपन का विस्तार से उल्लेख :–*

'बाबासाहेब पुरंदरे' (जो कि एक महान इतिहासकार है , जिन्हें हम 'शिवचरित्रकार' के नाम से भी जानत है) , उन्होंने कई प्रमाणों के आधार पर छत्रपति शिवाजी महाराज के बालपन का उल्लेख किया है , तो वह कहते है कि :–

विश्व प्रसिद्ध हस्तियों के बचपन के बारे में जानने के लिए हर कोई उत्सुक होता है , छत्रपति शिवाजी महाराज के बचपन के बारे में जानने के लिए हम भी हमेशा उत्सुक रहते हैं , इस संबंध में हम भाग्यशाली हैं , क्यों कि शिवाजी महाराज के समय में , भोसले राजपरिवार के बहुत करीबी एक सुशिक्षित व्यक्ति ने शिवाजी महाराज की जीवनी लिखी है , इस व्यक्ति का नाम परमानंद गोविंद नेवासकर है , उनके द्वारा लिखी गई जीवनी का नाम 'शिवभारत' है ... ।

इस पुस्तक में लिखे गए शिवाजी महाराज की घटनाओं को पूरी तरह से विश्वसनीय माना जाता है , इस पुस्तक 'शिवभारत' में , परमानंद जी ने शिवाजी महाराज के बचपन को बहुत ही सुंदर शब्दों में और यथार्थवादी ढंग से लिखा है – जैसे छोटे बच्चे आपके और हमारे घरों में ऐसे ही रेंगते , खेलते , हंसते और रोते हैं वैसे ही शिवबा करते थे , शिवबा अपनी माँ और उनकी सेविका की नज़रों से बचकर आँगन में मिट्टी खाते थे , वह बहुत चंचल , शरारती और कभी-कभी एक जिद्दी लड़के थे जो ज़ोर से रोते थे , उस समय की कथा के अनुसार , शिवबा पर समय-समय पर धार्मिक अनुष्ठान भी किए जाते थे , एक बात जो बहुत मार्मिक लगती है , वह यह है कि शिवबा के जीवन के पाँचवें दिन तलवार की पूजा की गई और हल की भी पूजा की गई , और भविष्य में शिवबा का प्रेम भवानी देवी जैसी तलवार और बलराम जैसे हल , दोनों के प्रति था , हम इतिहास में देखते हैं कि इस राजा ने अपना पूरा जीवन मावली सैनिकों और किसानों के लिए समर्पित कर दिया ।

जैसे-जैसे शिवबा बड़े होते गए , उनकी शिक्षा भी बढ़ती गई , और यह राजा बहुत बुद्धिमान थे , लिखना , पढ़ना, सुनना और बोलना उनमें कूट–कूट कर भरा था , इसीसे सह्याद्रि के वीर युवकों में एक भावी युवा नेता की खोज हुई , और वह हुआ भी ।
परमानंद जी ने उनकी तीव्र बुद्धि के बारे में लिखा है कि – एक बार सीख लेने पर , युवा राजा बहुत जल्दी सीख जाते थे , इतना ही नहीं , वे उसमें निपुण भी हो गए , और शिवबा घुड़सवारी , हथियार चलाने और महावत की तरह हाथी पर सवार होने में भी निपुण हो गए ।

स्वाभाविक रूप से , माँ के संस्कार आगे बढ़ते रहते हैं , यही संस्कार शिवबा को भी मिले , जीजासाहेब स्वयं राजगद्दी पर बैठकर प्रजा के विवादों का समाधान करते और निर्णय देते थे , वे विवाद के दोनों पक्षों की बात सुनकर उस पर निर्णय देती थीं , जीजासाहेब द्वारा दिए गए ऐसे विवादों के फैसले आज भी मिलते हैं , निस्संदेह ऐसे निर्णयों में शिवबा को उनकी माता के व्यवहार , वाणी और समझ का अनुभव प्राप्त हुआ , वह संस्कार भी उन्हें मिले , उसी से मराठी देश को एक न्यायप्रिय , धर्मनिष्ठ और धर्मनिष्ठ राजा मिला ।

शिवबाराजे ने यह भी सीखा कि अनुयायी कैसे बनाएँ और उन्हें कैसे सिखाएँ और उनसे छोटे-बड़े , ज़िम्मेदार और कठिन कार्य कैसे करवाएँ , नेतृत्व और संगठन के ये गुण इस राजा में बचपन से ही समाहित थे , और शिवबा के बारे में कुछ पत्रों में कुछ बहुत ही मार्मिक उल्लेख मिलते हैं , एक पत्र में कहा गया है कि 'राजश्री तो ऐसे की मनशे मानुष वलखितति', अर्थात् महाराज कर्म करने वाले और रिश्ते में पुरुष को जानते और मिलाते थे , इसीलिए प्रजा में उनके स्वराज्य अभियान के प्रति प्रेम , निष्ठा और विस्मय का भाव भर गया था , एक पत्र में उल्लेख है कि , 'यह राज्य प्रभु की कृपा का राज्य है' , अर्थात् प्रजा में स्वराज्य और राजा के प्रति ईश्वर-तुल्य भक्ति और निष्ठा विकसित हुई , इसी कारण मराठी स्वराज्य का राष्ट्रीय चरित्र पुष्पित और पल्लवित हुआ ।

सैन्य दृष्टि से , तीर्थराज शाहजी राजे का हालिया इतिहास उनके सामने था , अक्टूबर १६२४ में , शाहजी राजे ने एक युद्धक्षेत्र में दिल्ली की मुगल सेना और बीजापुर की आदिलशाही सेना को एक साथ पराजित किया , यह युद्ध भटवाड़ी में हुआ , जो कि अहिल्यानगर से २० किलोमीटर पूर्व में स्थित है , भटवाड़ी के इस युद्ध में , शाहजी राजे की सेना शत्रु से बहुत छोटी थी , और फिर भी , उन्होंने कम से कम समय में विशाल शत्रु को परास्त कर दिया ,....

यह गुरिल्ला युद्धकला वाली सेना की एक शानदार जीत थी , शिवबा इस भीषण गुरिल्ला युद्ध और शाहजी राजे के अन्य ऐसे ही वीरतापूर्ण कार्यों से परिचित थे , जो उनके अपने पिता ने किए थे , यहीं से शिवाजी राजे ने एक प्रखर गुरिल्ला योद्धा होने के कारण अफ़ज़ल ख़ान , फ़तेह ख़ान , शाहिस्त ख़ान , बहादुर ख़ान जैसी विशाल सेनाओं की बाधाओं को पार करने में अपनी कुशलता का परिचय दिया , इतना ही नहीं , उन्होंने कोंकण के समुद्र और बंदरगाहों पर पश्चिमी फिरंगियों और अंग्रेजों को करारा झटका दिया , यह प्रतिभा उन्हें बचपन से ही प्राप्त थी ।

जैसे मिट्टी के ढेले को केवल गीला होने पर ही आकार दिया जा सकता है , वैसे ही जीजासाहेब ने बहुत छोटी उम्र से ही शिवाजी राजे पर अनुष्ठान किए , और मुद्रा बनाई , यह १६३९ में हुआ था , इसलिए उस समय वह केवल नौ वर्ष के थे , और १६७४ में शिवराय हमे इतिहास में स्वर्ण को संप्रभु सिंहासन पर बैठते देखते हैं (और तब उनकी राजमुंद्र भी बनाई गई , जिसमें लिखा है कि – 'प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता । शाहसुनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते॥') , और तब अपने राज्याभिषेक के समय जीजासाहेब को प्रणाम करते हुए महाराज ने कहा – 'औसाहब , यह सब आपके आशीर्वाद से ज्ञात होता है' , और ऐसी मातृ और पितृ भक्ति दुनिया के इतिहास में दुर्लभ है , महाराज का पहला वास्तविक युद्धक्षेत्र पराक्रम और विजय बिलसर-सासवाड़ के युद्ध (८अगस्त १६४८) में हुआ था , अर्थात उस समय महाराज केवल १८ वर्ष के थे , इस पराक्रमी विजय के बाद , वे निरंतर विजय प्राप्त करते रहे , ऐसा बालक राजा , ऐसा बालक नेता , ऐसा बालक सेनापति , ऐसा बालक कूटनीतिज्ञ , ऐसा बालक राजनीतिज्ञ जिसने स्वतंत्रता के लिए चार शक्तिशाली विदेशी शक्तियों और अनेक स्वार्थी रिश्तेदारों से युद्ध किया और छोटी सी आयु में पहली विजय प्राप्त की , वह विश्व में प्रथम है , राजा शिवछत्रपति !!!

बाल्यकाल से ही अनेक प्रतापी शत्रुओं को परास्त करने वाला यह राजा ही सच्चा अंतर्राष्ट्रीय नेता बने , अर्थात , शिवाजी महाराज ने चंद्रराव मोरे , बाजी घोरपड़े , जसवंत सिंह राठौड़ आदि शक्तिशाली योद्धाओं को ही हराया (और उन्हें अपने साथ लिया) , और ये योद्धा उनके अपने थे , लेकिन शाहिस्ता खान , सिद्दीकवास खान , दाऊद खान कुरैशी, बहादुर खान , हेनरी थोर्प , हेनरी वेल्स , विसेंटी अल्वा , हुसैन खान मियाना आदि कई शक्तिशाली विदेशी सेनापति , जो भारत के बाहर से आए थे उनके विरुद्ध महाराज ने कई सरदार बनाए और इन्हें परास्त किया , जो महाराज की महानता को दिखाता है ।

३ – हिंदवी स्वराज्य के लिए संघर्ष

छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी बाल आयु से ही बहुत सारे युद्ध लड़े , या तो हम ये भी कहे सकते है कि उनका सारा आयुष्य युद्ध लड़ने में गया तो ये वाक्य गलत नहीं होगा , और उनके इसी साहस के वजह से उनका डर आदिल शाह , कुतुब शाह , मुगल सल्तनत और यहां तक कि अंग्रेजों में भी था , और फिर बाद में उन्होंने हिंदवी स्वराज्य को और बड़ा भी किया , जिसके लिए उन्होंने कई संघर्ष और युद्ध भी किए , जिन्हें जानना अति आवश्यक है , तो चलिए इन मेंसे मुख्य युद्धों को जानते है ... ।

• *प्रतापगढ़ का युद्ध (अफ़ज़ल खान वध महाराज द्वारा) :-*

इसका प्रारंभ तो तब होता है जब शाहजीराजे खुद छत्रपति शिवाजी महाराज को स्वतंत्र स्वराज के निर्माण के सपने के लिए एक झंडा देते है , और राजमुद्रा देते है (जो पहले भी बताया गया था) , फिर जब १८ साल के शिवाजी महाराज होते है , तब अफजल खान की सेना को वो नाचते है , उन्हें हारते है , उनके एक-एक किला ले रहे थे महाराज , लेकिन फिर १६४९ में खबर आती है की शाहजी महाराज को क़ैद कर लिया गया अफजल खान के द्वारा , इस वजह से १६४९ से लेकर १६५६ तक छत्रपति शिवाजी महाराज ने एक भी बड़ा युद्ध नहीं किया , इन ७ साल की विश्रांति में पुरी दुनिया हंस रही थी उनके ऊपर , और दुनिया हंसते हुए यही कहे रही थी की अब कुछ नहीं होगा , मगर महाराज उन ७ सालों में स्वराज्य को ओ मजबूत करते चले गए और उन्होंने उन ७ वर्षों में स्वराज्य को और बढ़ाया ,....

इससे ये होने लगा था कि शिवाजी महाराज सबके दिल में बैठ रहे थे , और अफजल खान के नियंत्रण में एक जगह आती थी (जावली / जावळी) , जिसमें जो सरदार था उसका नाम था चन्द्रराव मोरे , और चन्द्रराव मोरे का जब निधन हुआ तो उसके निधन होने के बाद नया राजा कौन बैठेगा गद्दी पर यह आदिल शाह से पूछना पड़ता था और चन्द्रराव मोरे की पत्नी थी उनका कोई खुद का लड़का नहीं था तो उन्होंने अपने एक दूर के रिश्तेदार को बैठाया और वो भी शिवाजी महाराज को पूछ कर उन्होंने बिठाया , इससे आदिल शाह और क्रोधित हुआ , और तब नया उत्तराधिकारी छत्रपति शिवाजी महाराज के दम पर २ सालों से वहां शासन कर रहा था , और कई ठिकानों को अपने कब्जे में ले रहा था , फिर वो वहां लोगों को परेशान करने लगा , जमीन हड़पने लगा , यह बात शिवाजी महाराज को जब पता चली , तो उन्होंने मोरे को मारने का आदेश दिया और फिर उसे मार दिया गया ।

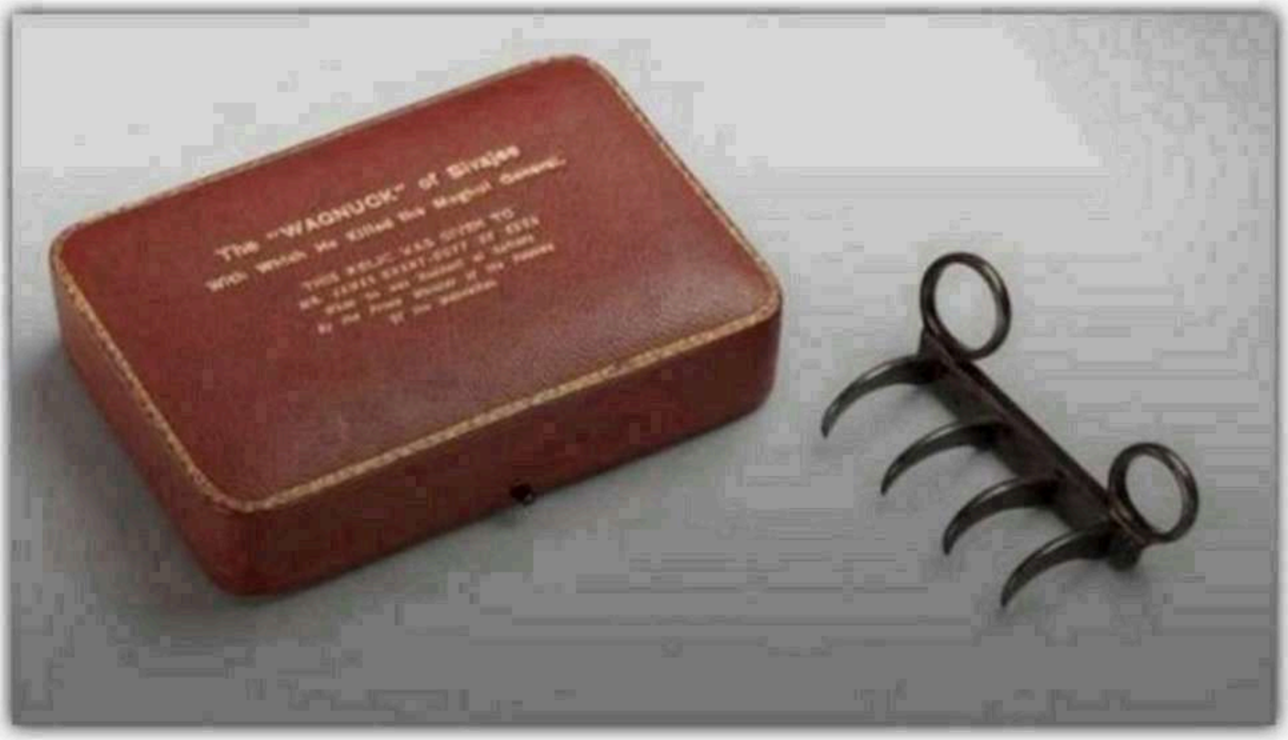
इससे आदिलशाह की दुश्मनी हो गई शिवाजी महाराज से , इस लिए आदिलशाही वंश (बीजापुर में) ने अपने सेनापति अफ़ज़ल खान को आदेश दिया कि वो शिवाजी महाराज को मार दे (जो कि वो कभी कर न पाया) , अफजल खान छोटा मोटा खिलाड़ी नहीं , क्यों कि अफजल जान ने औरंगज़ेब को भी कैद किया था १६५७ में (मगर फिर औरंगज़ेब को छोड़ना पड़ गया था) , और अफजल खान इतना घमंडी और नीच था कि उसको कर्नाटक के शिरपट्टनम गांव में कस्तूरी रंजन नाम के राजा थे उससे युद्ध करने वो गया , तो वो बहुत दिनों तक युद्ध चला, उसके बाद आखिर में संधि करने के लिए कस्तूरी रंजन आए तो उन्हें अफजल खान ने धोखे से मार दिया , और फिर उनसे वह के मंदिरों को तोड़ा वहां की मूर्तियों को तोड़ा और विनाश मचाया , और यही उसने महाराष्ट्र में भी किया , उसने तुलजापुर में आई तुलजाभवनी के मंदिर को नष्ट किया , मूर्तियां तोड़ी , धन लूटा , वहां के पुरुषों को मजदूर बनाया और वह की महिलाओं का बलात्कार किया ,....

और फिर शिवाजी महाराज के सपने में आई भवानी आती है और वह उन्हें भवानी तलवार देती है (जिससे आखिर में महाराज अफ़ज़ल खान का वध करते है) , और फिर ये निश्चित होता है कि अब अफज़ल खान का वध करना ही होगा , इस लिए उन्होंने कूटनीति बनाई और उस हिसाब से वो प्रतापगढ़ के में गए ।

फिर अफज़ल खान भी प्रतापगढ़ के नचे डेरा डाल कर बैठा , और तभी शत्रु दरवाजे पे खड़ा है और भगवान ने महाराज की सबसे पहले पत्नी सईबाई को अपने आप बुला लिया (उनका देहांत हो गया) , और आप सोचिए कि तब क्या बीती होगी शिवराय पर , लेकिन फिर भी उन्होंने हिंदवी स्वराज्य के लिए युद्ध किया , फिर कृष्णा भास्कर कुलकर्णी खुद शिवाजी महाराज से मिलने के लिए प्रतापगढ़ आए , और फिर संधि का निर्णित हुआ , और फिर शिवाजी महाराज ने कूटनीति अपनाई , और उन्होंने अफजल खान के अहंकार को और बढ़ाया और उन्होंने खुद को ऐसे दिखाया कि वो अफज़ल खान से डर गए , क्योंकि इससे अफज़ल खान का अहंकार और बढ़ जाता और इससे वो एक चूक नक्की करता , जिसका फायदा उठा कर शिवाजी महाराज उसे मार देते , फिर ये निर्णित हुआ कि प्रतापगढ़ के नीचे अफज़ल खान की छावनी में मिलना होगा वो भी अकेले में और बिना कोई शस्त्र के मिलना होगा , मगर शिवराय को पता था कि अफजल खान धोखा देगा इस लिए महाराज ने कवच बनाया जिसे उन्होंने कपड़ों के नीचे पहना और उन्होंने बाघनख (वाघनख) बनवाया , जो कि किसी को दिखता भी नहीं और अफज़ल खान का वध भी हो जाता , और उन्होंने फिर अपनी सेना को गठित भी कर रखा था जिससे उनके एक इशारे पर उनकी छोटी सी सेना गनिमी कावा की मदद से अफजल खान की बड़ी सेना को मिट्टी में मिला दिया , फिर सब स्थापित हो गया , और फिर मिलने का दिन नक्की हुआ , जो दिन था १० नवम्बर १६५९ , जब छत्रपति शिवाजी महाराज की भेट अफज़ल खान से हुई ,....

और अफ़ज़ल खान ने धोखा दिया और शिवराय की पीठ में खंजर से प्रहार किया , इसके प्रतिउत्तर में महाराज ने वाघनख निकला और उससे अफ़ज़ल खान पर प्रहार किया और उसे मूर्छित कर दिया , और फिर जाकर अफ़ज़ल खान का वध हुआ , फिर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया और उसका सिर विजय रत्न बना जिसने सेना को प्रोत्साहित किया ।







• छत्रपति शिवाजी महाराज का असली वाघनख (१६५९ वाला) , जो लंदन से वापिस भारत में लाकर सतारा के छत्रपति शिवाजी महाराज म्यूजियम में रखा गया ।

• पावनखिंड का युद्ध (बाजीप्रभु देशपांडे सहित ३०० मराठा के विरुद्ध १०००० म्लेच्छ) :-

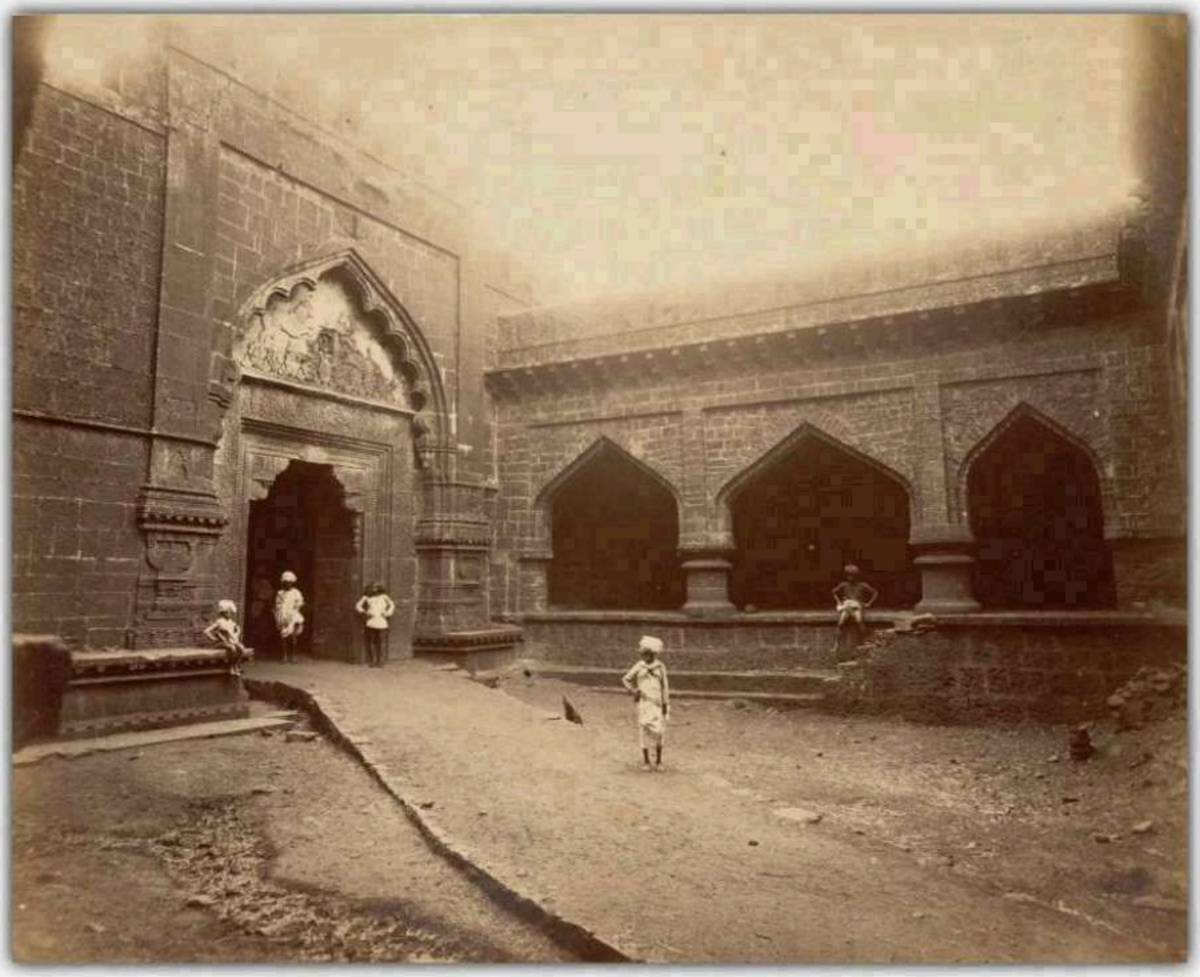
प्रतापगढ़ के युद्ध में अफजल खान को बहुत खतरनाक रूप से हराया था हमारे महाराज ने , और ये खबर मिलने से पहले सबको यही लग रहा था कि महाराज की मृत्यु हो गई होगी , मगर वो हक्के बक्के रहे गए ये सुनके की महाराज ने अफजल फाड़ दिया , और इसके लिए उन्होंने कूटनीति का प्रयोग तो किया ही और उसके साथ साथ उन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि का भी प्रयोग किया , और फिर ये सब हुआ पर उसमें अफजल खान का लड़का फजल खान महाबलेश्वर पर्वत लांग कर भाग गया , और फिर वो बीजापुरी सल्तनत को ये खबर देता है तो उनके होश उड़ जाते है , इसके बाद शिवाजी महाराज ने दूसरे दिन अपने घोड़े तैयार किया मुहिम के लिए उर तब उन्होंने १८ दिनों में २१ किल्ले जीते , और तब हिंदवी स्वराज्य कोल्हापुर तक पहुंचे गया (कोल्हापुर से बीजापुर पास है) , फिर शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु देशपांडे को पन्हाला (पन्हाळा) किल्ला जितने को बोला , और पन्हाला किल्ले का जो सरदार था , उसका नाम था 'मानाजी नाइक' (आप देख सकते हो हमारे लोग हमारे विरुद्ध खड़े होते थे , इस लिए जागरूक हो सनातनियों) , तो वो आदिल शाह का सरदार था , लेकिन वहां पर बड़ी बेगम के रिश्तेदार भी रहता था , उसका नाम था सैयद खान , ये भी पन्हाला किल्ले में था , फिर उनको बताया कि "मराठे आ गए" , फिर बाजीप्रभु ने आबाजी प्रभु को शांति का प्रस्ताव लेके भेजा कि चुपचाप गढ़-किल्ला खाली कर दे , नहीं टोह सबको काटेंगे , इससे किल्ले में सब डर गए , और फिर किल्ले के सरदार को बोला गया कि बाजीप्रभु से चर्चा करे , फिर उनकी भेट हुई , वह बाजीप्रभु बोले - "शांति से किल्ला देदो , वरना सबको काटेंगे और याद रखना एक भी जन एक भी जन नहीं बचेगा , और जितनी स्त्रियां किल्ले पर रहेंगे सब विधवा हो जाएंगी , याद रखना तुम्हें काटेंगे हम , मगर बच्चों को और स्त्रियों को हाथ नहीं लगाएं , लेकिन तुम्हे काटे जाएंगे ।"

बाजीप्रभु देशपांडे कौन थे , यही लोगो को नहीं पता है , तो बाजीप्रभु देशपांडे वो थे जो छत्रपति शिवाजी महाराज के बाल मित्र थे , उन्होंने अपना जीवन हिंदवी स्वराज्य के लिए अर्पित किया , और वो स्वराज्य के लिए लड़े , और उनके उनका आखिरी युद्ध (पवनखिंड का युद्ध) सबसे उच्च स्थान पर रहेगा , क्यों कि तब महाराज को सुरक्षित ले जाना था और इस लिए उस घोरखिंड (पावनखंड) में गनीमो को रोकना था , इसकी जिम्मेदारी बाजीप्रभु देशपांडे ने उठाई और वहां सेना का नेतृत्व किया और इस वजह से ३०० मराठा लड़े १०००० गनीमो से और जीते भी , तो चलिए इस युद्ध को और जानते है –

तो सबसे पहले बाजीप्रभु देशपांडे छत्रपति शिवाजी महाराज की सेना का एक अभिन्न हिस्सा बनकर कार्य करने लगे , और वह बहुत उत्तम कार्य करते थे हिंदवी स्वराज्य के लिए इस लिए खुद शिवराय ने भी बाजीप्रभु के साहस और सूझबूझ को देखते हुए , उन्होंने हिंदवी स्वराज्य के दक्षिणी कमान को बाजीप्रभु के हाथों में सौंपा , अफ़ज़ल खान के वध में भी बाजीप्रभु ने अहम भूमिका निभाई थी , तो २८ सितंबर १६५९ में छत्रपति शिवाजी महाराज ने कोल्हापुर की लड़ाई में आदिल शाह और उसकी सेना को हराकर उनके कई इलाकों पर अधिकार जमा लिया , इस हार से बौखलाए हुए आदिलशाह ने बदला लेना का सोचा , और इस हार का बदला लेने के लिए उसने सिद्धि जौहर के नेतृत्व में १०००० सैनिकों को शिवाजी महाराज को हराने के लिए भेजा , और सिद्धि जौहर के सैनिक २ मार्च १६६० में शिवाजी महाराज को पन्हाला के किल्ले में घेरा करके बैठ गए , और तब जरूरी सामान की आपूर्ति बंद करवा दी उन्होंने , इस वजह से पन्हाला किल्ले में पहले से मौजूद राशन के सहारे चार महीने तो कट गए इसी दौरान दोनों ओर से लगातार गोलीबारी होती रही ,....

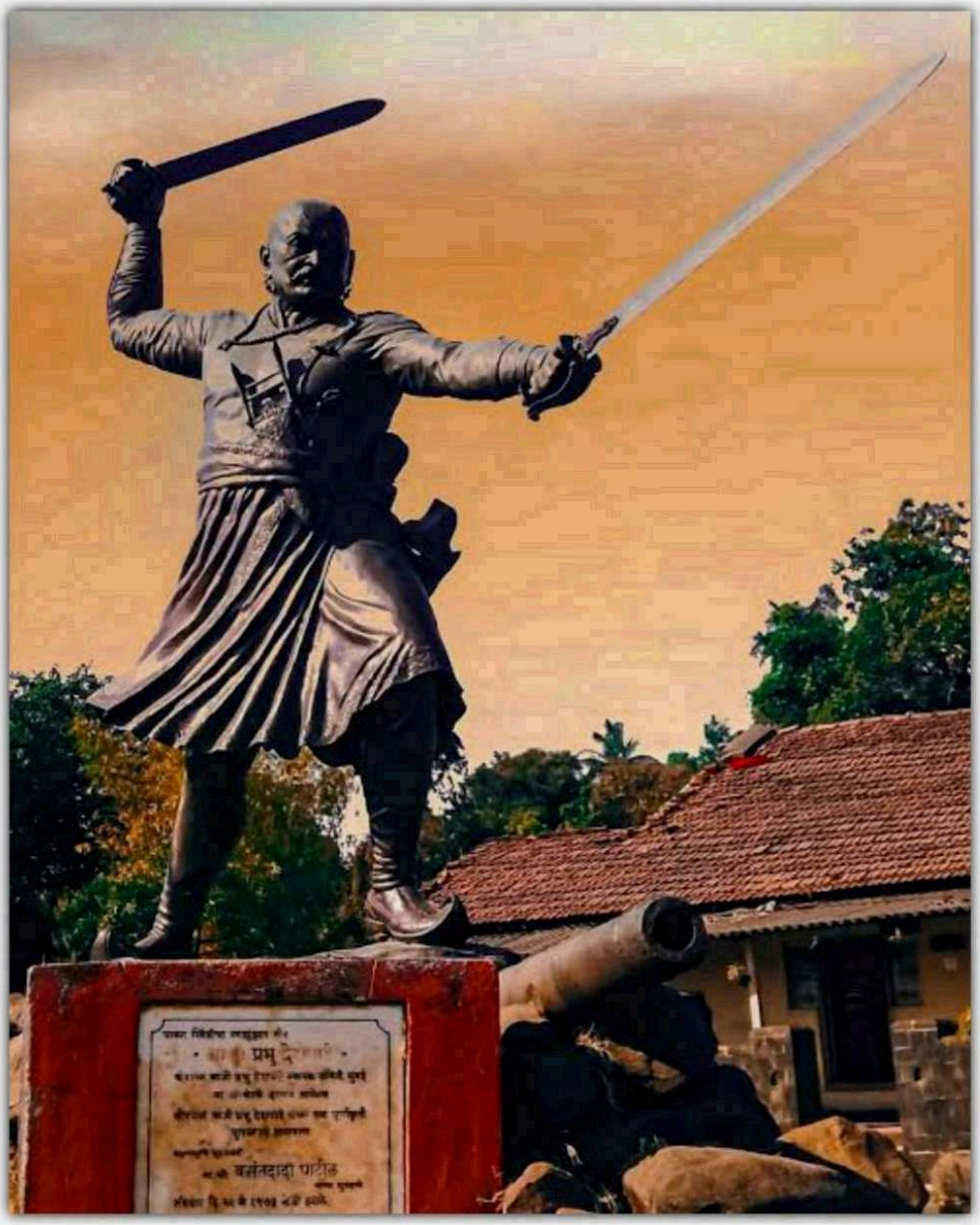
और पन्हाला किल्ला इतना बड़ा था कि आदिल शाह के सैनिक पूरी तरह घेर भी नहीं पाए , इसके बाद सिद्धि जौहर ने नक्की किया कि वो पवन गढ़ के किले पर कब्जा करेंगे ,मगर ये गढ़ पन्हाला के पास ही था इस लिए पवन गढ़ हार नहीं सकते थे , ओ इन ही विपरीत परिस्थितियों के बावजूद शिवाजी महाराज ने आदिल शाह के सैनिकों के सामने झुक का निर्णय नहीं लिया , उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं दिया , और फिर उन्होंने पहना से ५० से ७० किलोमीटर दूर विशालगढ़ जाने की योजना बनाई , तब उन्हें पता था कि बरसात का मौसम खत्म होने से पहले उन्हें विशालगढ़ पहुंचना होगा ताकि बारिश के बीच उनका युद्ध न हो , १३ जुलाई १६६० की रात को अपनी रक्षा अधिकारी बाजीप्रभु देशपांडे और ७०० सैनिकों के साथ वह विशालगढ़ की ओर निकल गए , और फिर दूसरी तरफ बाजीप्रभु ने आदिलशाह की सैनिकों को भटकाने के लिए शिव काशिद नाम के अपने नायक को शिवाजी महाराज के वेश में युद्ध करने भेज दिया , बाजीप्रभु ने सोचा कि जब तक सिद्धि को पता चलेगा वह काफी दूर जा चुके होंगे और इसी तरीके से उन्हें विशालगढ़ पहुंचने के लिए अतिरिक्त समय मिल जाएगा क्योंकि का शिवा काशिद का चेहरा शिवाजी महाराज से काफी मिलता-झूलता था , इसलिए आदिलशाही सैनिक उससे लड़ते रहे , और शिवा काशिद के पकड़े जाने पर उन लोगों को पता चला कि वो तो गलत व्यक्ति से लड़ रहे थे , फिर आदिल शाह के सैनिक शिवाजी महाराज को पकड़ने के लिए विशालगढ़ की ओर निकल पड़े , और ये जब बाजीप्रभु को पता चला तो उन्हें पता चला कि रास्ते में आदिलशाही के सैनिकों से युद्ध करना पड़ सकता है , और इसके लिए वह करीब ३०० सैनिकों के साथ घोरखिंड में रुक गए युद्ध करने के लिए , और शिवराय बाकी की सेना लेकर विशाल गढ़ की ओर बढ़ गए , तो घोरखिंड में मराठा थे ३०० और म्लेच्छ थे १०००० , और तब युद्ध निश्चित था ,....

और फिर ३०० मराठा लड़े १०००० मुसलमानों के विरुद्ध , सारे मराठा अपनी जान लगा कर लड़ रहे थे , और यह युद्ध घंटों तक चला , इस युद्ध में बाजी प्रभु को गंभीर चोटें आई , लेकिन वह लड़ते रहे और उनके साथ ३०० मराठा सैनिक लड़ते रहे घायल होने के बाद भी , और मराठा सेना ने कुछ ही घंटों में ३००० से ज्यादा मुसलमानों को मार गिराया जबकि कई और सैनिक बुरी तरह से घायल हुए थे , उधर विशाल गढ़ के किल्ले पर जाते समय २ सरदारों को शिवाजी महाराज ने हराया , और फिर वो विशालगढ़ के लिए पहुंच गए , तो १४ जुलाई १६६० को विशालगढ़ किल्ले में पहुंचने के बाद शिवाजी महाराज ने तीन तोपों से गोलाबारी की जिससे घोरखिंड में लड़ रहे मराठा सैनिकों को यह संकेत मिल गया कि शिवाजी महाराज सुरक्षित विशालगढ़ पहुंच चुके हैं , जब तोपों से गोले चलें उस समय बाजीप्रभु घायलावस्था में जमीन पर थे और उनके सैनिक लगातार आदिल शाह की सेना से युद्ध कर रहे थे , और शिवाजी महाराज का इशारा मिलने पर युद्ध पर विराम लग गया इसी बीच वीर बाजी प्रभु देशपांडे खुशी-खुशी वीरगति को प्राप्त हो गए , इस लड़ाई में केवल मुट्ठी भर मराठा सैनिक ही जीवित बचे , मराठा सैनिक अपने सरदार बाजी प्रभु के पार्थिव शरीर को लेकर किल्ले की ओर चल पड़े जबकि आदिल शाह की सेना ने विशालगढ़ को घेरने का इरादा छोड़ दिया , फिर जब शिवाजी महाराज और उनकी मां जीजाबाई को बाजी प्रभु की मृत्यु के बारे में पता चला तो उन्हें बहुत दुख हुआ था , और शिवाजी महाराज ने युद्ध के उस इलाके को बाजीप्रभु देशपांडे के सम्मान में पावनखिंड का नाम दिया था , पावनखिंड का अर्थ है पवित्र रास्ता , इसके बाद उस युद्ध को पावनखंड के युद्ध के नाम से जाना जाने लगा , और अपने मिट्टी के लिए बलिदान देने वाले बाजीप्रभु के बच्चों की जिम्मेदारी शिवाजी महाराज ने खुद उठाई , और इस युद्ध के बाद पन्हाला के किले में शिवा काशिद और बाजीप्रभु को विशाल प्रतिमा बनवाई गई ताकि हर पीढ़ी उनकी गौरव गाथा को याद कर सके , और सच में महान थे वो लोग जिन्होंने इतना शौर्य दिखाया , नमन है उनको ।





• पन्हाला किल्ले



• बाजीप्रभू देशपांडे

• *लाल महल का युद्ध :-*

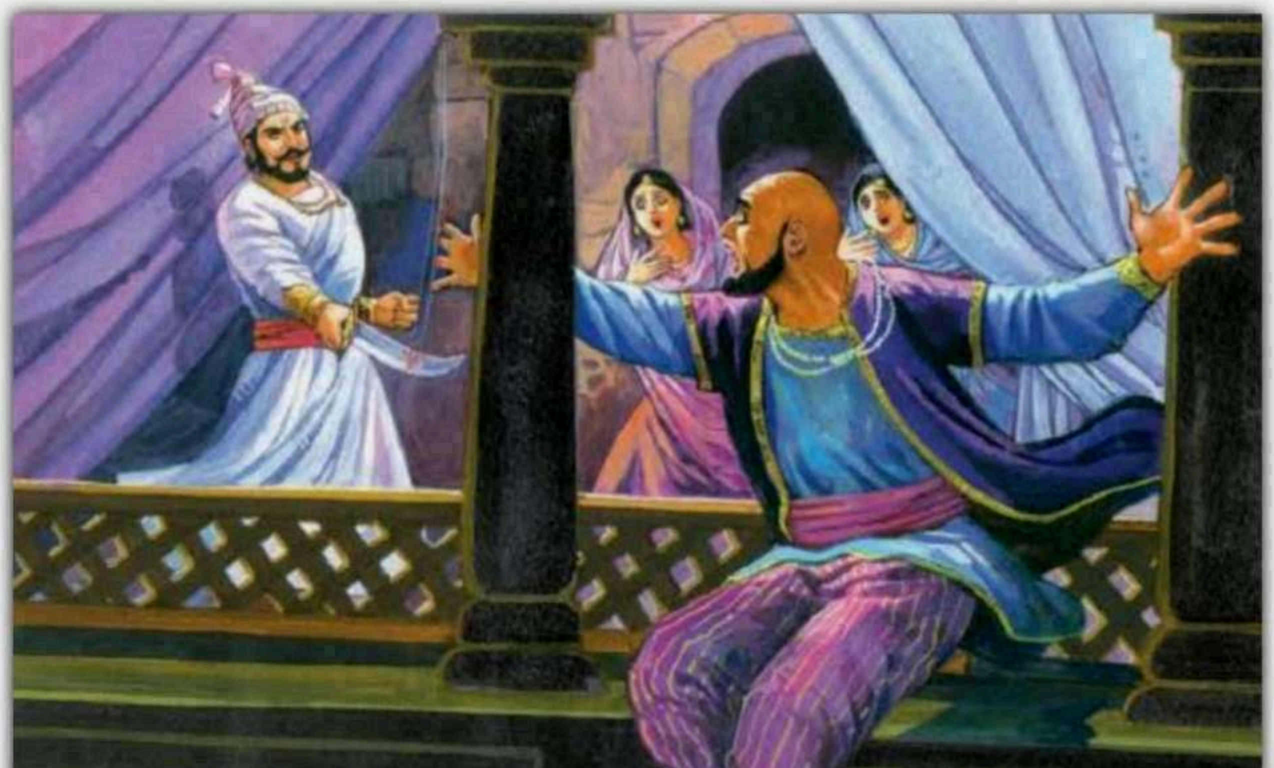
औरंगजेब का मामा था ये शाहिस्ता खान , और जिस समय छत्रपति शिवाजी महाराज ने अफजल खान को मारा तब औरंगजेब को लगने लगा कि शिवाजी महाराज छोटी मोटी चीज नहीं है , अफजल खान को मारा (उस अफजल खान को जिसने औरंगजेब को बंदी बनाया था) , इस लिए औरंगजेब ने बोला उसके मामा शाहिस्ता खान को की कुछ करे , तो १६६० के समय पे सिद्धि जोहर आया था (जिसके बारे में बताया था) , तो जोहार के निकलने के बाद उसी समय पर शाहिस्ता खान ने भी हल्ला बोल दिया , उस समय पर छत्रपति संभाजी महाराज नगर मुगलों के हाथ में था , तो १६६० में जिस समय पर छत्रपति शिवाजी महाराज पन्हाला पर थे उसी समय पर इसने यह सोचा कि क्यों ना हिंदवी स्वराज्य में घुसे तो पुणे से ३५ किलोमीटर दूर चाकण का किल्ला पड़ता है , उस चाकण के किल्ले पर शाहिस्ता खान ने कब्जा करने का सोचा , और चाकण का किला ज्यादा बड़ा नहीं छोटा सा किला है , ४०० मावले थे उस किल्ले पर , यह जब चाकण के किल्ले का युद्ध चल रहा था तब शिवाजी महाराज पन्हाला पर फसे हुए थे , फिर राजे जुलाई में निकले पन्हाला से उसके पहले राजे नहीं निकले , और चाकण के किले के बाहर ये तकरीबन अपनी ५१००० की सेना लेकर बैठा थे, बोल रहे थे अन्दर घुस के मारेंगे सबको , तब चाकण के किल्ले पर ५६ दिनों तक ४०० मावलों ने पूरा किल्ला पकड़ के रखा था , वो लोग घुस ही नहीं पा रहे थे अंदर , फिर १३ अगस्त १६६० यानी कि ५४ वे दिन में शाहिस्ता खान ने युक्ति बनाई , उन लोगों ने चाकण किल्ले के पश्चिमी तट पर जो सुरंग लगाई , फिर वो भाग टूट गया , फिर ये लोग अंदर घुसे , फिर उस रात से सुबह तक युद्ध चला , बहुत मावले मारे गए , और लगभग ५० मावले छोड़ दिए गए चले गए , तो यहां पहली विजय मिली शाहिस्ता खान को ,.....

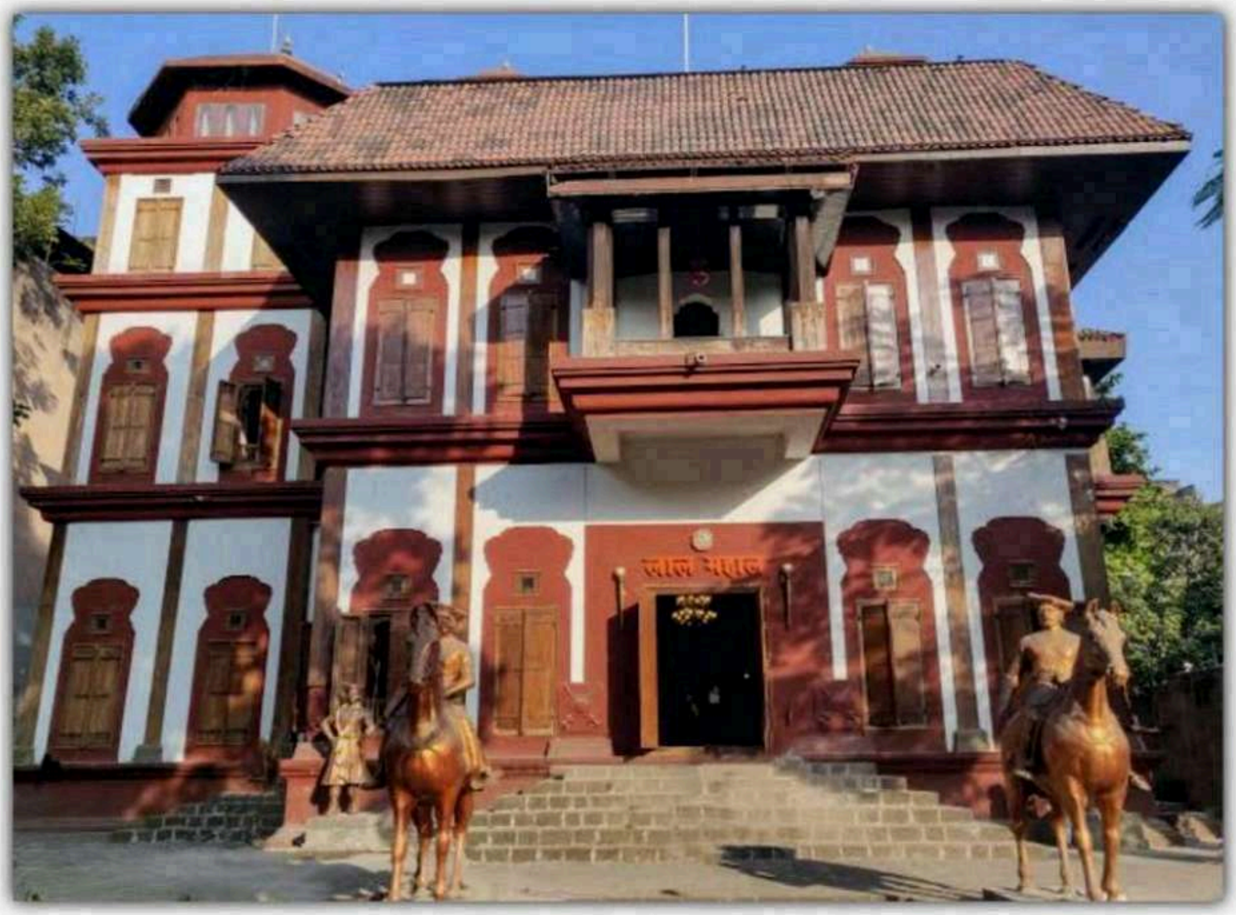
और इसने जब चाकण का किल्ले जीता तब उस किल्ले का नाम था संग्राम दुर्ग , तो अपनी विजय के बाद ना वो कुछ महीने रुक गया , क्योंकि महीना था अगस्त का १६६० में , और वो नवंबर तक वही रुका , तो इस विजय के बाद उसने छोटे मोटे छोटे-मोटे किल्ले लेने का प्रयत्न किया था , लेकिन उसको मिला एक भी नहीं था , और १६६१ में पुणे के लाल महल में आकर वो रुका , लाल महल पर शिवाजी महाराज ने उसे पत्र लिखा उसको समझाने का प्रयास किया कि हिंदवी स्वराज्य के विरुद्ध न जाए मगर शाहिस्ता खान ने वो पत्र अनदेखा कर दिया , फिर इसी बीच में कारतलब खान नाम का उजबेक सैनिक बना शाहिस्ता खान का सेनापति , और फिर इन लोगों ने छावनी डालना शुरू कर दिए किल्ला जितने के लिए , और जहां जहां छावनी बिछा के रखी थी वहां पर नेतोजी पालकर आक्रमण करते थे , और तब उनके छोटे-मोटे युद्ध चलते थे , ये छोटे-मोटे युद्ध चलते रहे , लेकिन इनको पूरा ये का प्रदेश चाहिए था , यह बात शिवाजी महाराज को पता लग गई कि शाहिस्ता खान कोंकण में उतरा है , तो शिवाजी महाराज के जितने भी गुप्तचर थे वो बड़े सतर्क रहते थे , तो उन लोगों को पता था कि शाहिस्ता कुछ ना कुछ कांड करेगा , और तब जनवरी का महीना था उस समय कोंकण में बरसात नहीं होती इस लिए शाहिस्ता खान की और इच्छा हुई कोंकण कब्जा करने के लिए , तो कारतलब खान को सेना लेकर भेजा शाहिस्ता खान ने वो भी उंबरखिंड के मार्ग से , और महाराज को पता था कि वो आएगा तो उंबरखिंड से ही आयेगा , तो लोहगढ़ के पास ही उंबरखिंड के जंगल है , तो महराज ने लोहगढ़ से हमला नहीं करवाया , बल्कि उन्हें उन जंगलों में आने दिया , जहां मावले छुप के बैठे थे , फिर कारतलब खान जंगल में घुसा और तब गनिमी कावा का प्रयोग करके महराज ने बहुत बुरी तरह से कारतलब खान को हराया , और तब २०००० की मुगल सेना को १००० की मराठा सेना ने हराया था , और चारों तरफ हर हर महादेव के नारे लगाए गए ।

उन लोगों को इतनी बुरी तरह हमने हराया कि उनकी सेना और उनके लोगों में ये अफवाह फैल गई कि , शिवाजी महाराज जादू जानते है , और तब शिवाजी महाराज से बहुत डरने लगे , और फिर १६६३ में शिवाजी महाराज ने राजगढ़ पर यह निर्णय किया कि अब शाहिस्ता खान को ठिकाने लगा देंगे और पुणे को वापिस हिंदवी स्वराज्य में ले लेंगे , और तब उन्होंने लाल महल में 'सर्जिकल स्ट्राइक' करने का निर्णय लिया ।

५ अप्रैल १६६३ में लाल महल का युद्ध हुआ , और वहां पर मुगल सेना की विशाल संख्या (अनुमानित १००००० सैनिक) की तुलना में बहुत छोटी मराठा सेना (४०० सैनिक) थी , मगर इसके बावजूद छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी चतुराई , समय-निर्धारण और शत्रु की स्थिति की गहन जानकारी का लाभ उठाया , और उनके व्यवस्थित दृष्टिकोण से उन्होंने अपनी सेनाओं को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करके विभिन्न दिशाओं से घुसपैठ करना शुरू कार्य , मित्र या शत्रु की पहचान करने के लिए सख्त आदेश दिए , और अंधेरे का लाभ उठाया उन्होंने आक्रमण करने के लिए , युद्ध में मराठा अडिग तो थे ही , मगर महिलाओं को नुकसान उन्होंने फिर भी नहीं पहुंचाया , और यहाँ तक कि शत्रु परिवार के सदस्यों की भी रक्षा की उन्होंने , जो उनके जटिल व्यक्तित्व को दर्शाता है , जिन्होंने युद्ध कौशल और नैतिक शासन के बीच संतुलन बनाए रखा , इस द्वंद्व ने उनके अनुयायियों के बीच उनकी निष्ठा और शत्रुओं के बीच उनके द्वारा प्रेरित भय और सम्मान को बढ़ावा दिया , इसके अलावा यह वृत्तांत औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान मुग़ल-मराठा प्रतिद्वंद्विता के व्यापक राजनीतिक संदर्भ की ओर इशारा करता है , जिसमें मराठों ने विजय प्राप्त की ।

लाल महल के युद्ध में छत्रपति शिवाजी महाराज ने खुद शाहिस्ता खान से युद्ध किया और उन्होंने शाहिस्ता खान की उंगलियां काट दी , और फिर शाहिस्ता भाग गया (जो कि फिर उसे बंगाल भेज दिया गया) , और फिर ऐसे सर्जिकल स्ट्राइक करके शिवराय ने पुणे को वापिस हिंदवी स्वराज्य का भाग कर लिया , और उन्होंने अपने गढ़-किल्ले को और बढ़ाया और इससे वह बहुत शक्तिशाली हो गए ।







• लाल महल

४ – पुरंदर की संधि (मिर्जा राजे जयसिंह)

पुरंदर का युद्ध हिंदवी स्वराज्य के इतिहास का भीषण युद्ध था , जो कि हिंदवी स्वराज्य के भविष्य को निर्माण करने वाला युद्ध था , यह युद्ध छत्रपति शिवाजी महाराज और मिर्जा राजे जयसिंह के बीच हुआ था , जो कि हिंदवी स्वराज्य की रक्षा के लिए लड़ा गया था , तो यह युद्ध १० जनवरी १६६४ को शुरू हुआ , जब शिवाजी महाराज ने सूरत पर छापा मारा और हिंदवी स्वराज्य के लिए धन लिया था (और यह इस लिए क्यों कि वो प्रजा का ही धन था जो मुगल प्रयोग करते थे अपने फायदे के लिए मगर शिवाजी महाराज ने वो धन लूट कर वापिस प्रजा के फायदे के प्रयोग किया) , फिर शिवाजी महाराज के पिता शाहजी राजे की मृत्यु हो गई थी , और इससे हिंदवी स्वराज्य के भविष्य को लेकर संकट उत्पन्न हो गया था , इसी बीच आऊ साहब (राज माता जीजाबाई) का सती जाने का निर्णय था , शाहजी राजे की मृत्यु के बाद उन्होंने सती जाने का निर्णय नक्की कर ही लिया , जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न हुआ , और शिवाजी महाराज ने उन्हें समझाने की कोशिश की , लेकिन आऊ साहब ने अपने निर्णय को दृढ़ता से रखा , मगर शंभू राजे ने जब जिजामाता को समझाया तो फिर वो समझ गईं और वे सती नहीं हुईं , और इसके बाद की स्थिति ने शिवाजी महाराज को और भी मजबूत बनने के लिए प्रेरित किया , क्योंकि उन्हें अपने राज्य का भविष्य संभालना था , शिवाजी महाराज ने अपने दुश्मनों के विरुद्ध कार्रवाई शुरू की और आदिल शाह के सहयोगियों को समाप्त करने का निर्णय उन्होंने लिया , उन्होंने अपने प्रतिशोध की योजना बनाई और छोटे दुश्मनों को हराने के लिए अपनी सेना को तैयार किया , इस दौरान औरंगजेब को शिवराय की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिली और उसने मिर्जा राजे जयसिंह को भेजने का निर्णय लिया था ।

मिर्जा राजे जयसिंह , जो एक अनुभवी और शूरवीर योद्धा थे , औरंगजेब की सेना में उन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , उनकी आयु लगभग ५५ वर्ष थी तब और उन्होंने ४७ वर्षों का युद्ध अनुभव प्राप्त था , मिर्जा राजे ने हमेशा जीत सुनिश्चित की ही , मगर आप लोग सोच रहे होंगे कि मिर्जा राजे जयसिंह औरंगज़ेब के साथ क्यों थे ??? – तो इसका उत्तर है कि वो अपने राज्य को बचाने के लिए , अपने मंदिरों को बचाने के लिए अपनी स्त्रियों एवं संतानों की रक्षा करने के लिए औरंगजेब से मिल गए थे , तो मिर्जा राजे जयसिंह ने औरंगजेब के आदेश पर हिंदवी स्वराज्य पर आक्रमण करने की योजना बनाई और एक बड़ी सेना के साथ निकल पड़े , और इस आक्रमण के दौरान , उन्हें भारी मात्रा में तोपों और बंदूकों का साथ मिला , जो उस समय की नवीनतम तकनीक थी , इस युद्ध की तैयारी के लिए मिर्जा राजे ने अपने साथ इटली के तोपची निकोलो मनुची को भी शामिल किया ।

तो यह युद्ध पुरंदर किल्ले पर हुआ था , जो पुणे से निकट स्थित था , यह युद्ध की एक महत्वपूर्ण जगह पर भी था , जिसमें दो किले , मगर यह युद्ध जीतने के लिए इस किले पर विजय प्राप्त करना आवश्यक था , क्योंकि इसके नियंत्रण से पूरे क्षेत्र में शक्ति संतुलन बदल सकता था , मिर्जा राजे ने पुरंदर किले पर आक्रमण करने के लिए अपनी सेना को तैयार किया और किले को घेर लिया ।

इस युद्ध के दौरान मुरारबाजी देशपांडे ने शिवाजी महाराज के प्रति अपनी निष्ठा दिखाई और पुरंदर किल्ले की रक्षा की , मुरारबाजी की बहादुरी ने मराठों को प्रेरित किया और उन्होंने दुश्मनों के विरुद्ध कठोर संघर्ष किया , युद्ध के दौरान मुरारबाजी को वीरगति प्राप्त हुई , और इससे सब दुखी हुई , और तब मिर्जा राजे जयसिंह की सेना ने पुरंदर के किल्ले को चारों तरफ से घेर लिया था और किल्ले के महाराज खुद थे , इस लिए आखिर में संधि करना उचित साझा गया ,...

और फिर १६६५ में संधि कर ली गई , और इस युद्ध के अंत में , मिर्जा राजे जयसिंह ने पुरंदर किले पर विजय प्राप्त की , और इस युद्ध ने स्वराज्य के भविष्य को प्रभावित किया और मराठों की रणनीति को बदल दिया , इस संधि के कारण शिवाजी महाराज को अपने २३ किल्ले मुगलों को देने पड़े (जिसमें से सिंहगढ़ भी एक था , जहां वीर तन्हाजी न बलिदान दिया था , और इस युद्ध के परिणामस्वरूप शिवाजी महाराज ने अपनी सेना को पुनर्गठित किया और भविष्य के संघर्षों के लिए तैयार रहने का निर्णय लिया था और फिर उन्होंने अपने सारे किल्ले वापिस लिए ही और मुगलों को मुंह तोड़ जवाब भी दिया और फिर इस संधि के बाद छत्रपति शिवाजी महाराज ने 'पुनरुत्थान' करने ३६०+ किल्ले जीते और स्वराज्य को बहुत बढ़ाया) , और इस संधि की वजह से शिवाजी महाराज को खुद अपने बेटे संभाजी महाराज और उनकी सेना के साथ आगरा जाना पड़ा ।

छत्रपति शिवाजी महाराज और शंभू राजे जब आगरा गए , दरबार में उन्हें पद देने की बात हुई , तोउन्होंने वो पद स्वीकार नहीं किया , उल्टा उन्होंने औरंगज़ेब के विरुद्ध उसके सामने बोला और इससे औरंगज़ेब हक्का-बक्का रह गया , महाराज उसके दरबार में दहाड़े , वो बोले – "कुछ भी हो जाए मगर इस औरंगज़ेब की नौकरशाही में कभी नहीं करूंगा" , और फिर शिवराय दरबार छोड़ कर निकल गए ।

• *आगरा से बच कर निकलना*

औरंगजेब के दरबार में शिवाजी महाराज ने अपनी अस्मिता के लिए डटकर दहाड़ा था , वे मुगलों की दमनकारी नीति के बावजूद अपने विचारों से पीछे नहीं हटे , यह हिम्मत और आत्मसम्मान उनके नेतृत्व की सबसे बड़ी विशेषता थी , फिर उनको और संभाजी महाराज को कैद कर रखा था आगरा में , वहां उन्होंने अपने भरोसेमंद लोगों के जरिए जानकारी और संसाधन जुटाए और अपने बचाव की योजना बनाई ,....

यह दर्शाता है कि वे केवल एक योद्धा नहीं बल्कि एक कुशल राजनेता भी थे , वहां राम सिंह थे , जिन्होंने अपने पिता के वचन के प्रति वफादारी निभाई और शिवाजी महाराज की सुरक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डाली , यह समर्पण उस युग के राजपूत और मराठा आदर्शों का प्रतिबिंब है , जहां वचन और सम्मान सर्वोपरि होते थे ।

तब शिवराय और संभाजी महाराज कैद थे , इस लिए शिवाजी महाराज ने अपनी बीमारी का नाटक कर समय निकाला और अपने कैद से भागने के लिए रणनीतिक चाल चली , यह उनकी सूझबूझ और धैर्य का प्रतीक है , जिसने उनकी जान बचाई और हिंदवी स्वराज्य की नींव मजबूत की ।

कैद से निकलने के लिए महाराज ने कूटनीति अपनाई , कहा जाता है कि तब मिठाई की टोकरियां मंगवाई और शिवाजी महाराज एवं संभाजी महाराज उन टोकरियों में बैठे और चले गए और तब उनकी जगह हिरोजी फरजंद आगरा में रुके , फिर महाराज शंभू राजे और छोटी सेना की टुकड़ी के साथ १७ अगस्त १६६६ को आगरा से निकले और वो भी संन्यासी का वेश धारण करके मथुरा पहुंचे और मथुरा में उन्होंने शंभु राजे को सुरक्षित रखा क्यों कि अगर वो उन्हें वापस ले जाते तब उनकी जान को खतरा होता , इस लिए शंभू राजे वही मथुरा के रुके और फिर महाराज वापिस पहुंच गए और तब महाराज ने शंभू राजे का अंतिम संस्कार भी कर दिया क्यों कि मुगलों को ये लगे कि संभाजी महाराज नहीं रहे और इसका फायदा उठा कर शंभू राजे आसानी से वापिस आ सके , और उन्होंने किया भी यही और वे कृष्णाजी मथुरे (इन्होंने संभाजी महाराज की मथुरा में बहुत मदद की थी) के साथ वापिस आए , और इसके बाद औरंगज़ेब के मुंह पर कालिक पोत कर महाराज वापिस आए , शंभू राजे भी वापिस आए , और फिर तब ईरान के राज ने औरंगज़ेब को पत्र लिखा जहां वो औरंगज़ेब को बोलते है कि क्या उखाड़ लिया औरंगज़ेब ने जब शिवराय उसकी कैद से निकल गए ,

और शिवाजी महराज ऐसे बचकर निकल गए इसे तब के 'लंदन गैजेट' में भी छापा था , इस लिए तो महाराज महान थे , और इस लिए आज भी हमारे घर में पहला दिया महाराज को लगता है , और इस वजह से उनके व्यक्तिव से कई लोग प्रभावित हुए , उदाहरण के लिए 'कवि भूषण' , ये पहले औरंगज़ेब के कवि थे मगर उन्होंने वो नौकी छोड़ी और महाराष्ट्र में आए क्यों कि तब उन्हें पता चला कि महाराष्ट्र में सिंह है जो हिंदवी स्वराज्य की स्थापना कर रहे है , इस लिए कवि भूषण फिर महाराष्ट्र के ही रहे और उन्होंने एक से बढ़कर एक कविता महाराज के लिए की , जिसमें से सबसे व्याख्यात कविता है –

"इन्द्र जिमि जंभ पर , वाडव सुअंभ पर।
रावन सदंभ पर , रघुकुल राज है ॥१॥
पौन बरिबाह पर , संभु रतिनाह पर।
ज्यों सहसबाह पर , राम द्विजराज है ॥२॥
दावा द्रुमदंड पर , चीता मृगझुंड पर।
भूषण वितुण्ड पर , जैसे मृगराज है ॥३॥
तेजतम अंस पर , कान्ह जिमि कंस पर।
त्यों म्लेच्छ बंस पर , शेर सिवराज है ॥४।।"

वैसे महाराज जब आए वापिस उसके एक साल बाद ही यानी २८ अगस्त १६६७ में मिर्जा राजे जयसिंह की मृत्यु हुई , उन्हें मारा गया था औरंगज़ेब द्वारा , और यह दिखाता है कि ये लोग किसी के नहीं होते , तो वापिस आने के बाद महाराज ने वापिस गढ़–किल्ले जितने शुरू किए और उन्होंने किया 'पुनरुत्थान' ।





• शिवराय का आगरा से पलायन

५ – पुनरुत्थान हिंदवी स्वराज्य का

जब महाराज वापिस आए उसके बाद कवि परमानंद (जो शिवराय के राज्यकवि थे) उन्हें भी बंदी बनाया गया था , बंदी बनाए जाने के बावजूद , मिर्जा राजे ने परमानंद जी को तुरंत फांसी न देने का निर्णय लिया , और उन्हें चार महीने तक कैद में रखने का निर्णय दिया और फिर उन्हें छोड़ दिया गया ।

पुनरुत्थान करने के लिए शिवाजी महाराज ने अपने कानूनी सलाहकारों – रघुनाथ पंत और बक पंत , जो आगरा में कैद रहे , उनके प्रति गहरी चिंता व्यक्त की , और उन्हें अपने उद्देश्य के लिए इन लोगों द्वारा किए गए बलिदानों को पहचाना और उनकी रिहाई सुनिश्चित करने का कोई रास्ता खोजने के लिए बाध्य अनुभव किया , और ऐसे ही एक मुख्य व्यक्ति थे नेतोजी पालकर , जिनको औरंगज़ेब के शासन में बंदी बना लिया गया और उन्हें कठोर दंड का सामना करना पड़ा , जिसमें उनका धर्मपरिवर्तन कराया गया , और फिर वो मुस्लिम बन गए , मगर उनके साथ भी भविष्य में अच्छा ही होने वाला था ।

• पुनरुत्थान :–

अपनी वापसी पर , शिवराय ने स्थिति का आकलन किया और पुर्तगाली और मुगल सेनाओं के विरुद्ध रणनीतिक गठबंधन और सैन्य कार्रवाई की आवश्यकता को पहचाना , उन्होंने क्षेत्र में अपनी शक्ति और प्रभाव पुनः प्राप्त करने के लिए इन विरोधियों के विरुद्ध सैन्य हमलों की एक श्रृंखला शुरू की , और शिवराय ने खोए हुए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने और दूसरे क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से सैन्य अभियान शुरू करने के लिए अपनी सेना को बढ़ाना और सुधारना शुरू कर दिया ,...

उन्होंने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जंजीरा किल्ले पर कब्ज़ा करने पर ध्यान केंद्रित किया , जो पिछले शासकों द्वारा अजेय रहा था , सिद्धि और अन्य स्थानीय शक्तियों के विरोध सहित कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद , शिवराय किल्ले को सुरक्षित करने के लिए दृढ़ रहे , शिवराय के अभियान केवल सैन्य नहीं थे , बल्कि उनका उद्देश्य मुगल प्रभुत्व के विरुद्ध हिंदू संस्कृति और धर्म का संरक्षण और संवर्धन भी था , और उन्होंने मंदिरों का जीर्णोद्धार किया और हिंदू समुदाय का समर्थन किया , जिससे उनकी छवि उनके धर्म के रक्षक के रूप में और मजबूत हुई , उन्होंने त्र्यंबकेश्वर मंदिर के ऊपर जो मस्जिद बनाई थी उसे तोड़ कर वापिस त्र्यंबकेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार उन्होंने किया , उनके कार्यों को अपने लोगों की सांस्कृतिक पहचान की रक्षा के लिए एक दिव्य मुहिम के रूप में देखा गया ।

शिवाजी महाराज के नेतृत्व और सैन्य रणनीतियों ने भारत में मुगल शासन के विरुद्ध भविष्य के प्रतिरोध की नींव रखी , उनकी विरासत मराठी लोगों और अन्य लोगों में गौरव और सांस्कृतिक पहचान को प्रेरित करती रही है , उनके शासनकाल से जुड़ी ऐतिहासिक घटनाएँ भारतीय इतिहास के एक उथल-पुथल भरे दौर में शक्ति , निष्ठा और सांस्कृतिक संरक्षण की जटिलताओं को उजागर करती हैं ।

और फिर उन्होंने फिरसे गढ़–किल्ले जितने की मोहिम (मुहिम) चलाई , जिसमें पहले उन्होंने कोंढाणा (सिंहगढ़) जितने से इस मुहिम का प्रारंभ किया ..।

औरंगज़ेब को अत्यंत कट्टर और अविवेक वाला व्यक्ति था , जिसके कारण वो गैर-मुसलमानों , विशेषकर हिंदुओं के विरुद्ध दमनकारी नीतियाँ अपनाता था , औरंगज़ेब के शासन में रहने वाले हिंदुओं को भारी करों (टैक्स) का सामना करना पड़ता था , जिसमें उनके मंदिरों और सांस्कृतिक प्रथाओं को बनाए रखने के लिए दोहरे कर भी शामिल थे ,...

और इस प्रणाली के भ्रष्टाचार व्याप्त था , अधिकारी दंडात्मक कार्रवाइयों से बचने के लिए हिंदू आबादी से रिश्वत मांगते थे , एक अंग्रेज़ ने औरंगज़ेब के शासन के दौरान विकट परिस्थितियों का उल्लेख किया था , जिसके कारण कुछ उद्योगपतियों ने ब्रिटिश-नियंत्रित बंबई में शरण और अवसर तलाशने शुरू कर दिए , औरंगज़ेब ने संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था , ऐसे आदेश जारी किए जिनके कारण वाद्ययंत्रों और मंदिरों को नष्ट कर दिए गए , जिससे संगीतकारों और आम जनता में अशांति बढ़ गई थी , उसकी कट्टरता काशी और सोमनाथ सहित कई प्रमुख मंदिरों को नष्ट करने तक फैल गई , जो हिंदुओं के लिए महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थल थे उसे औरंगज़ेब ने तोड़ा , और संगीतकारों ने औरंगज़ेब का विरोध किया , जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक प्रदर्शन हुए , जिनमें औरंगज़ेब के शासन में उनकी दुर्दशा को उजागर किया गया ।

• *कोंढाणा किल्ले पर विजय :-*

शिवाजी महाराज औरंगज़ेब के अत्याचार का विरोध करने वाले और हिंदू अधिकारों और संप्रभुता की वकालत करने वाले एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरे , शिवाजी महाराज के दृष्टिकोण में हिंदुओं में गौरव और पहचान की भावना को बढ़ावा देना और मुगल वर्चस्व के आख्यान का प्रतिकार करना शामिल था , उनके नेतृत्व की विशेषता रणनीतिक सैन्य अभियानों से थी , जिनका उद्देश्य क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करना और भारत में हिंदू उपस्थिति को सुदृढ़ करना था , शिवाजी महाराज का दृष्टिकोण न केवल सैन्य बल्कि सांस्कृतिक भी था , क्योंकि उन्होंने हिंदू परंपराओं और प्रथाओं के पुनरुद्धार को प्रोत्साहित किया , और इस लिए उन्होंने अपने पुनरुत्थान करना कोंढाणा किल्ले जितने से किया , मगर कोंढाणा (सिंहगढ़) विजय बनाया तन्हाजी मालुसरे जी ने ... ।

तन्हाजी मालुसरे जी शिवाजी महाराज के बचपन के मित्र और विश्वसनीय सेनापति थे , जो अपनी बहादुरी और निष्ठा के लिए जाने जाते थे , उन्हें कोंढाणा जितने के लिए भेजा , और व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं के बावजूद , तन्हाजी ने कोंढाणा पर कब्ज़ा करने की मुहिम को प्राथमिकता दिया , जिससे शिवराय और हिंदवी स्वराज्य के प्रति उनका समर्पण प्रदर्शित हुआ , और फिर कोंढाणा किल्ले के लिए युद्ध होता है , यह युद्ध भीषण रूप से चला , जिसमें तन्हाजी का मुगल सेनापति उदयभान के साथ भीषण द्वंद्वयुद्ध हुआ , और घेराबंदी के दौरान मुगल सेना द्वारा उत्पन्न चुनौतियों पर विजय पाने में तन्हाजी के दृढ़ संकल्प और वीरता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , अंततः युद्ध के दौरान तन्हाजी मालूसरे जी को वीरगति प्राप्त हुई और उनके साथ उनके भाई सूर्याजी का भी वीरगति को प्राप्त हुए , और यह होने के बाद सेना में एक अलग ही जोश आया और फिर जाकर हमने कोंढाणा (सिंहगढ़) जीता ।



तन्हाजी मालूसुरे जी

सिंहगढ़ जितने से हो शिवराय ने पुनरुत्थान करना प्रारंभ किया था , मगर सिंहगढ़ में जो बलिदान हमारे मावलों ने दिया , उसके कारण शिवराय और प्रेरित हुए कि अभी तो युद्ध करके हिंदवी स्वराज्य और बढ़ाना है , इस लिए उन्होंने एक किल्ला था , जो था औसा का किल्ला , जो औरंगजेब के अधीन था , उस किल्ले पर मराठों ने छापा मारा , और औरंगजेब का २४ जनवरी १६७० का एक पत्र मिलता है , जिसमें मराठों द्वारा किए गए लूटपाट का उल्लेख था , और फिर महाराज ने और किल्ले जीते ।

२४ फरवरी १६७० को शिवाजी महाराज के दूसरे बेटे राजाराम महाराज का जन्म हुआ , जो एक विशेष घटना थी , कहते है कि राजाराम उल्टे पैदा हुए , जो एक शुभ संकेत माना गया कि मुगलों का पतन होगा , फिर शिवाजी महाराज ने चारों दिशाओं में हिंदवी स्वराज्य की सीमाओं को बढ़ाने का निर्णय लिया , जिसमें पुरंदर का किल्ला भी शामिल था , उन्होंने अपने सेनापतियों को निर्देश दिए कि वे सभी गढ़–किल्ले पर आक्रमण करें और उन्हें जीतें , मुगलों के विरुद्ध कई किल्लो पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया , जिसमें पुरंदर और अन्य गढ़ थे , शिवाजी महाराज ने मुगलों के विरुद्ध अपनी रणनीतियों को लागू किया और कई किल्ले जीतने में सफल रहे , उन्होंने अपने सैनिकों को प्रेरित किया और उन्हें हर दिशा में आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया , मुगलों की कमजोरियों का लाभ उठाते हुए , शिवराय ने अपनी सेना को मजबूत किया और दूसरे किलों (किल्लो) पर नियंत्रण स्थापित किया ।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने सूरत पुनः लूटने की योजना बनाई , जिससे मुगलों को और अधिक नुकसान हुआ , और शिवराय ने वो धन किल्ले के निर्माण के लिए प्रयोग किया , मुगलों के बीच आपसी झगड़े का फायदा उठाते हुए शिवराय ने अपनी शक्ति को और बढ़ाया , उस समय , मुगलों के बड़े सरदार एक–दूसरे के विरुद्ध थे , जिससे शिवराय को अधिक अवसर मिले ।

उस समय मुहिम पे मुहिम हो रही थी , तब शिवराय के घोड़े सक्रिय रूप से दौड़ रहे थे , जो प्रतिकूल मौसम में भी उनके अदम्य साहस का प्रदर्शन कर रहे थे , तो ये कथा पुरंदर किल्ले पर कब्ज़ा करने की ओर बढ़ती है , तो शिवराय के अभियान में इस गढ़ के सामरिक महत्व को उजागर करती है , उस समय मराठा योद्धाओं की वीरता के चर्चे दिल्ली तक उठ रहे थे , और उनके युवा उत्साह की तुलना मुजुमदार जैसे अनुभवी सेनापतियों की बुद्धिमत्ता से की जा रही थी , और सूरत की लूट में शिवाजी महाराज ने विपरीत परिस्थिति होने के बावजूद भी अपना काम किया और वो भी हिंदवी स्वराज्य के लिए , और शिवाजी महाराज के अभियानों के सांस्कृतिक प्रभाव पड़े है, हमे शिवाजी महाराज की नेतृत्व शैली से सीखे लेनी चाहिए , जिसमें वीरता और अपने लोगों के प्रति करुणा का समावेश था , शिवाजी महाराज के उन मूल्यों , जैसे साहस , सम्मान और ईमानदारी , स्त्री के प्रति सम्मान को हमे अपनाकर उनकी विरासत का सम्मान करना चाहिए , तो पन्हाला किल्ले में महाराज ने वापिस से सर्जिकल स्ट्राइक करवाई थी , जहां ६० मराठों ने २५०० म्लेच्छ सेना को उनकी औकात दिखा दी थी , और फिर बाद में पन्हाला किल्ला वापिस से शिवराय ने जीत लिया और फिर उन्होंने हिंदवी स्वराज्य को और बढ़ाया ।

• *छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रसाल बुंदेला की भेट :-*

तो छत्रसाल बुंदेला (मध्यप्रदेश में राज थे) वह खुद छत्रपति शिवाजी महाराज से मिलने आए १६६८ में , और छत्रसाल खुद शिवाजी महाराज को अपना आदर्श मानते थे और उनके प्रति समर्पण भाव लेकर , मगर शिवराय ने अपने वापिस लौटने को कहा , और उन्हें वह स्वराज्य का निर्माण करने के की कहा ।

शिवाजी महाराज की रणनीतिक योजना तब स्पष्ट होती है जब वे आंतरिक रूप से क्षेत्रों पर नियंत्रण करना शुरू करते हैं , सीमाओं की सुरक्षा और महाराष्ट्र को मज़बूत करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं , वे जंजीरा किल्ले को समुद्री मार्गों पर नियंत्रण और सैन्य लाभ के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु मानते हैं , जंजीरा पर कब्ज़ा करने में शिवराय के सामने कई कठिनाइ थी , जो कि सिद्दियों द्वारा नियंत्रित और सुदृढ़ किलेबंद था , जिन्होंने १५ वर्षों तक उनके प्रयासों का विरोध किया , उनके उत्तराधिकारियों सहित कई प्रयासों के बावजूद , किल्ला बाजीराव द्वारा बाद में की गई विजय तक दुर्गम बना रहा था ।

जंजीरा किल्ले को महाराज जीत नहीं पाए थे , मगर शिवराय ने मुगलों के आक्रमण के विरुद्ध नाशिक की सुरक्षा पर केंद्रित किया , उन्होंने नाशिक के आसपास का क्षेत्र (जिसमें साल्हेर किला भी शामिल है) अपने भौगोलिक महत्व के कारण सैन्य अभियानों का केंद्र बिंदु बन गया , और १६७२ के महाराज ने साल्हेर किल्ले को जीता , नाशिक के इस क्षेत्र पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए नाशिक पर कब्ज़ा करने का इरादा था मुगलों का , जिससे शिवराय अपनी सुरक्षा व्यवस्था को मज़बूत करने के लिए प्रेरित हुए , शिवराय ने सामरिक गतिविधियों में अपने सेनापतियों को संभावित मुगल हमलों के लिए तैयार रहने का संदेश भेजा था , जो उनके सक्रिय नेतृत्व को दर्शाता है , इसमें दादाजी कोंडदेव और अन्य सेनापतियों जैसे प्रमुख व्यक्तियों ने मुगलों के विरुद्ध सैनिकों को संगठित करने और जवाबी हमलों की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी , और संख्यात्मक रूप से श्रेष्ठ सेनाओं के विरुद्ध सफल सैन्य रणनीतियों को क्रियान्वित करने के लिए शिवराय के सेनापतियों के बीच समन्वय अत्यंत महत्वपूर्ण है , और साल्हेर किल्ले की घेराबंदी बहुत मजबूत थी , जिसमें शिवराय की सेना मुगल सेना को परास्त करने के लिए गुरिल्ला रणनीति अपनाते थे , और युद्ध की रणनीतियों में अचानक हमले और इलाके का अपने लाभ के लिए उपयोग शामिल है , जो शिवराय की सैन्य कुशलता को दर्शाता है ।





६ – शिवराज्याभिषेख की तैयारी

• *हिंदवी स्वराज्य मध्यप्रदेश में :-*

तो असल में महाराष्ट्र से कई सरदार बाद में हिंदवी स्वराज्य के विस्तार से दूसरे क्षेत्रों में गए , उदाहरण के लिए –

सिंधिया (जो असल में 'शिंदे' थे) – ग्वालियर
होलकर – इंदौर
गायकवाड़ – बड़ौदा (वडोदरा)

शिवाजी महाराज तब हर जगह छापा मार रहे थे , और धन एकत्रित कर रहे थे और ये केवल महाराज नहीं बल्कि 'मोरोपंत पिंगले' (हिंदवी स्वराज्य के पहले पेशवा) , और उनके अलावा कई और सरदार छापा मार रहे थे , और तभी महाराज ने डिंडोरी के पास हमले की योजना बनाई , और बाद में उन्होंने बहादुरपुर को निशाना बनाने का निर्णय लिया , जो एक रणनीतिक स्थान था जहाँ संभावित खतरा था , फिर उन्होंने मध्यप्रदेश के पास के ही कई छापे मारे , और इन आक्रमणों से बहुत लाभ हुआ हिंदवी स्वराज्य को और तब मुगलों का बहुत नुकसान हुआ ।

• *छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रसाल बुंदेला का गठबंधन :-*

तो जैसे कि मैने बताया था कि छत्रसाल और शिवराय में मित्रता हुई थी , मगर छत्रसाल जी के व्यक्तिव को हमने जाना नहीं था , तो छत्रसाल अपनी बहादुरी और नेतृत्व क्षमता के लिए जाने जाते थे , उन्होंने उस समय के जटिल राजनीतिक परिदृश्य को संभाला था , जिसमें मुगलों और मराठों दोनों के साथ संबंध शामिल थे , और छत्रसाल की यात्रा उन्हें शिवाजी महाराज के साथ गठबंधन की ओर ले जाती है ,...

जो दोनों नेताओं के बीच परस्पर सम्मान और प्रशंसा को उजागर करती है , यह गठबंधन केवल राजनीतिक नहीं था , बल्कि मुगल शासन से स्वतंत्रता के साझा दृष्टिकोण पर आधारित था , जो हिंदवी स्वराज की भावना को रूप देता था , शिवाजी महाराज द्वारा छत्रसाल को अपने क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने और अपना शासन स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित मिला था ।

तो छत्रसाल की सेना में भी हिंदवी स्वराज की अवधारणा का गहराई से अन्वेषण किया गया , जिसमें भारतीय इतिहास और औपनिवेशिक ताकतों के विरुद्ध प्रतिरोध के संदर्भ में इसके महत्व पर बल दिया गया ।

- *शिवराय के और आक्रमण हिंदवी स्वराज्य के लिए :-*

शिवराय ने मुगलो और आदिलशाही पर एक साथ वार करना शुरू किया था और वो दोनों को मार रहे थे , तो आदिलशाह का एक सरदार था खवास खान , जो शिवराय से नहीं चिढ़ता था , तो इसे भी शिवाजी महाराज ने बहुत वीरता से हराया था , और शिवाजी महाराज के सैन्य प्रयासों की गति बढ़ती है , और वे महाराष्ट्र में मुग़ल सल्तनत पर हमला करना शुरू करते हैं और महत्वपूर्ण विजय प्राप्त करते हैं , जिसमें पन्हाला जैसे किलों पर कब्ज़ा भी शामिल है , इसमें मुख्य रूप में आप देख सकते हो कि मराठों की छवि कैसे बदली वो भी छत्रपति शिवाजी महाराज के वजह से , तो शिवराय ने मराठा पहचान को पराधीनता से गौरव और शक्ति में परिवर्तित किया और उन्हें अपने म्लेच्छों के विरुद्ध डटकर खड़े होने के लिए प्रोत्साहित दिया , जहां पहले आत्म-सम्मान नहीं मिलता था मराठों को , वही फिर बाद में मुगलों का सिर झुकाने लगे ।

• उमरानी का युद्ध :-

उमरानी का युद्ध १६७३ में बीजापुर सल्तनत और मराठा साम्राज्य के बीच हुआ था , यह युद्ध बीजापुर सल्तनत के पश्चिम में हुआ था , इस युद्ध में मराठा सेना का नेतृत्व प्रतापराव जी ने किया था , इस युद्ध में मराठों ने दुश्मन को रोक दिया था , जिससे उस खान की सेना को भारी नुकसान हुआ , और इसके बाद हुए भीषण युद्ध ने मराठा योद्धाओं की बहादुरी और संख्या में कम होने के बावजूद दुश्मन को परास्त करने की उनकी क्षमता को उजागर किया , इस युद्ध के परिणाम के गहरे निहितार्थ थे , जिससे दुश्मन के संसाधनों पर कब्ज़ा हो गया हमारे द्वारा और मराठों का मनोबल बढ़ा , और अंतत: यह संघर्ष सैन्य रणनीति और युद्ध में निर्णायक नेतृत्व के महत्व को बताता है ।

यह होने के बाद शिवराय का राज्याभिषेक पास ही था , और महाराज का यह राज्याभिषेक दर्शाता है कि सालों के मुगल अंधेरे के बाद हिंदवी स्वराज्य का सूर्य उदय हुआ और उन्होंने कर ही दिखाया जो उन्हें करना था ... ।

७ – शिवराज्याभिषेख सोहळा

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष त्रयोदशी (६ जून १६७४) को हिंदवी स्वराज्य का सूर्य उदय हुआ , तब मेरे राजा का राज्याभिषेक हुआ , तब छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ और वह हिंदवी स्वराज्य के पहले छत्रपति बने , और म्लेच्छो के पूर्ण आक्रमण के बाद भारत में उस बड़े स्तर पर कोई भी सनातनी राजा बचा ही नहीं था जो खुदका राज्य चलाए , सब या तो मारे गए थे , संघर्ष कर रहे थे या तो मुगलों के आधीन होकर राज कर रहे थे , उस समय यही था कि असली ख़तरा बाहरी आक्रमणकारियों से नहीं , बल्कि भीतर से था , खासकर उन लोगों से था जो झूठे नेता होने का दावा करते थे , और वही खुद धोखा देते थे खुद के निहित स्वार्थ के लिए , यहां तक कि राजा कृष्णदेवराय के शासनकाल में भी धोखेबाज नेताओं ने आदिल शाह को एक देवता का अवतार घोषित कर दिया था (अपने निहित स्वार्थ के चलते) , और हमारे छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस स्थिति में अपना हिंदवी स्वराज्य स्थापित किया और वह पहले छत्रपति (राजा / जिनके छत्र के तले प्रजा रही वो हमारे छत्रपति) बने ।

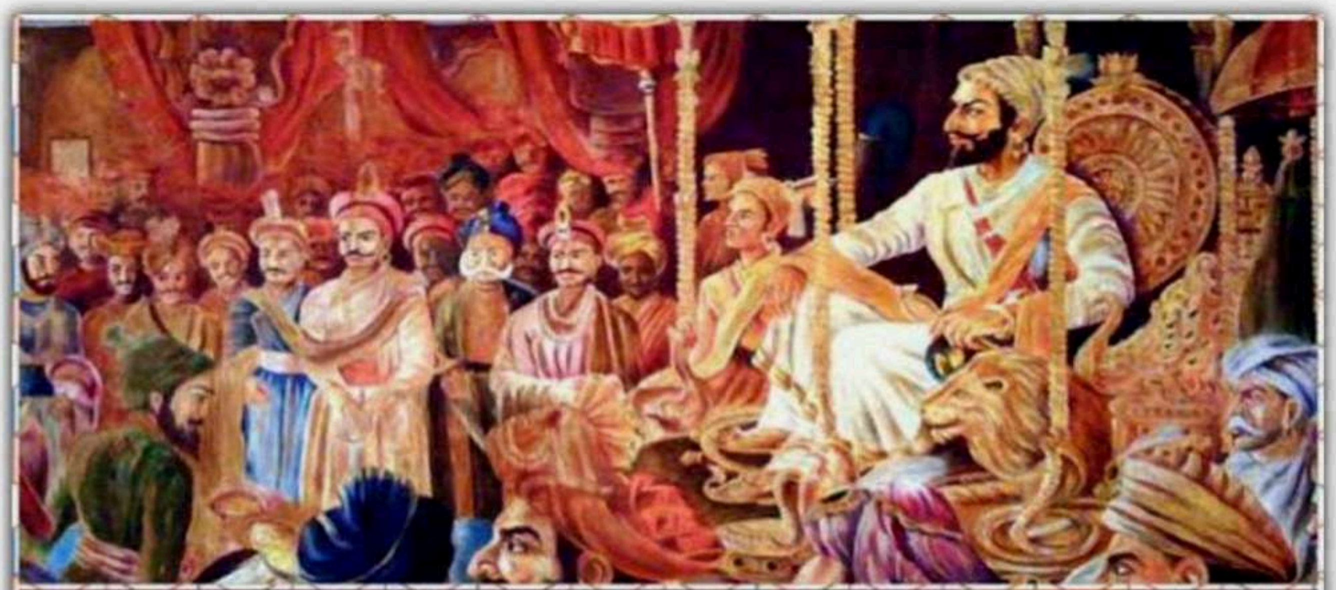
छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है , जो उस समय हिंदुओं की एकता के लिए महत्वपूर्ण थी जब उन्हें बाहरी ताकतों से ख़तरा था , यहां तक कि शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का विरोध उनके अपने समुदाय के भीतर से भी आया था , जिसमें झूठे क्षत्रिय और शास्त्र (धर्म ग्रन्थ) न पढ़े लोग शामिल थे , शिवराय के राज्याभिष में कई लोगों का विरोध था (क्यों कि वह जन्म से राजा नहीं थे) , इसमें कई सरदारों का विरोध था ही , बल्कि इस विरोध में कई ऐसे भी लोगों थे जिन्होंने शास्त्र नहीं पढ़ा फिर भी कुतर्क करते थे ,..

उनके साथ खुद 'गागा भट्ट' जी ने शास्त्रार्थ किया और उन्हें तर्क से हराया , गागा भट्ट जी को शिवाजी महाराज के शासन को वैध बनाने में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता है , और राज्याभिषेक प्रक्रिया में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी , गागा भट्ट जी की भागीदारी केवल औपचारिक नहीं थी , बल्कि जनता की नज़र में शिवाजी महाराज के अधिकार को स्थापित करने के लिए आवश्यक थी , गागा भट्ट जी ने शिवराय के राज्याभिषेक पर एक पुस्तक लिखी थी , जिसका नाम था 'शिवराज्याभिषेख कल्पतरु' , इस पुस्तक में शिवराय के राज्याभिषेक की सारी जानकारी है , जो हमें उनकी महानता को दर्शाती है , और विभिन्न चुनौतियों के बावजूद भी शिवराय का राज्याभिषेख हुआ था ।

शिवराय के राज्याभिषेक में शामिल हुए थे अंग्रेज अधिकारी 'हेनरी ऑक्सेंडेन' , उन्होंने छत्रपति शिवराजी महाराज के बारे में अपने लेख में एक बात कही थी , उन्होंने लिखा था कि – "मैंने स्वर्ण सिंहासन के दोनों ओर दो बड़े सुनहरे मुकुट , सुनहरे भालों की नोक पर कई गए अधिकार चिन्ह और शाही सर्वोच्चता के प्रतीक देखे , बाईं ओर , एक घुड़सवार भाले की नोक पर बराबर वजन का सोने का एक तराजू था , यह तराजू निष्पक्ष माना जाता था , उनके चेहरे से उनकी बुद्धिमत्ता और चतुराई का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता था , उनका रंग अन्य मराठों की तुलना में अधिक गोरा था , और उनकी दृष्टि तेज ,नाक सीधी और भौंहें मोटी थीं , उनकी मूंछें बहुत अच्छी थीं , उनके भाषण निर्णायक , स्पष्ट , लेकिन तेज होते थे ।"

• *शिवराय का सुवर्ण सिंहासन कहा गया :-*

छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेख हुआ और वह ३२ मण स्वर्ण के सिंहासन पर विराजमान हुए , इतिहासकार ३२ मण सिंहासन को १४४ किलो सोने के बने सिंहासन का बताते है , मगर कुछ इतिहासकार ३२ मण को १२८० किलो का स्वर्ण सिंहासन भी बताते है , मगर दोनों परिमाप अपने स्तर पर सही थे , मगर इतना कहे सकते की वह स्वर्ण सिंहासन था जिसपर महाराज आरूढ़ हुए वह खुद में महान था , और शिवराय तो इस स्वर्ण सिंहासन पर आरूढ़ हुए ही मगर खुद छत्रपति संभाजी महाराज भी इस सिंहासन पर आरूढ़ हुए थे , मगर शंभू राजे की मृत्यु के बाद इस सिंहासन का उल्लेख कम मिलता है , क्यों कि तब रायगढ़ ९ महीनों तक येसुबाई ने बचाए रखा था मगर जब वो बचाने में असमर्थ रहीं तब उन्होंने रायगढ़ मुगलों को सौंप दिया , क्यों कि तब गढ़ रख नहीं सकते थे पर मगर उस परिस्थिति में मुगल गढ़ के अंदर आ जाते तो वे राजाराम महाराज को मार देते (जो कि शिवाजी महाराज के छोटे बेटे थे , और क्यों कि शंभू राजे के पुत्र 'शाहू महराज' छोटे थे इस लिए खुद महारानी येसुबाई ने 'राजाराम महाराज' को छत्रपति बनाया था , तो इन्हें बचाने के लिए महारानी येसुबाई ने गढ़ मुगलों को सौंप दिया) , और ये तर्क ही होगा कि अगर महारानी येसुबाई ने अपनी पूरी सहमति से गढ़ दिया था , तो उन्होंने शिवराय के स्वर्ण सिंहासन को तो छिपाया ही होगा , और मुगलों ने सिंहासन को नष्ट किया इसका भी स्पष्ट उल्लेख नहीं है , इस लिए शायद स्वर्ण सिंहासन आज भी अस्तित्व में हो सकता है , वो तो अब उत्खनन में पता चल सकता है और अभी रायगढ़ में उत्खनन हो रहा है (वहां पर यंत्र मिला था , जो दिशाओं और तारो को भी दिखाता था , वह एक महान वास्तुकला को दर्शाता है) वहां पर शायद स्वर्ण सिंहासन से संबंधित कुछ मिल सकता है ।







• *शिवराय का दुसरा राज्याभिषेख:-*

कहा जाता है कि , शिवराय का दूसरा राज्याभिषेख भी हुआ था वो भी तांत्रिक पद्धति से , क्योंकि पहले राज्याभिषेख में थोड़ी बहुत चूक और गलतियां हुई थी , और उन गलतियों को सुधारने के लिए शिवराय का दूसरा राज्याभिषेख किया गया था गागा भट्ट जी द्वारा , राज्याभिषेक के बाद , निश्चल महाराज ने अशुभ संकेतों की एक सूची प्रस्तुत की , जिनके बारे में उनका मानना था कि यह समारोह दोषपूर्ण है , और उन्होंने शिवाजी महाराज को चेतावनी दी कि यदि उनकी सलाह की अनदेखी की गई तो आने वाले दुर्भाग्य का सामना करना पड़ेगा , उन्होंने राज्याभिषेक के १३ , २२ , ५५ और ६५ दिन बाद होने वाली आपदाओं की भविष्यवाणी की , जिससे शिवाजी महाराज बेचैन हो गए और उन्हें इन चेतावनियों के निहितार्थों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया , और फिर गागा भट्ट जी द्वारा उनका दूसरा राज्याभिषेख हुआ , और निश्चल महाराज ने शिवाजी महाराज के रायगढ़ में कदम रखने के क्षण से ही कई घटनाओं को अशुभ संकेत बताया , जिनमें राज्याभिषेक के तुरंत बाद कई प्रमुख हस्तियों की मृत्यु भी शामिल है , उन्होंने बताया कि गायत्री मंत्र दीक्षा के तुरंत बाद रायगढ़ पर एक उल्कापिंड गिरा , जो आगे आने वाले दुर्भाग्य का संकेत था , राज्याभिषेक के दौरान , गागा भट्ट को एक चोट लगी , जिसे एक और अशुभ संकेत माना गया , जिससे यह विश्वास और पुख्ता हो गया कि यह समारोह दोषपूर्ण था, और राज्याभिषेक के दौरान धनुष की डोरी का टूटना भी एक अपशकुन माना गया , क्योंकि यह एक राजा से अपेक्षित औपचारिक कर्तव्यों में विफलता का प्रतीक था , निश्चल महाराज ने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्थिति को सुधारने और आगे आने वाली विपत्तियों से बचने के लिए शिवाजी महाराज का तांत्रिक विधि से दूसरा राज्याभिषेक किया गया ,...

और कई दुर्भाग्यों के बाद , शिवाजी महाराज अशुभ संकेतों को दूर करने और अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिए २३ सितंबर १६७४ को दूसरा राज्याभिषेक करने के लिए सब सहमत हुए और राज्याभिषेख किया गया , और यह निर्णय इस विश्वास से प्रेरित था कि प्रथम राज्याभिषेक राजा के राज्याभिषेक की पारंपरिक अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं था , द्वितीय राज्याभिषेक में विस्तृत अनुष्ठान शामिल थे , जिनमें भेंट और बलिदान शामिल थे , जो राज्याभिषेक के संदर्भ में प्रचलित थे , इस समारोह का उद्देश्य शिवाजी महाराज की शासक के रूप में वैधता को सुदृढ़ करना और उनके शासन करने के दैवीय अधिकार के बारे में उनकी प्रजा के मन में किसी भी प्रकार के संदेह को दूर करना था , इस तरह के अनुष्ठानों के प्रति प्रारंभिक प्रतिरोध के बावजूद , शिवाजी महाराज की अपनी प्रजा के कल्याण को सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता ने अंततः उन्हें राजत्व से जुड़ी पारंपरिक प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया था और फिर उनका दूसरा राज्याभिषेख हुआ , और शिवाजी महाराज का दूसरा राज्याभिषेक उनके शासनकाल का एक महत्वपूर्ण क्षण था , जिसका उद्देश्य उनकी वैधता और अधिकार के बारे में किसी भी संदेह को दूर करना था , उनके राज्याभिषेक से जुड़ी घटनाएँ शकुनों और अनुष्ठानों से जुड़ी सांस्कृतिक मान्यताओं से जुड़ी थीं , जो उनके शासन में शासन और आध्यात्मिकता के बीच जटिल अंतर्संबंध को दर्शाती हैं , और यह कथा शिवाजी महाराज के शासनकाल के ऐतिहासिक संदर्भ और सत्ता को सुदृढ़ करने के लिए उनके द्वारा अपनाई गई रणनीतियों पर गहराई से प्रकाश डालती है ।

• *राज माता जीजाबाई का स्वर्गवास :-*

छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेख के कुछ ही दिन बाद , यानी १७ जून १६७४ में मासहेब जीजाबाई का देहांत हुआ (स्वर्गवास हुआ) था , माता जीजाबाई ने उनके चरित्र और मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी , और शिवराय में छोटी से ही उनमें वीरता और नेतृत्व की भावना का संचार किया था , माता जीजाबाई के दृढ़ निश्चय और अपने परिवार के प्रति समर्पण शिवराय के प्रारंभिक वर्षों में , विशेष रूप से उनके पिता शाहजी राजे के अलगाव के समय , अत्यंत महत्वपूर्ण था , माता जीजाबाई ने शिवराय के लिए समर्थन जुटाने और स्थानीय समुदायों में विश्वास जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , जिससे उन्हें अपने पुत्र के पीछे एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित किया , और उनका योगदान हिंदवी स्वराज्य के लिए सदा आतुर्णीय रहा ।



८ – शिवराज्याभिषेख के बाद

महाराज के राज्याभिषेख के एक महीने बाद औरंगज़ेब ने दक्कन (दक्खन) के मुग़ल शासक दिलेर ख़ान (कई लोग कहते है "संभाजी महाराज दिलेर खान से मिल गए थे , और शिवराय की मृत्यु के बाद वो राज्य लेने आए थे" , मगर ये झूठ है क्यों कि वास्तव में शंभू राजे दिले खान से मिले ये शिवराय और उनकी कूटनीति का भाग था , इससे वह इन म्लेच्छो के बीच युद्ध कराना चाहते थे , इस लिए शंभू राजे खुद वहां जाकर अभी को बर्बाद करके वापिस आए थे) को वापस बुला लिया था , जो एक महत्वपूर्ण राजनीतिक कदम था , और दक्कन में मुग़ल सेनापति बहादुर ख़ान को दृढ़ विश्वास था कि वह शिवाजी महाराज को युद्ध में हरा सकता है , वैसे शिवराय के राजगद्दी पर आरोहण से पुर्तगालियों और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों सहित विभिन्न जनों में बेचैनी फैल गई , इस राज्याभिषेक को मुग़ल साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय शासकों के लिए एक बड़ा ख़तरा माना गया था , और इन्हीं में से एक बहादुर खान था , जिसके संसाधनों से अवगत शिवाजी महाराज ने उसके धन और घोड़ों को लूटने के लिए एक रणनीतिक हमले की योजना बनाई थी , तो जुलाई में शिवराय की सेना , जो मुख्यतः वर्षा ऋतु में कृषि कार्य करती थी , एक अभियान के लिए तैयार थी , तो तब बारिश के बावजूद , शिवराय इस अभियान के लिए लगभग ९०००० सैनिकों की एक बड़ी सेना इकट्ठा करने में सफल रहे बहादुर खान पर हमला करने के लिए , और बहादुर खान पर हमले की योजना बहुत ही बारीकी से बनाई गई थी , जिसमें रणनीतिक हमले के लिए सेना का एक विभाजन भी शामिल था , तब शिवाजी की सेना ने एक आश्चर्यजनक हमला किया , जो उनके सामान्य रात्रिकालीन हमलों से अलग था , इस हमले में एक रणनीतिक छल का इस्तेमाल किया गया ,....

जिसमें मराठों ने बहादुर खान की सेना को लुभाने के लिए पीछे हटने का नाटक किया और फिर हमला किया , तब मराठों ने बहादुर खान से घोड़ों और अन्य कीमती वस्तुओं सहित काफी मात्रा में धन-संपत्ति सफलतापूर्वक हथिया ली , और इस तरह बहादुर खान की सेना को काफी नुकसान पहुँचाने के बाद शिवराय की सेना के सफलतापूर्वक पीछे हटने के साथ ही अभियान समाप्त हुआ और इसे भी 'सर्जिकल स्ट्राइक' कहे सकते है , तो बहादुर खान के विरुद्ध सफल अभियान के बाद , शिवाजी महाराज ने आगे के आक्रमणों की योजना बनाई , जिसमें सूरत की संपत्ति पर कब्ज़ा करना भी शामिल था ,मराठों ने अपने बढ़ते आत्मविश्वास और सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हुए सूरत पर तीसरे आक्रमण की तैयारी की , शिवराय की सेनाओं को स्थानीय शासकों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा था और उनके अभियानों के दौरान उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़ा था , फिर शिवाजी महाराज ने विभिन्न कल्लो (किलों / गढ़) की घेराबंदी शुरू की , और उन्हें फोंडा का किल्ला भी जितना था , जिसका नेतृत्व एक मोहम्मद खान कर रहा था , वो किल्ला जितने में हमें भयंकर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा , फोंडा किल्ले पर कब्ज़ा करने में अंततः सफलता ही मिली , जो शिवराय के लिए एक महत्वपूर्ण विजय थी , तो शिवाजी महाराज के इन अभियानों ने दक्कन में उनकी शक्ति को मज़बूत किया और मुग़ल सेनाओं के विरुद्ध उनके सैन्य कौशल का प्रदर्शन किया , यह काल निरंतर युद्ध , रणनीतिक योजना और ऐसे गठबंधनों की स्थापना का काल रहा , जिन्होंने मराठा साम्राज्य के भविष्य को आकार दिया , और ऐसे शिवराय ने पुनरुत्थान किया ।

शिवाजी महाराज ने फोंडा किले पर सफलतापूर्वक कब्ज़ा कर लिया था , जो उनके अभियान की एक महत्वपूर्ण जीत थी , इस विजय के बाद उन्होंने कारवार क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने के लिए मुहिम कि ,और अपने क्षेत्र का और विस्तार किया , इससे पहले , उन्होंने कान्हदेश (खानदेश) क्षेत्र में एक अंग्रेजी कारखाने को लूटा था , जिससे विदेशी शक्तियों के विरुद्ध उनकी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन हुआ था , तो कारवार पर विजय प्राप्त करने के बाद , शिवराय रायगढ़ लौट आए , जहाँ उन्हें अंग्रेजों की ओर से कूटनीतिक चुनौती का सामना करना पड़ा था , और तब ऑस्टिन नामक एक अंग्रेज वकील को शिवराय के साथ उनके कारखाने की लूट से हुए नुकसान के बारे में बातचीत करने के लिए भेजा गया था , अंग्रेजों ने मुआवजे के बदले उपहार देने की पेशकश की , लेकिन शिवराय इस बात पर अड़े रहे कि वह केवल अपने क्षेत्र की रक्षा कर रहे थे , और शिवाजी महाराज जंजीरा को पुनः प्राप्त करने के लिए दृढ़ थे , जो उनके प्रयासों के बावजूद जितना कठिन हो रहा था , फिर उन्होंने पद्मदुर्ग का निर्माण कराया , जो उस क्षेत्र की सुरक्षा के लिए रणनीतिक रूप से बनाया गया था , जिससे मराठा सेना जंजीरा के विरुद्ध अभियान चला सके , और इस किल्ले से समुद्र-तट की रक्षा की गई (और इसी रक्षा के लिए महाराज ने नौसेना का भी निर्माण कराया था , और इस लिए उन्हें आज भी 'फादर ऑफ इंडियन नेवी' के नाम से जाना जाता है) , तो शिवराय का उद्देश्य मराठा नौसैनिक प्रभुत्व को पुनः स्थापित करना था और उन्होंने जंजीरा पर पुनः नियंत्रण पाने के लिए कई हमले किए , मराठों को सिद्दियों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा , जिन्होंने उस क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण कर लिया था और शिवराय की सेनाओं पर जवाबी हमले किए , और दोनों पक्षों की ओर से बार-बार हमलों के साथ संघर्ष बढ़ता गया , जिसके परिणामस्वरूप जंजीरा के आसपास महत्वपूर्ण सैन्य मुठभेड़ें हुईं ।

जनवरी १६७६ में , शिवाजी महाराज गंभीर रूप से बीमार पड़ गए , जिसके कारण उनकी मृत्यु की अफवाहें , विशेष रूप से उनके शत्रुओं के बीच , व्यापक रूप से फैल गईं , अंग्रेजों ने उनके अधिकार को कमज़ोर करने और उनके राज्य में अस्थिरता पैदा करने के लिए ये अफवाहें फैलाईं , ऐसे आरोप थे कि उन्हें ज़हर दिया गया , जिससे राजनीतिक परिदृश्य और जटिल हो गया , शिवराय की स्वास्थ्य समस्याएँ वर्षों तक लगातार युद्ध और आराम की कमी के कारण और भी गंभीर हो गईं थी , क्योंकि वे अपनी युवावस्था से ही सैन्य अभियानों में लगे हुए थे , मगर अपनी बीमारी के बावजूद , शिवराय ने सैन्य रणनीतियाँ बनाना और मराठा सेना पर अपना नेतृत्व बनाए रखना जारी रखा , और उन्होंने नई मुहिम (दक्षिण दिग्विजय) के बारे में भी सोच लिया था ।

तबके समय का राजनीतिक वातावरण प्रतिद्वंद्विता से भरा हुआ था , जिसमें मुग़ल साम्राज्य के साथ संघर्ष और आदिल शाही वंश के आंतरिक विवाद शामिल थे , शिवराय की आगरा से वापसी औरंगज़ेब की सेनाओं के साथ एक महत्वपूर्ण टकराव से चिह्नित थी , जिसने मुग़ल सत्ता के प्रति उनकी अवज्ञा को प्रदर्शित किया था , शिवराय की रणनीतिक कुशाग्रता जटिल राजनीतिक परिदृश्यों को पार करने और दुर्जेय विरोधियों के विरुद्ध अपनी संप्रभुता बनाए रखने की उनकी क्षमता में स्पष्ट थी , और नेतोजी पालकर जैसे उल्लेखनीय व्यक्तियों ने मराठा अभियानों में , विशेष रूप से सिद्दियों के विरुद्ध शिवराय के सैन्य अभियानों के दौरान , महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं थी , मगर पालकर जी का इस्लाम अपनाना और उसके बाद शिवराय के पाले में लौटना (उनकी फिर घरवापसी की गई) , इस उथल-पुथल भरे दौर में वफ़ादारी और पहचान की जटिलताओं को दर्शाता है , और पालकर की की घरवापसी पर नहीं शास्त्रार्थ हुआ था मगर नेतोजी पालकर के पक्ष से छत्रपति संभाजी महाराज ने तर्क दिया तब जाकर उनकी घरवापसी हुई ,...

क्यों कि वह जन्म से तो मुस्लिम थे नहीं , तब उन्हें मजबूरी होने के कारण इस्लाम अपमान पड़ा जिसकी वजह से वह वापिस सनातनी बन सकते थे , और ऐसे घरवापसी हुई उनकी ।

• *शिवराय के आयुषों में संतो का प्रभाव :-*

छत्रपति शिवाजी महाराज सभी संतों का सम्मान करते थे और अपनी आस्था पर गर्व करते थे , और शिवाजी महाराज विभिन्न संतों के लिए मंदिर और स्मारक बनवाने के लिए जाने जाते थे , जो उनकी संतो के प्रति उनकी श्रद्धा को दर्शाता है , और शिवाजी महाराज ने संत ज्ञानेश्वर की समाधि का जीर्णोद्धार किया था , जो संतों के सम्मान के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है , और शिवाजी महाराज और संत तुकाराम के संबंध अब भी प्रख्यात है , विशेष रूप से वो भेट जब संत तुकाराम ने शिवराय को 'छत्रपति' की उपाधि प्रदान की , जो भविष्य में एक रक्षक और नेता के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक थी ('छत्रपति' की उपाधि का अर्थ है वह जो संसार को आश्रय और सुरक्षा प्रदान करता है , जो शिवाजी की आकांक्षाओं के अनुरूप था) ।

छत्रपति शिवाजी महाराज और रामदास स्वामी के बीच भी बहुत अच्छे संबंध थे , वो उनके पारंपरिक गुरु नहीं , बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे , यह उल्लेखनीय है कि दोनों की आयु में काफी अंतर था , और शिवराय की रामदास स्वामी से भेट कई वर्षों बाद हुई थी , रामदास स्वामी ने शिवाजी को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया , विशेष रूप से अफ़ज़ल खान के हमले जैसे महत्वपूर्ण क्षणों में , और रामदास स्वामी ने उस उथल-पुथल भरे दौर में 'सुखकर्ता दुःखहर्ता' लिखी थी , जो शिवराय के जीवन में इसके महत्व पर ज़ोर देती है , तो संत रामदास जी पहले से ही शिवराय के गुरु नहीं थे ,...

उन्होंने बाद में शिवराय को आध्यात्म और धर्म की शिकवानी दी थी , और अगर वो पहले से उनके गुरु होते तो वे शिराएं की स्तुति में इतने सर्ग नहीं लिखते (और उन्होंने 'मनोबोध' नाम की पुस्तक भी लिखी थी शिवराय पर) –

"निश्चयाचा महामेरू ! बहुत जनांसी आधारू
अखंड स्थितीचा निर्धारु ! श्रीमंत योगी ॥
यशवंत, कीर्तिवंत ! सामर्थ्यवंत, वरदवंत
पुण्यवंत, नीतिवंत ! जाणता राजा ॥
शिवरायाचे आठवावे रूप ! शिवरायाचा आठवावा प्रताप
शिवरायाचा आठवावा साक्षेप ! भूमंडळी ॥
शिवरायाचे कैसे बोलणे ! शिवरायाचे कैसे चालणे
शिवरायाचे सलगी देणे ! कैसी असे ॥
सकळ सुखाचा केला त्याग ! करुनी साधिजे तो योग
राज्यसाधनाची लगबग! कैसी केली ॥"

अब आप सोचिए अगर पहले से ही संत रामदास शिवराय के गुरु होते तो वे उन्हें इतना सब नहीं कहते इस कविता में , मगर ये सत्य है कि उन्होंने बाद में शिवराय के जीवन में गुरु के जितना स्थान निभाया और उन्होंने शिवराय को कई सिख दी ।



• शिवराय संत तुकाराम जी के साथ



• शिवराय संत रामदास जी के साथ

छत्रपति शिवाजी महाराज शाकाहारी होते :–

'हेनरी ऑक्सेंडेन' के अनुसार जब छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ उस समय कुछ अंग्रेज भी उनके राज्याभिषेक को आए थे उनको मांस खाना था लेकिन उनको रायगढ़ पर मांस मिला नहीं , तो उनको मांस खाने के लिए रायगढ़ किले के नीचे से मंगवाना पड़ा तो इससे यह बात साफ होती है कि रायगढ़ किले पर मांस नहीं मिलता था , और छत्रपति शिवाजी महाराज का ऐसा आदेश हो सकता था कि किले पर प्राणी हत्या ना हो ।

छत्रपति संभाजी महाराज द्वारा लिखित 'बुद्धभूषण' ग्रंथ में यह वर्णित है कि मांसाहार पाप है , तो इससे हमे पता चलता है कि वो मांसाहार नहीं करते होंगे –

श्लोक क्र ४१
द्यूतं च मासं च सुरा च वेश्या पापर्द्भिचौर्य परदारसेवा।
एतानि सप्तं व्यसनानि सप्तं नरं सुघोरं नरकं नयन्ति।।

अर्थ~कोणती सात प्रकारची व्यसने केल्याने मनुष्याला घोर नरकाची प्राप्ती होते ते या श्लोकांत संभाजी महाराजांनी सांगितले आहे.
द्यूत(जुगार/लॉटरी/सट्टा) खेळणे, मांसभक्षण करणे, दारू अथवा अन्य व्यसनाच्या पदार्थांचे सेवन करणे, वेश्यागमन करणे, पापाने अथवा भ्रष्ट मार्गाने संपती गोळा करणे, चोरी करणे आणि परस्त्रीची सेवा करणे(व्यभिचार) ही सात प्रकारची व्यसने केल्यास मनुष्य नरकांत पडतो.

संभाजी महाराजांनी सांगितलेली ही व्यसने माणसाला मृत्यूनंतरच नव्हे तर जिवंतपणी देखील नरकयातना देतात असे पाहायला मिळते.
लॉटरी, सट्टा खेळणे हे व्यसन नरकात टाकणारे आहे असे संभाजी महाराज सांगतात.
मांसभक्षण करण्याने नरक प्राप्त होतो असे सांगणारे संभाजी महाराज निश्चितच शाकाहारी असले पाहिजेत.

ज्या संभाजी महाराजांनी दारू आणि अन्य अंमली पदार्थांच्या सेवनाने नरक प्राप्त होतो असे म्हटले आहे त्यांनाच काही लोकांनी अभ्यासाअभावी म्हणा अथवा अन्य कारणाने व्यसनी ठरविले हे किती दुर्दैव!
व्यभिचार आणि अनैतिक संबंधांना निषिद्ध मानणाऱ्या संभाजी महाराजांचे विचार आजच्या काळात आचरणात आणण्याची नितांत आवश्यकता आहे.

बुद्धभूषण – अध्याय ३ , श्लोक ४१

९ – दक्षिण दिग्विजय

छत्रपति शिवाजी महाराज ने जंजीरा के विरुद्ध एक और अभियान शुरू करने का निर्णय लिया था , जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री मोरोपंत ने किया , मोरोपंत की का पिछला अभियान सफलतापूर्वक पूरा हुआ , और अगस्त १६७६ में उनकी वापसी पर , उन्हें जंजीरा अभियान का कार्यभार सौंपा गया था , इस रणनीति में जंजीरा के निकट एक रणनीतिक क्षेत्र , राजापुरी डांडा का उपयोग करके , सिद्धि के नियंत्रण वाले किले पर आक्रमण किया गया , मोरोपंत ने आक्रमण शुरू करने के लिए १०००० मराठों की एक सेना इकट्ठा की , जो इस महत्वपूर्ण अभियान के लिए संसाधनों के जुटाव को दर्शाता है , इस योजना में जंजीरा किल्ले पर सीधी बमबारी के लिए तोपों की स्थिति के लिए लकड़ी के चबूतरे बनाना शामिल था , जो नवीन सैन्य रणनीति का प्रदर्शन था , हालाँकि, तोपों को अपने लक्ष्य तक पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था , जिसके कारण प्रभावी तोपखाने की सहायता सुनिश्चित करने के लिए सामरिक समायोजन की आवश्यकता पड़ी ,मराठों ने जंजीरा पर अचानक हमला करने के लिए सीढ़ियों का उपयोग करने की योजना बनाई , जो किल्ले की सुरक्षा द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने की उनकी अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है , इस हमले का समय रणनीतिक रूप से होली के त्योहार के दौरान रखा गया था , जो एक महत्वपूर्ण विवरण था जिसने सिद्धि की सेनाओं के लिए आश्चर्य के तत्व को बढ़ा दिया था , और मोरोपंत ने प्रारंभिक हमले की विफलता की पूरी ज़िम्मेदारी ली , सैन्य अभियानों में नेतृत्व और जवाबदेही का प्रदर्शन किया , इसके बाद भी हार मिली ,....

पर फिर मोरोपंत और पाटिल को भविष्य के हमलों में बेहतर निष्पादन सुनिश्चित करने के लिए एक नई योजना बनाने का काम सौंपा गया , जिससे पिछली गलतियों से सीखने की उनकी प्रतिबद्धता का पता चलता है , तब फिर सैनिकों के बीच मनोबल और बहादुरी की मान्यता के महत्व पर भी चर्चा की गई , जिसने अभियान के दौरान उनके संकल्प को बनाए रखने में अभिन्न भूमिका निभाई थी , और शिवाजी महाराज की नेतृत्व शैली , विशेष रूप से अपने सेनापतियों और सैनिकों में विश्वास और निष्ठा जगाने की उनकी क्षमता आपार थी , इस अभियान के बाद , शिवाजी महाराज ने पाटिल के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें एक अद्वितीय सम्मान से सम्मानित किया , जिसने उनके प्रशासन में बहादुरी और प्रतिबद्धता के महत्व को और पुष्ट किया गया , फिर चर्चा में शिवाजी महाराज द्वारा अपने सेनापतियों को दिए गए सम्मान और मान्यता पर विचार किया गया , जिसमें सैन्य नेतृत्व में मनोबल के महत्व पर बल दिया गया ।

तो शिवाजी महाराज की रणनीतिक दृष्टि में न केवल सैन्य विजय , बल्कि एक मजबूत और वफादार प्रशासन की स्थापना भी शामिल थी , जो उनके साम्राज्य की स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी , और फिर उन्होंने हिंदवी स्वराज्य के और विस्तार के लिए ‘दक्षिण दिग्विजय’ की मुहिम शुरू की , तो इस मुहिम का प्रारंभ कर्नाटक से हुआ , और फिर तमिलनाडु तक हिंदवी स्वराज्य पहुंचा ।

शिवराय ने 'दक्षिण दिग्विजय' से हिंदवी स्वराज्य कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और भाग्यनगर (हैदराबाद) जीत था, जिसका ऐतिहासिक महत्व बहुत है, तो छत्रपति शिवाजी महाराज की भाग्यनगर की यात्रा ५ फरवरी १६७७ के आसपास शुरू हुई थी, जहाँ वे लगभग एक महीने तक रहे, वहा पहुँचते समय शिवराय ने कुतुब शाह को अपने लक्ष्य से अवगत कराया और एक राजा के रूप में अपनी स्थिति का दावा करते हुए सम्मानजनक लहजे में बात की, शुरुआती तनाव के बावजूद, कुतुब शाह ने शिवराय का स्वागत करने के लिए अपने मंत्रियों को भेजा, जिससे दोनों पक्षों के लिए इस बैठक के महत्व का संकेत मिलता है, तो भाग्यनगर के नागरिक शिवराय के आगमन का पूरे मन से प्रतीक्षा कर रहे थे, जो सदियों के उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक एक नेता के प्रति उनकी श्रद्धा को दर्शाता था, और 'हिन्दूपदपादशाही' के निर्माता के रूप में शिवराय की प्रतिष्ठा ने जनता में विस्मय पैदा कर दिया, जो उन्हें प्रत्यक्ष देखने के लिए लालायित थे, यह क्षण इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि यह वर्षों की अधीनता के बाद हिंदू गौरव के पुनरुत्थान का प्रतीक था, और शिवराय ने कुतुब शाह का प्राय किया मुगलों और पठानों जैसे मकाई शत्रुओं के विरुद्ध, कुतुब शाह ने शिवराय को उनके सैन्य अभियानों के लिए संसाधनों से सहायता देने पर सहमति व्यक्त की, जो एक रणनीतिक साझेदारी का उदाहरण था।

शिवराय की सांस्कृतिक और धार्मिक स्थलों के प्रति प्रतिबद्धता थी , इस लिए उनकी यात्राओं के दौरान उन्होंने श्री शैलम मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए वित्तीय सहयोग दिया था , यह कार्य न केवल हिंदू विरासत जो उनमें थी वो दर्शाता है , और आंध्रप्रदेश के श्री शैलम में ही उनके सम्मान में एक मंदिर की स्थापना की गई थी , जिसका नाम 'श्री शिवाजी स्फूर्ति केंद्र' है ।

शिवराय की सैन्य रणनीति में जिंजी किले जैसे गढ़ों पर कब्ज़ा करना शामिल था , जो दक्षिणी क्षेत्रों पर नियंत्रण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था , उनकी नवीन रणनीतियों में अक्सर छल (धर्म के लिए किया था) और कूटनीति शामिल होती थी , तो जिंजी किले की सफल घेराबंदी एक महत्वपूर्ण विजय थी , जिसने शिवराय के सैन्य कौशल और रणनीतिक दूरदर्शिता को प्रदर्शित किया था ।

शिवाजी महाराज का प्रभाव तमिलनाडु तक भी फैला हुआ था (वे वहां गए भी थे उन्हें वहां यात्रा भी की उन्होंने और उनके चित्र भी वही पर बनाए गए) खासकर 'तंजावुर' जहां मराठा साम्राज्य और उस क्षेत्र में उनके अभियानों के माध्यम से क्रांति उठी , और शिवराय सौतेले भाई 'वेंकोजीराजे भोसले' ने तंजावुर में एक मराठा साम्राज्य की स्थापना की थी , और शिवराय ने स्वयं एक अभियान का नेतृत्व किया जिसके परिणामस्वरूप १६७७ में जिंजी किले पर कब्ज़ा हुआ था , शिवाजी महाराज का विजयनगर साम्राज्य के वंशजों से भी संपर्क हुआ था दक्षिण में , और वैसे शिवराय मद्रास भी गए , वहां तक उन्होंने गढ़ किल्ले जीते , और उनकी दक्षिण दिग्विजय की मुहिम सार्थक रही ।


परकीय सत्ता
किल्ला
अहमदनगर
इंदापूर
तुळजापूर
पंढरपूर
भूपालगड
गोवळकोंडा
विजापूर
जमखंडी
मुधोळ
कृष्णा नदी
गोवा
(पोर्तुगीज)
कारवार
अंकोला
राणीबेन्नूर
हरपनहळ्ळी
होदीगेरे
चित्रदुर्ग
बंगलोर
कोलार
वेल्लोर
जिंजी
वालदोर
पुदुच्चेरी (पाँडिचेरी)
देवनापट्टण
कडलूर
चिदंबरम
तंजावर
कोचीन
लक्षद्वीप
बेटे
मद्रास (चेन्नई)
तिरुपती
चिक्कबाळापूर
कोप्पळ
हंपी
नवलगुंद
हुबळी

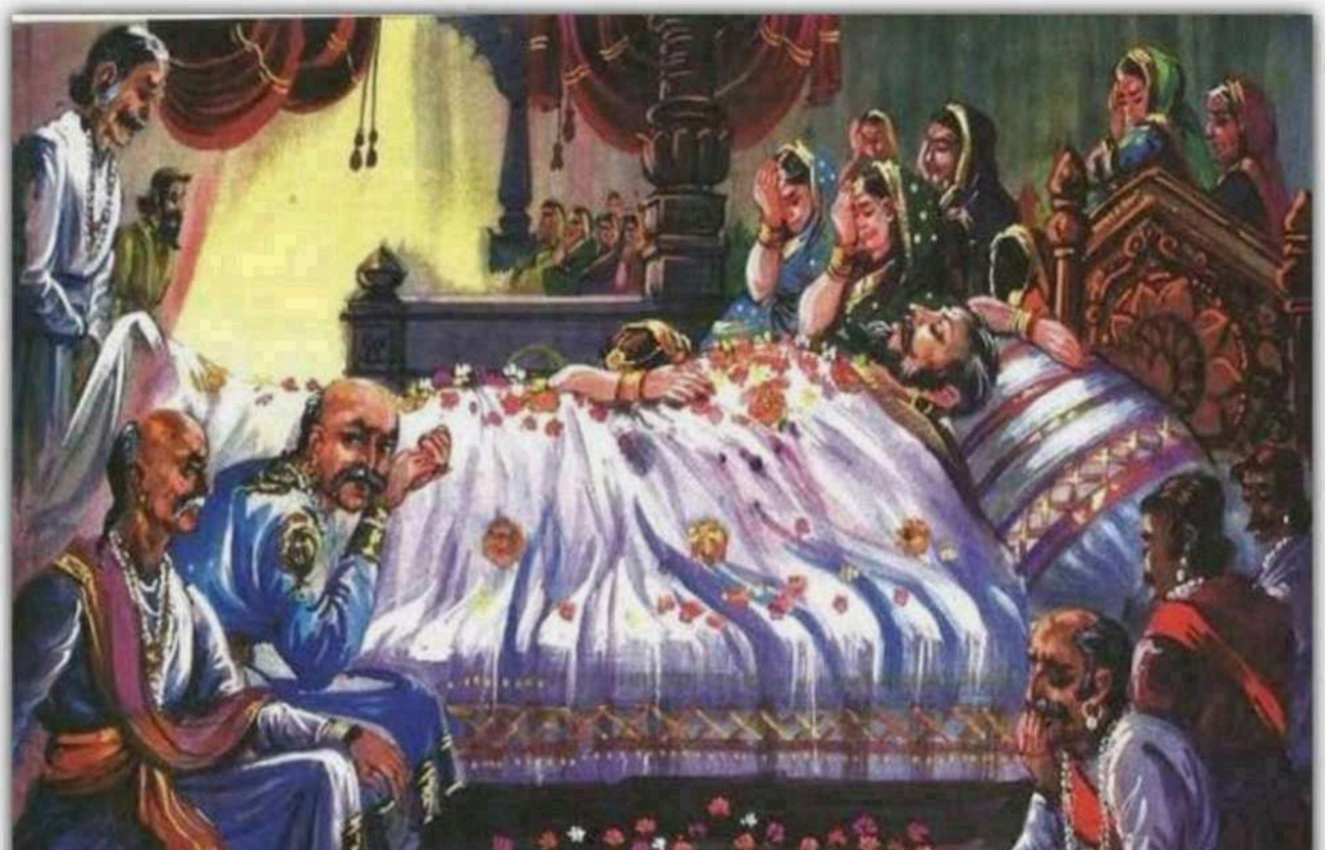
• दक्षिण दिग्विजय


भा
र
कृष्णा नदी
श्रीशैलम
कोल्हापूर
बेळगाव
बल्लारी
जिंजी
पुदुच्चेरी (पाँडि
देवनापट्टण
चिदंबरम
कांची
मद्रास
श्रीलंका
किलोमीटर

• दक्षिण दिग्विजय

• *शिवराय का स्वर्गवास :-*

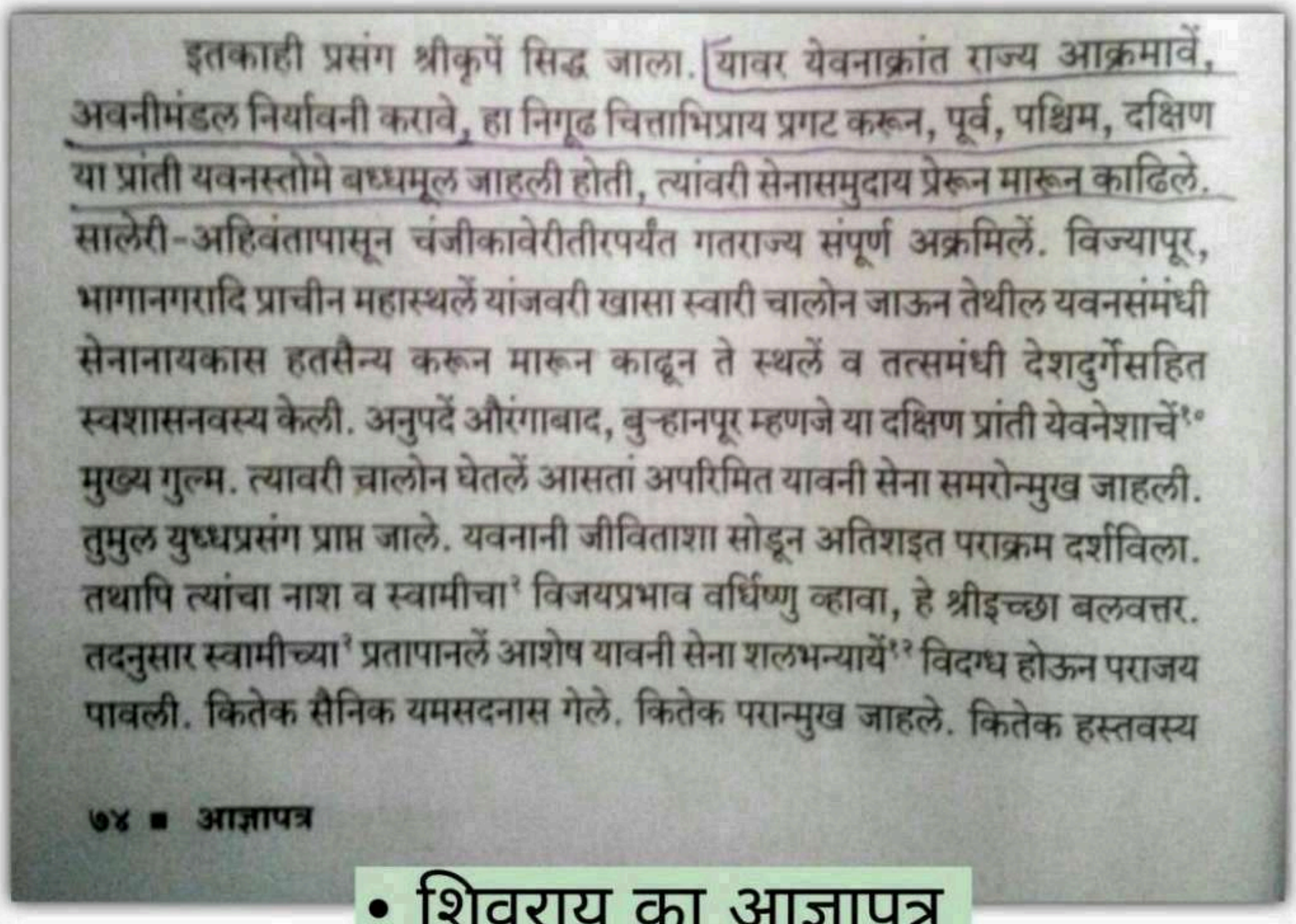
ऐसे तो वे दक्षिण दिग्विजय पर जाने से पहले भी बीमार थे , मगर जब शिवराय दक्षिण दिग्विजय से आए तब उनकी तबियत और खराब हो गई , और उनकी तबियत बिगड़ती चली गई और कोई कुछ न कर पाया , और आखिर ३ अप्रैल १६८० में छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वर्गवास हुआ , जो कि उनकी बीमारी से हुआ था (उनकी समाधि रायगढ़ में ही जगदीश्वर भगवान के मंदिर के पास बनाई गयी) , और उन्हें विष नहीं दिया गया था , शिवराय के बाद छत्रपति संभाजी महाराज का राज आया , जिन्होंने अपने पिता की धरोहर को संभाला ही , उल्टा उसे ओ बढ़ाया ... ।



१० – शिवराय के बारे में फैलाई गई कुछ मिथ्या

• क्या शिवराय पंथनिरपेक्ष (सेकुलर) थे ?

तो नहीं शिवराय कभी पंथनिरपेक्ष (सेकुलर) नहीं थे , वे कड़वत हिन्दू थे , इस लिए उन्ही के पुत्र छत्रपति संभाजी महाराज ने उनकी पुस्तक में शिवाजी महाराज को मलेच्छ नृसंहारक बताया है , और महाराष्ट्र में ३६५ किल्ले हैं , और उन सभी किलो को हिंदवी स्वराज्य में जोड़ा गया था , तो उन सारे किलो के पीछे कहानी है कि कैसे मावले वहां लड़े , तो उन सबके इतिहास में एक नाम भी मुसलमानों का नहीं है , सब हिंदू ही है तो वे सेकुलर कहा से हुए ... ।



इतकाही प्रसंग श्रीकृपें सिद्ध जाला. यावर येवनाक्रांत राज्य आक्रमावें, अवनीमंडल निर्यावनी करावे, हा निगूढ चित्ताभिप्राय प्रगट करून, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण या प्रांती यवनस्तोमे बध्धमूल जाहली होती, त्यांवरी सेनासमुदाय प्रेरून मारून काढिले. सालेरी-अहिवंतापासून चंजीकावेरीतीरपर्यंत गतराज्य संपूर्ण अक्रमिलें. विज्यापूर, भागानगरादि प्राचीन महास्थलें यांजवरी खासा स्वारी चालोन जाऊन तेथील यवनसंमंधी सेनानायकास हतसैन्य करून मारून काढून ते स्थलें व तत्समंधी देशदुर्गेसहित स्वशासनवस्य केली. अनुपदें औरंगाबाद, बुऱ्हानपूर म्हणजे या दक्षिण प्रांती येवनेशाचें[१०] मुख्य गुल्म. त्यावरी चालोन घेतलें आसतां अपरिमित यावनी सेना समरोन्मुख जाहली. तुमुल युध्धप्रसंग प्राप्त जाले. यवनानी जीविताशा सोडून अतिशइत पराक्रम दर्शविला. तथापि त्यांचा नाश व स्वामीचा[२] विजयप्रभाव वर्धिष्णु व्हावा, हे श्रीइच्छा बलवत्तर. तदनुसार स्वामीच्या[२] प्रतापानलें आशेष यावनी सेना शलभन्यायें[१२] विदग्ध होऊन पराजय पावली. कितेक सैनिक यमसदनास गेले. कितेक परान्मुख जाहले. कितेक हस्तवस्य

७४ ■ आज्ञापत्र

• शिवराय का आज्ञापत्र

यह छत्रपति शिवाजी महाराज के समय का आज्ञापत्र है , जो छत्रपति शिवाजी महाराज ने खुद लिखा था , इसमें शिवाजी महाराज ने लिखा है कि – “हमें यवनों (मुसलमानों) के विरुद्ध युद्ध करना है , और उन्हें हर दिशा से हराना है (उन्हें बाहर फेकना है) ।”

सारे जमेत येकवट करून आमच्या लोकांवरी पाठवून दिल्हेत. ते वालगोंडपुरास आले. तुमचे लोक चालोन आल्यावरी तुमच्या आमच्या लोकांत थोर झगडा जाला. तुमचे लोक पराजय पावले. प्रतापजी राजे व भिवजी राजे व शिवाजी दबीर येसे तिघे धरिले व कितियेक लोक मारिले; कितीयेक लोक पलोन दाणादाण होऊन गेले. येसा समाचार आइकिला. हें ऐकोन बहुत नवल येसें वाटलें कीं, कै० महाराज त्यांचे तुम्ही पुत्र, बहुत थोर लोक, येसे असोन कांहीं विचार करीत नाहीं. व धर्माधर्म विचारीत नाहीं. येसे असतां कस्टी व्हाल याचे नवल काये? तुम्ही म्हणाल कीं, काये विचार करावा? तरी येसा विचार करावा होता कीं, अधर्मेकडून तेरा वर्षे आपण सारें राज्य खादलें तें खादलें. आतां, अरधा वांटा मागतात तो त्यांचा त्याला द्यावा; आणि आपण सुखें रहावें. येसा विचार करावा होता. दुसरा विचार करावा होता कीं, श्रीदेवाची व श्रीची कृपा त्यावरी पूर्ण जाली आहे. दुस्ट तुर्कांला ते मारितात. आपल्या सैन्यांतहि तुरुक लोकच असतां जयें कैसा होतों; आणि तुरुक लोक कैसे वाचो पाहातात, हा विचार करावा होता. आणि युध्याचा प्रसंग पाडावा नव्हता. परंतु, दुर्योधनासारखी बुधी धरून युध्य केलें आणि लोक मारविले. जे जाले ते जालं. पुढें तरी हट न करणें. तेरा वर्षें तुम्ही सारे राज्य खादलें तें खादलें. याउपरी कितेक आमचे आम्ही घेतले असे. अरणी, बेंगळूर, कोल्हार, होसकोट, सिरलकटे व किरकोल जागे व चंजाऊर येसे जे जागे तुमचे हातीं उरले आहेती ते आमचे लोकांचे हातीं देणें. आणि नकद पैके व जडाव व हाती व घोडे यांचा अरधा वाटा देणें. येसा विचार करून आम्हासी संधी करणें. तुम्ही येसा संधी निर्मळपणें केलिया आम्ही आपणापासोन तुम्हाला तुंगभद्रे आलाड पनालेप्रांते तिन्ही लक्ष होनांची दौलत देऊन; अथवा

• शिवराय द्वारा अपने सौतेले भाई एकोजीराजा को लिखे गए पत्र

शिवराय द्वारा अपने सौतेले भाई एकोजीराजा को लिखे गए पत्र में उन्होंने कहा है – "सेना में तुर्कों (मुसलमानों) को रखकर विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है !!"

कोई भी ऐसा कागदपत्र या कोई ऐसा उल्लेख नहीं है , जो यह बताता हो कि शिवराय की सेना में इतने मुसलमान थे , असल में उनकी सेना में १% ही मुसलमान थे , वो भी उनके मावले नहीं थे (उनके सैनिक नहीं थे) , और न उन्होंने हिंदवी स्वराज्य के लिए खून नहीं बहाया , वो लोग असल में कूटनीतिक रूप में काम आते थे (और असल में वो पहले हिन्दू ही थे , मगर फिर उन्हें मुसलमान बना दिया गया) , और एक पुस्तक है , जिसका नाम 'म्लेंच्छक्षयदीक्षित शिवराय' है , इस पुस्तक में कई सारे उस समय के कागदपत्र है जो यह बताता है कि महाराज पंथनिरपेक्ष (सेकुलर) कभी नहीं थे और न उनकी सेना में बहुत सारे मुसलमान थे ।

निकोलाओ मनुची के एल्बम में मीर मुहम्मद का चित्र बहुत महत्वपूर्ण है , इस चित्र के आरंभ में दिया गया फ्रांसीसी वर्णन भी उतना ही महत्वपूर्ण है , उस फ्रांसीसी वर्णन का एक वाक्य उल्लेखनीय है , वाक्य इस प्रकार है –

"यह वह व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे अधिक मस्जिद गिराए"

इस पंक्ति का अर्थ है – "यह शिवाजी महाराज हैं , या यह उन शिवाजी महाराज का चित्र है जो मुस्लिम मस्जिदों के बाहर सूअरों का वध करते हैं (अर्थात शिवराय वह है मस्जिदों को नष्ट करते हैं)।"

और यह 'बिब्लियोथेक नेशनल (bibliotheque national)' में से उल्लेख है ... ।

• छत्रपति शिवाजी महाराज ने मस्जिदों को ध्वस्त किए इसके कई उल्लेख :-

त्वयेदं चंडराजस्य गाढमन्यदुरासदम् ।
अभिक्रम्य च विक्रम्य प्राज्यं राज्यं हृतं हठात् ॥ ५१ ॥

५१ शत्रूंना अगदीं अजिंक्य अशा चंद्रराजाच्या विस्तीर्ण राज्यावर हल्ला करून व पराक्रम करून तुम्हीं तें बलानें हरण केलें.

त्वया गृहीत्वा कल्याणं तथा भीमपुरीमपि ।
यवनानां महासिद्धिनिलयाः किल पातिताः ॥ ५२ ॥

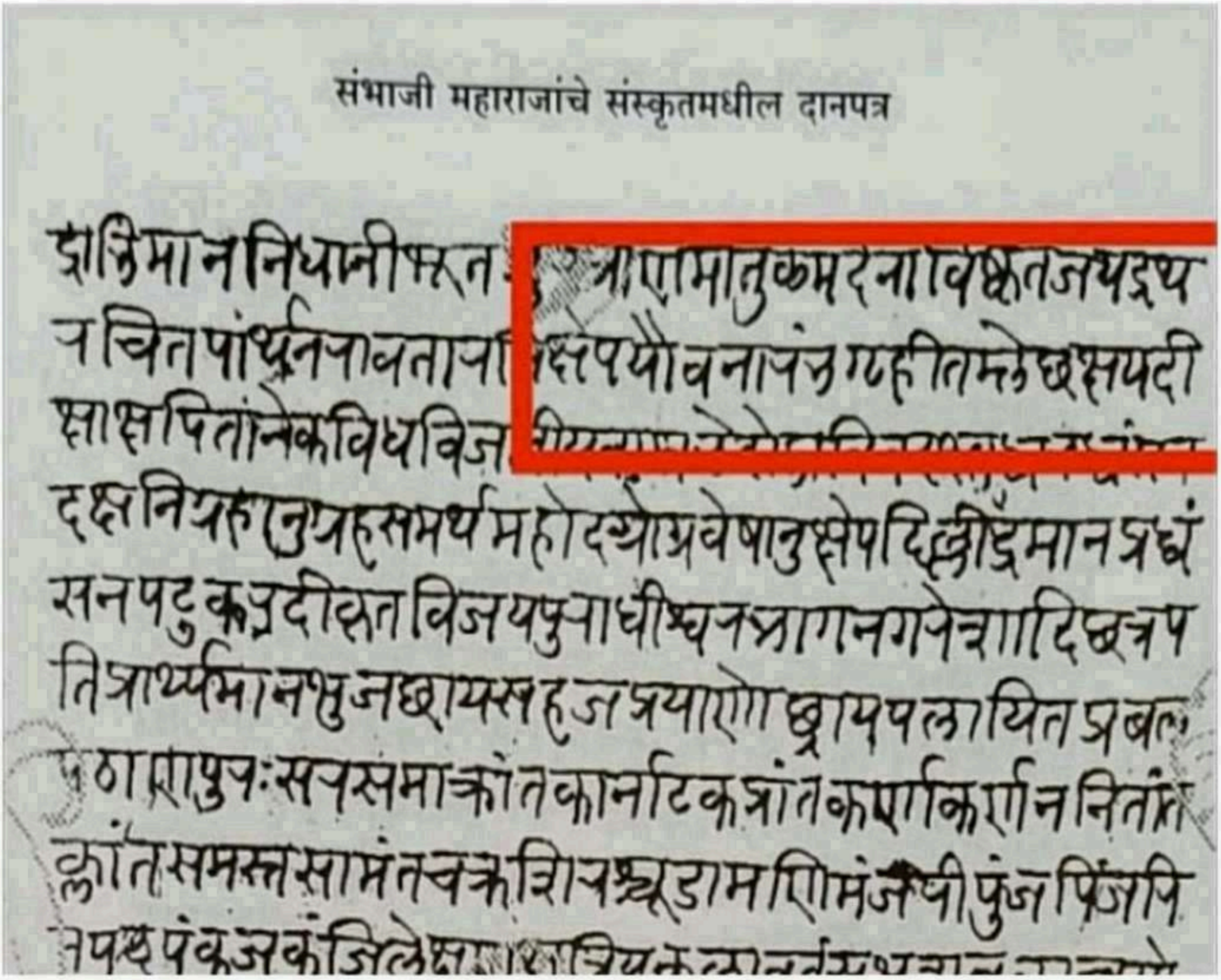
५२ कल्याण आणि भीमपुरी (भिवंडी) देखील घेऊन आपण यवनांच्या मशिदी जमीनदोस्त केल्या.

• संदर्भ : शिवभारत –कविंद्र परमानंद

these inviting Varieties; which is the only thing pleads for their continuance, *Seva Gi* as a *Gentu* being otherwise inclinable to raze them; yet purposely to pervert them from the use of the Donors, and Intention of the Founders, orders them to be converted into Granaries, especially those within the City.

• संदर्भ : न्यू एकाउंट ऑफ ईस्ट इंडिया एंड पर्शिया वॉल्यूम – १ (New account of East India and Persia volume – 1)

• छत्रपति संभाजी महाराज का छत्रपति शिवाजी महाराज के लिए किया गया वर्णन :-



"यौवनार्मभग्राहितमलेच्छक्षायदीक्षा"

"यौवनारम्भ (यौवन+आरम्भ) का अर्थ है युवावस्था के आरम्भ में और छोटी आयु में ही , जिन्होंने मुसलमानों के विनाश में दीक्षा ले ली हो" - यह शंभू राजे ने शिवराय के लिए कहा था , और इससे आप सभी को पता चल गया होगा कि शिवराय न तो पंथनिरपेक्ष थे न उनकी सेना में मुसलमान थे ।

• हेनरी का शिवराय को पत्र :-

(4)

F. R. Rajapur p. 109. } HENRY REVINGTON TO SIVAJI { Dated Rajapore 13 Feb. 1659/60.

To Sevagy, Generall of the Hendoo Forces.

How much freindshipp the English have promised to act for you against Danda Rajapore Castle your servants Dorogy etc. wee beleive hath informd you; but how much injury wee have recived from them wee are ashamed to tell you. Only thus much bee pleased to understand: that because wee would not take the jounkes lying in Rajapore River, and bee enemies to those who were our freinds therefore hath our broker and one Englishman

डांडा राजापुरी के एक अंग्रेज़ अधिकारी हेनरी रेविंगटन ने १३ फ़रवरी १६६० को छत्रपति शिवाजी महाराज को एक पत्र लिखा था (जो आप देख सकते हैं) उस पत्र में उन्होंने राजापुरी से पकड़े गए अंग्रेज़ सैनिकों की रिहाई की माँग की , इसमें भी खास बात यह है कि उन्होंने पत्र की शुरुआत महाराज को “हिंदू सेना के सेनापति” के नाम से की थी , और यह अंग्रेज़ भी समझ गए , मगर हम नहीं समझ पाए ।



गोवा के हडकोलन प्रांत का शिवलालेख

गोवा के हडकोलन प्रांत के अंत्रुज में एक शिलालेख है , यह शिलालेख शंभू राजे द्वारा बनवाया गया था , इस शिलालेख में लिखा है कि "अब यह हिंदू राज्य में है" , यह उनकी हिंदुत्व की अवधारणा को बताते है जो शिवराय की धरोहर है , तो असल में किस्सा यह था कि – छत्रपति संभाजी महाराज ने २२ मार्च १६८८ को फोंडा के अधिकारी धर्मजी नागनाथ को सूचित किया कि अब यह "हिंदू राज्य" बन गया है , इसलिए यहाँ सभी कर तुरंत बंद कर दिए जाएँ , और ऐसा ही हुआ तो इसका यह शिलालेख था , तो इन सब प्रमाणों से आप समझ ही गए होंगे कि दोनों महाराज १% भी पंथनिरपेक्ष नहीं थे , बल्कि वह उग्र हिंदू थे ।

• विनायक दामोदर सावरकर जी और छत्रपति संभाजी महाराज :–

कई लोग यह बताते है कि सावरकर जी ने संभाजी महाराज के लिए बुरा लिखा , पर तब इस विषय में संशोधन नहीं किया गया था यह किसी ने नहीं बताया , और सावरकर जी के समय यह मानना था कि संभाजी महाराज ऐसे नशे में थे , क्यों कि उन्हें बदनाम किया जा सके , मगर सावरकर जी ने छत्रपति संभाजी महाराज के लिए और क्या कहा (जो अच्छी बात है) वो बताया नहीं कभी , तो उन्होंने कहा अपनी पुस्तक में ये भी था :–

> ानांच्या धर्मविडाला ते बळी पडले पण त्यांनी हिंदुजातीला अक्षय्य उज्
> दिली! ह्या एका आत्यंतिक आत्मयज्ञाच्या कृत्याने संभाजीमहा
> धर्माचे - हिंदु पुनरुज्जिवनाच्या पवित्र चळवळीचे - आत्मस्वरूप जसे
> दाखविले तसे दुसरे कशानेही दाखविणे शक्य नव्हते! लुटारुंचा पुढारी
> ा रीतीने वागला असता. शिवाजीमहाराजांनी संपादिलेली सर्व भौतिक
> नष्ट झाली होती; त्यांचा द्रव्यकोश रिता पडला होता; त्यांचे गड उ

यहां सावरकर जी खुद शंभू राजे के लिए अच्छी बाते लिखते है (यह किसी ने बताया नहीं) , तो वास्तविकता यह है कि 'शिवपुत्र संभाजी' - कमल गोखले , जब इस पुस्तक को लिखा जा रहा था तो तब जो कमल गोखले ने खुद सावरकर जी से भेट की और फिर वो जैसा आज पॉडकास्ट होता है वैसे उन्होंने सावरकर जी से जो बाते हुई वो एक पुस्तक में लिखा , जिसका नाम "सावरकांशी सुखसंवाद" है , इस पुस्तक में सावरकर जी ने संभाजी महाराज के लिए जो कहा वो भी लिखा है , तो वहां सावरकर जी उनसे कहते हैं कि –

"आज के युग में संभाजी महाराज को नशे में धुत्त बताया गया है , लेकिन मेरे हिसाब से ये हो नहीं सकता , क्यों कि अगर वो असल में ऐसे होते तो छत्रपति शिवाजी महाराज के बाद उनकी विरासत में इतना बड़ा हिंदवी स्वराज्य नहीं चला पाते" , तो इस लिए हमें पूरी जानकारी रखनी चाहिए ।

आहेच आहे; पण हे हेतूही असावे असे वाटते. झाली ही आपल्या इतिहासा-
तली एक अत्यंत वाईट व लाजिरवाणी गोष्ट झाली यात शंकाच नाही. ते
काहीही असले तरी, हे जे धैर्य नि शौर्य राजांनी दाखवले ते काही एखाद्या
गोम्यागणेशाचे काम नाही, हे विसरू नको. संभाजी जर दारुडा असता आणि
इतिहासात आपण वाचतो तितका स्त्रीलंपट असता तर हे धैर्य त्याने दाखविले
असते असे वाटत नाही. बाई आणि बाटली बाळगणाऱ्या व्यसनी माणसाच्या
हातून हिंदूंच्या इतिहासात चिरंतन स्थान मिळावे असे दिव्य होणारच नाही.,
उघड्या डोळ्यांनी हौतात्म्याचा स्वीकार करणे हे येरागबाळाचे कामच नाही.'
" हेच विचार माझ्याही मनात येत असत; म्हणून तर मी संभाजी महा-

It is; But this also seems to be the intention. There is no doubt that this has become a very bad and shameful thing in our history. Be that as it may, do not forget that the courage and bravery shown by these kings is not the work of some Gomyaganesh. If Sambhaji had been a drunkard and a womanizer as we read in history, I don't think he would have shown this courage. It would not be divine that a woman and a bottle-carrying addict should get an eternal place in Hindu history. It is not the job of a fool to accept martyrdom with open eyes.'
"The same thoughts used to cross my mind; So I Sambhaji Maha-

११ – छत्रपति संभाजी महाराज

शिवराय ने बहारी आक्रांताओं को हराया और फिर उनसे सारे दुश्मन डरने लगे और इसी कारण औरंगज़ेब शिवाजी महाराज के काल में कभी महाराष्ट्र (दक्खन) में नही आया , फिर शिवाजी महाराज के मृत्यु के बाद औरंगजेब महाराष्ट्र जीतने आ गया था , लेकिन उसका सामना उनसे होने वाला था –

“जिन्होंने १३ वर्ष की आयु में १३ भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था , वह ताकतवर और बुद्धिमान राजा थे , जिन्होंने छोटी सी बाल आयु के तीरंदाजी , तलवारबाजी , घुड़सवारी जैसे अदभुत कला सीख ली थी , और उन्होंने २३ साल की आयु में औरंगजेब को हराया था और वो भी एक बार नही बार-बार , बार-बार नही लगातार , जिनकी छोटी से सेना मुगलों की विशालकाय सेना को काट कर फेक देती थी , जिन्होंने ९ साल तक बार-बार औरंगजेब की सेना को महाराष्ट्र में नचाया था , और औरंगज़ेब की ८ लाख की सेना भी इनसे आमने-सामने के युद्ध में हार गई थी , जी हा मैं बात कर रहा हु शेर के छावे की , यानी की 'छत्रपती शिवाजी महाराज' के पुत्र छत्रपति संभाजी महाराज ।

शंभू राजे का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा १७१४ , विक्रम संवत (१४ मई १६५७) , और शिवराय की मृत्यु के बाद औरंगज़ेब महाराष्ट्र में आया था हिंदवी स्वराज्य को खत्म करने , मगर जैसा की मैंने आपको बताया की , संभाजी महराज ने औरंगजेब की ८ लाख की सेना को खदेड़ दिया था , और छत्रपती संभाजी महाराज ने कभी कोई युद्ध हरा नहीं था , और शंभू राजे ने अपनी पूरे आयुष में २००+ से भी जुड़ा युद्ध लड़े थे , और उन्होंने उन २००+ युद्धों में विजय ही प्राप्त की थी ,....

और औरंगजेब छत्रपती संभाजी महाराज के सामने कभी जीता नही , फिर औरंगजब हक्का-बक्का रह गया था छत्रपती संभाजी महाराज के पराक्रम देख कर , क्यों कि शंभू राजे ने पहले बुरहानपुर लूटा था (जो तब लूटना असंभव ही था) , और उन्होंने गोवा में पुर्तगालियों को खदेड़ा और यहां तक उन्होंने पुर्तगालियों को बहुत बुरी तरह हराया और उन्हें मारा , इसी तरह उन्होंने औरंगज़ेब को भी बड़ी बुरी तरह हराया , फिर औरंगजेब को पता चल गया था की , जब तक छत्रपती संभाजी महाराज जीवंत है , तब तक वो दक्खन पर कब्जा नहीं कर पाएगा , और उसे ऐसा भी लगा की , संभाजी महाराज ने और राज किया तो वह औरंगजेब की मुगल सल्तनत को भारत से खदेड़ देंगे , और यह तो सत्य ही था ।

फिर औरंगजेब ने सोचा की संभाजी महाराज को युद्ध में हरना असंभव है , इस लिए फिर उसने एक और चाल चलने की सोची तो वही पर छत्रपति संभाजी महाराज के साले थे 'गणोजी शिर्के' , जो की संभाजी राजे के पत्नी येसूबाई के भाई थे , तो हुआ यह की , गणोजी शिर्के ने शंभू राजे से 'वैतनदारी' मांगी लेकिन शंभू राजे ने वैतनदारी देने से मना कर दिया , और यह बात औरंगज़ेब को पता चल गई थी , तो फिर औरंगज़ेब ने गणोजी शिर्के को बेईमान कर दिया और फिर शिर्के औरंगज़ेब के लिए कार्य करने लगा फिर १६८९ ईसवी का समय आ या, जब गणोजी शिर्के ने छत्रपती संभाजी महाराज को धोका दिया था , तो हुआ यह की शंभू राजे और उनके मित्र कवि कलश (जो उनके सलाहकार भी थे) तो वो दोनो एक गुप्त बैठक में संगमेश्वर जा रहे थे , और वही गणोजी शिर्के ने औरंगजेब को बता दिया की वो लोग कहा जा रहे है , और फिर यह खबर औरंगज़ेब को मिलते ही उसने अपनी मामूली सी २००० की सेना भिजवाई उन्हे पकड़ने के लिए , पर ८ लाख लोग शंभू राजे को हरा नहीं पाए , पर २ हजार से हरना पड़ा था , क्यों की धोखा दिया गया था , यानी गणोजी शिर्के बेईमान हो गए थे , और इस लिए हम यह कहे सकते है की "हमे तो गणोजी शिर्के ने लुटा , औरंगजेब में कहा दम था , अपनी कश्ती वहा डूबी जहा पानी कम था ।"

उसके बाद २००० की सेना वहा पहुंची , और वहा जाकर उन्होंने शंभू राजे और कवि कलश को धोखे से पकड़ा , और अभी भी याद रखना की "८ लाख लोग मिलकर इनसे नही लड़ सके, पर धोखे से उन्हे पकड़ा गया ।"

औरंगजेब संभाजी महाराज से खुन्नस खाया हुआ था , और इस लिए उसने कवि कलश और संभाजी महाराज को ऊट से उल्टा टांग दिया था , और उल्टा टांगने के बाद पूरे शहर में उन्हे घुमाया गया , और उन्हें धर्मवीर गढ़ ले जाया गया , और वहा उनपर बहुत अत्याचार हुए , बहुत मार-पीट हुई , और फिर औरंगजब ने उसके लोगो से कहा की "इनपर मूत्र त्यागो , और इनपर पत्थर फेक-फेक कर मारो", और फिर लोगों ने वैसा ही किया ।

उसके बाद संभाजी महाराज और कवि कलश को बंदीगृह में डाला गया था , और औरंगजेब ने उन्हे जिंदा रखने की ३ शर्ते रखी , औरंगज़ेब ने कहा था कि "(१) मराठा साम्राज्य मेरे हवाले करदो , (२) जो भी सोना है , जो धन-संपत्ति छुपाई है वो मुझे दे दो , (३) अपना धर्म परिवर्तन करके मुसलमान बन जाओ", और अगर संभाजी महराज यह शर्ते स्वीकार कर लेते , तो फिर औरंगजेब संभाजी महाराज को 'सहायक राजकुमार (ट्रिब्यूटरी प्रिंस)' बना देता , पर तब भी छत्रपति संभाजी महाराज और कवि कलश में एक चुटकी भर डर नही था , और उन्होंने यह शर्त स्वीकार नही की , और फिर शंभू राजे औरंगजेब से कहते है "मैं मरना स्वीकार करूंगा , पर सनातन धर्म नही छोडूंगा , १००० बार मर कर भी सनातन धर्म में ही जन्म लूंगा , पर कभी सनातन धर्म नही छोडूंगा ।"

फिर छत्रपति संभाजी महाराज और कवि कलश ने अन्न-जल का त्याग कर दिया था, और फिर वह दोनो शारीर को लेकर सुन्न हो गए थे , फिर औरंगज़ेब के लोगों ने संभाजी महाराज और कवि कलश के नाखून उखाड़ने शुरू कर दिए , और वो उनकी आंखों में मिर्च डालते चले गए ,...

उसके बाद औरंगज़ेब ने आदेश दिया की जलती सलाखे संभाजी महाराज और कवि कलश की आखों में डाल दो , फिर जलती सलाखों से उन दोनो की आंख फोड़ी गई , फिर औरंगज़ेब ने वापिस से वह ३ शर्तों के बारे में बात की , लेकिन शंभू राजे ने इसका उत्तर नही दिया , और उन दोनो को पीढ़ा तो बहुत हुई पर वो झुके नहीं , फिर मुगलों ने संभाजी महराज और कवि कलश के हाथों की उंगलियां काटी , फिर पैर की उंगली काटी , फिर उनका पैर कटा , फिर उनका हाथ कटा , फिर वो लोग उनके बालों को नोचते चले गए , उसके बाद वो लोग उन दोनो की खाल उतारने लगे , और यह सब करने से पहले हर बार औरंगजेब वो ३ शर्ते बोलता था , परंतु संभाजी महराज यह सब होने के बाद भी कुछ बोले नहीं बोले (बस ईश्वर का नाम लेते रहे) , और यह सब ४० दिनों तक चलता रहा था , फिर आखिर में औरंगजेब छत्रपति संभाजी महाराज से बोला की - "मैं तुम्हारे आगे हार मान गया संभाजी , मेरे ४ बेटे है , मगर मेरा एक भी बेटा तेरे जैसा होता , तो पूरे हिन्दुस्तान को हम मुगल सल्तनत बना देते", और यह बोलने के बाद औरंगजेब अपने सिपाहियों को संभाजी महाराज और कवि कलश को काटने का आदेश देता है , फिर उसकी सेना उन दोनो के टुकड़े-टुकड़े कर देती है , फिर मुगलों ने छत्रपति संभाजी महाराज और कवि कलश के शरीर की टुकड़ टुकड़े कर दिए , और वो छोटे-छोटे टुकड़ों को नदी में फिकवा दिए , फिर छत्रपति संभाजी महराज के कटे हुए शरीर के टुकडे मराठों को मिले , और फिर संभाजी महाराज के कटे हुए शरीर को सूई-धागे से सील कर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया ।

फिर औरंगजेब ने सोचा की छत्रपती संभाजी महराज के मरने के बाद मराठा साम्राज्य खत्म हो जाएगा , लेकिन हुआ इसका उल्टा , फिर मराठा साम्राज्य का हर घर जागरूक हो गए , और फिर हर स्त्रीयों मराठा सेना में आ गई , और उसके बाद देखते ही देखते मराठा सेना ३ लाख से ज्यादा हो गई थी , और फिर क्रांति हुई थी ।

१२ – शंभू राजे पर लगाए गए गलत आरोप

कमलाबाई , मुंजला बाई , गोदावरी और हंसबाई के छत्रपति संभाजी महाराज के साथ संबंध थे ऐसा झूठ प्रसारित किया जाता है जबकी ये सारी कल्पना घटना थी , तो चलिए इस सत्य को जानते हैं – 'बालाजी अवजी चिटनीस' को उनके हिंदवी स्वराज्य के विरुद्ध गुनहा के लिए जब संभाजी महाराज ने उनको हाथी के जोड़े तले कुचल दिया इसका बदला लिया उनके पर पोते 'मल्हार रामराव चिटनिस' ने , इन्होने संभाजी महाराज के चित्र को बदनाम करने के लिए इन काल्पनिक कहानियों को बनाना शुरू किया , इसने संभाजी महाराज के साथ संबंध इन महिलाओं का बताया अपनी पुस्तक में (जो कि झूठ था) , और इसी के आधार पर आगे संभाजी महाराज के उप्पर पुस्तक और नाटक लिखे गए , और 'मोरेश्वर आत्माराम पठारे' में संभाजी महाराज पर पहला नाटक लिखा जिसने तुलसाबाई (कल्पनिक पत्र) को बनाया , और याही तुलसाबाई 'निबंधशाही' नाटक में भी थी , जहां इस नाटक के प्रस्तुति में लिखा गया है कि "इस नाटक में तुलसा नाम की भूमिका पूर्ण कल्पना है , इसका इतिहास से कोई संबंध नहीं है", मगर नाटक में इसका उल्टा ही दिखाया गया और सब से संभाजी महाराज के चित्र पर प्रश्न खड़े किए गए जबकी इन स्त्रीयो का कोई अस्तित्व ही नहीं था और शभू राजे केवल उनकी पत्नी येसुबाई से प्रेम करते थे यही सत्य था , और इसी का प्रमाण शिवचरित्र , शिवभारत , शिवपुत्र संभाजी जैसे असल ऐतिहासिक पुस्तकों में मिलता है , जो ये बताती है कि वो स्त्री कल्पना थी और संभाजी महाराज केवल येसुबाई के लिए एकनिष्ठा थे ।

६ जून १६७४ को शिवाजी महाराज गद्दी पर बैठे और छत्रपति बने , जब उन्होंने संभाजी महाराज को युवराज के रूप में अभिषिक्त किया , और ९ सितंबर १६५७ को अंग्रेज अधिकारी 'सैमुअल ऑस्टिन' शिवाजी महाराज से मिलने आया , उस समय संभाजी राजे छत्रपति के बगल में बैठे थे , अर्थात वे राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से शामिल थे और छत्रपति से शिक्षा प्राप्त कर रहे थे , अर्थात् तब यांनी १७ वर्ष की आयु तक शंभुराज के विरुद्ध एक भी अपशब्द या आरोप नहीं लगाया गया जिससे उनका चरित्र हनन होता हो , इसके विपरीत , एबे कैरी जैसे एक फ्रांसीसी यात्री ने शंभू राजे की प्रशंसा की , और उनका कहना था कि शिवाजी महाराज ने अपने पुत्र संभाजी महाराज को दस हजार वीर सैनिकों की एक टुकड़ी दी थी , जिसका यह उल्लेख किया गया –

He formed a body of ten thousand of the bravest of (his) men, and placed his son at their head. He was a young Prince, full of courage and worthy of his father's reputation. He had accompanied him in the course of his conquests and had been trained under so good a [20] master in the profession of war, wherein he could vie with the oldest captains. He was well built, and his beauty made his virtue still more bright and loveable. His soldiers regarded him as much as Sevagy himself and made no difference between the father and the son. They liked to fight under the latter and took pleasure in according to him the honour for all that was accomplished.

तो इसमें लिखा था कि – संभाजी महाराज , यद्यपि युवा है , अपने पिता की प्रसिद्धि के योग्य एक बहादुर और साहसी योद्धा थे , और शिवाजी महाराज जैसे कुशल योद्धा के साथ रहने के कारण , संभाजी महाराज युद्ध कला में प्रशिक्षित हैं और इस हद तक तैयार हैं कि वे सबसे अच्छे पुराने सेनापतियों से भी मुकाबला कर सकते हैं , वह मजबूत कद-काठी और सुंदर है , सैनिक उन्हें प्यार करते हैं और उन्हें शिवाजी महाराज की तरह समान सम्मान देते थे , अंतर केवल इतना है कि ये सैनिक संभाजी महाराज के अधीन लड़ने में विशेष में अति आनंद अनुभव करते है ।

तो इनके जैसे कई और यात्रिक शंभु राजे की प्रशंसा करते थे , तो वास्तव में यह अपमान का झूठ कैसे शुरू हुआ? , तो जनवरी १६७६ में शिवराय का स्वास्थ्य बिगड़ गया था , तब महाराज को सिर में असहनीय दर्द हो रहा था और इस समय , तभी महाराज के दुश्मनों ने साजिश रची , और यह कोई और नहीं बल्कि अंग्रेज थे , इन्होंने शंभू राजे के चरित्र को गलत दिखाया , ताकि इससे दोनों में मतभेद हो और ये हिंदवी स्वराज्य खत्म हो , इस लिए अंग्रेजों १७ जनवरी १६७६ ने एक पत्र में कहा कि “शंभू राजे का एक प्रमुख ब्राह्मण की बेटी के साथ संबंध था , शंभू राजे ने व्यभिचार किया और उन्हें उससे मिलने के लिए किले के नीचे जाना पड़ा , अर्थात संभाजी महाराज ने उसे नहीं छोड़ा" , और यही उन लोगों ने यह अफवाह फैलाई कि शिवराय को विष दिया गया , मगर तब शिवाजी महाराज बीमार थे और उनकी बीमारी मुख्य रूप से उनके सिर में भयानक ट्यूमर के कारण थी क्योंकि उनका मस्तिष्क को इन लगातार युद्धों के कारण आराम नहीं मिलता था , और अंग्रेजों ने शिवाजी महाराज की बीमारी के कारण जंजीरा के सिद्धि को गले लगाकर संभाजी महाराज को और बदनाम करना शुरू कर दिया था , जबकि यह सब झूठ था ।

शिवराय द्वारा स्थापित हिंदवी स्वराज्य को छत्रपति संभाजी महाराज ने अपने परिश्रम से बढ़ाया , १६८१ में औरंगजेब के दक्षिण में आकर स्वराज्य पर आक्रमण करने के बाद, युद्धभूमि में दिन-रात अपना रक्त बहाने वाले छत्रपति संभाजी महाराज को भोग-विलास के लिए समय कहाँ मिलता?? (ऐसा ही 'बाजी राव पेशवा जी' का था , उनका ४० वर्षों का आयुष था उसमें भी उन्होंने १५०+ युद्ध लड़े और एक भी बिना हारे , ऊपर से मस्तानी उनके जीवन के कुछ आखिरी वर्षों में आई उसमें भी उनकी मुहिम के कारण वो परिवार को इतना समय नहीं दी पाए , पर कुछ फिल्मों में बताया गया कि वे मस्तानी के प्रेम में पूरे पागल हो चुके थे , जो कि गलत था) लेकिन इस पर विचार किए बिना, उनके शत्रुओं ने युद्धभूमि में इस अपराजित योद्धा को बदनाम करने और उसके हाथों लज्जित करने का निरंतर प्रयास किया , और दुर्भाग्य से आज भी जब छत्रपति संभाजी महाराज की बदनामी के कारण महाराष्ट्र में कोई विवाद उत्पन्न होता है , तो हम इन अंग्रेज-मुगलों और इन जैसे लोगों की ओर से आँख बनाकर आपस में लड़ते रहते हैं , मगर छत्रपति संभाजी महाराज के बलिदान से प्रज्वलित महाराष्ट्र ने क्रूर औरंगजेब को इसी महाराष्ट्र में दफना दिया यह नहीं बताते ।

इस लिए हमें महाराज के इतिहास के बारे प्रमाणित पुस्तके पढ़नी चाहिए ,...

- शिवराय के लिए पुस्तक :-

(१) श्री राजा शिवछत्रपति – गजानन भास्कर महेंदले

(२) छत्रपति शिवाजी महाराज – वासुदेव सिताराम बेंद्रे

(३) राजा शिवछत्रपति - बाबासाहेब पुरंदरे

(४) शिव भरत – कवि परमानन्द

(५) हेनरी ऑक्सेंडेन यात्रा वृतांत / दूसरे यात्रा वृतांत

• शंभू राजे पर पुस्तक :-

(1) शिवपुत्र संभाजी - कमल गोखले

(2) राजा शंभू छत्रपति - विजयराव देशमुख

(3) ज्वलज्वलनतेजस संभाजीराजा डॉ. सदाशिव

• *शिवराय के पूर्वज कौन थे :-*

छत्रपति शिवाजी महाराज भोसले वंश के सूर्यवंशी क्षत्रिय मराठा थे , और महाराष्ट्र में निकुंभ , अश्मक जैसे कई सूर्यवंशी साम्राज्य स्थापित हुए थे , अश्मक १६ महाजनपदों में से एक महाजनपद था , जहाँ श्री राम के वंशज हुए , उन्हें भोसले उपनाम भस्वत्कुलम से मिला , इसका एक शिलालेख भी है , और राजपूतों के अनुसार , भोसले को यह उपनाम सिसोदिया राजवंश में भोसजी से मिला , लेकिन यह असत्य है ... ।



१३ – शंभू राजे के बाद का हिंदवी स्वराज्य

शंभू राजे की मृत्यु के बाद ९ महीने तक रायगढ़ को महारानी येसुबाई ने बचाया , और तब उन्होंने खुद राजाराम महाराज को छत्रापति बनाया और फिर राजाराम महाराज रायगढ़ से दूर चले गए क्यों कि वो रायगढ़ में रहते तो उनके प्राणों को खतरा होता , मगर फिर वो गढ़ बचा नहीं पाईं और फिर रायगढ़ मुगलों को देना पड़ा , जिसके बाद महारानी येसुबाई और उनके पुत्र शाहू महाराज को कैद हुई , मगर फिर राजाराम महाराज ने अपने स्वराज्य की लड़ाई लड़ी और उन्होंने मुगलों से भी लड़ाई लड़ी , पर फिर १७०० में राजाराम महाराज का निधन हुआ , इसके बाद उनकी पत्नी महारानी तारारानी बाई ने हिंदवी स्वराज्य को संभाला ,और तब मराठा बहुत आक्रमक हो गए थे और तब मराठे औरंगज़ेब पर कभी भी आक्रमण कर देते थे , तब संताजी बार बार औरंगज़ेब की छावनी में जाकर लूट करके आते थे , और फिर औरंगज़ेब को मराठों ने जहरीला खंजर से वार किया , जिससे औरंगज़ेब ३ महीने के बाद कुत्ते की मौत मरा था ।

संताजी और धनाजी दोनों भाई थे , जो स्वराज्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे , ये दोनों भाई दिल्ली तक लूट कर आ जाते थे , और ये औरंगज़ेब की छावनियों में उसी बड़ी आसानी से हरा देते थे और लूट कर निकल जाते थे , उन दिनों भाइयों का एक अलग ही दबदबा रहा , मगर वैचारिक मतभेदों के कारण दोनों भाई अलग हो गए , और इससे हिंदवी स्वराज्य को कुछ मामलों में नुकसान भी पहुंचा मगर सफल शासक के कारण हिंदवी स्वराज्य और टीका था ।

उस समय नौसेना को भी पुनः शक्तिशाली किया गया , और इसमें कान्होजी आंग्रे जी का बड़ा योगदान था , क्यों कि तब के हिंदवी स्वराज्य के एक प्रसिद्ध नौसेना प्रमुख यही थे , जिन्हें नौसेनाध्यक्ष की उपाधि दी गई थी , उन्होंने पश्चिमी तट पर मराठा नौसेना को मजबूत किया और ब्रिटिश , पुर्तगाली , और डच जहाजों के विरुद्ध सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी , और तब हिंदवी स्वराज्य ने मुगल सल्तनत को तो खदेड़ ही दिया , और तब अंग्रेजों को और पुर्तगालियों को भी ऐसे हराया था ।

महारानी ताराराानी बाई का इस क्रांति में बड़ा हाथ था , और उनकी वजह से तब हिंदवी स्वराज्य बड़ा हो गया था , मगर तब शाहू महाराज भी बड़े हो गए थे जो छत्रपति पद के दावेदार थे , मगर तब ताराराानी बाई को छत्रपति बनाना था अपने पुत्र को जो छोटे थे , इस वजह से छत्रपति बनने के योग्य शाहू महाराज ही थे , मगर ये ताराराानी बाई ने नहीं माना , इस वजह से दोनों में युद्ध भी हुआ , और तब बालाजी विश्वनाथ जी (पेशवा) खुद शाहू महाराज के साथ आए , और फिर आखिर शाहू महाराज जीते , और तब कोल्हापुर में ताराराानी बाई को राज करने दिया गया , और यहां सातारा से शाहू महाराज को छत्रपति बनकर राज कराया गया , तो शाहू महाराज ने भी अपने शासनकाल में कई मंदिर बनवाए , युद्ध किए , हिंदवी स्वराज्य को रखा उन्होंने और बालाजी विश्वनाथ की सलाह से उन्होंने हिंदवी स्वराज्य को और बढ़ा किया , फिर शाहू महाराज के बाद जो छत्रपति आए वे इतने सक्षम नहीं थे , इस वजह से सत्ता पेशवाओं के हाथ में आ गई और तब पेशवाशाही हो गई ।

बाजीराव प्रथम , जिन्हें बाजीराव बल्लाल के नाम से भी जाना जाता है , वे मराठा साम्राज्य के सातवें पेशवा (प्रधानमंत्री) थे , वे अपने सैन्य नेतृत्व और भारतीय उपमहाद्वीप में मराठा साम्राज्य के प्रभाव के विस्तार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए प्रसिद्ध है , और १९ वर्ष की आयु में , अपने पिता की मृत्यु के बाद , छत्रपति शाहू महाराज ने उन्हें पेशवा नियुक्त किया , बाजीराव जी को संभाजी महाराज के बाद मराठा इतिहास के सबसे करिश्माई और गतिशील नेताओं में से एक माना जाता है , बाजीराव प्रथम एक प्रतिभाशाली सैन्य रणनीतिकार और रणनीतिकार थे , और उन्होंने इतने युद्ध लड़ मगर वो भी संभाजी महाराज की तरह एक भी युद्ध हारे नहीं , और दक्कन क्षेत्र में , भाग्यनगर (हैदराबाद) का निज़ाम एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा , और १७२५ में फ़तेह सिंह भोंसले के नेतृत्व में मराठों द्वारा कर्नाटक पर आक्रमण के बाद , जो निज़ाम के प्रभाव में आ गया था , दोनों राज्यों के बीच संबंध बिगड़ गए , इन आक्रमणों से भयभीत होकर , निज़ाम ने १७१८–१७१९ की मुग़ल-मराठा संधि द्वारा दक्कन में मराठों को दिए गए कर अधिकारों को चुनौती देने का निर्णय लिया और पुणे पर आक्रमण कर दिया , इसके जवाब में बाजीराव ने निज़ाम के विरुद्ध एक अभियान चलाया , जिसमें पालखेड़ के युद्ध में निज़ाम को निर्णायक हार का सामना करना पड़ा , इस विजय ने दक्कन क्षेत्र में मराठों के अधिकार को मज़बूत किया और निज़ामों को अनिवार्य रूप से करदाता का दर्जा दे दिया , और बुंदेलखंड में , उन्होंने बुंदेला शासक छत्रसाल को मुग़ल घेराबंदी से बचाया और बुंदेलखंड को स्वतंत्रता दिलाई , कृतज्ञता स्वरूप , छत्रसाल ने अपने एक तिहाई क्षेत्र उन्हें दे दिए , १७२० के दशक के उत्तरार्ध में , बाजीराव ने गुजरात में मराठा कर अधिकारों का दावा किय , उन्होंने दभोई में विद्रोही त्रिम्बक राव दाभाड़े को हराया और १७३७ तक कर्णावती (अहमदाबाद) को छोड़कर पूरे प्रांत को मराठा राज्य में मिला लिया ,...

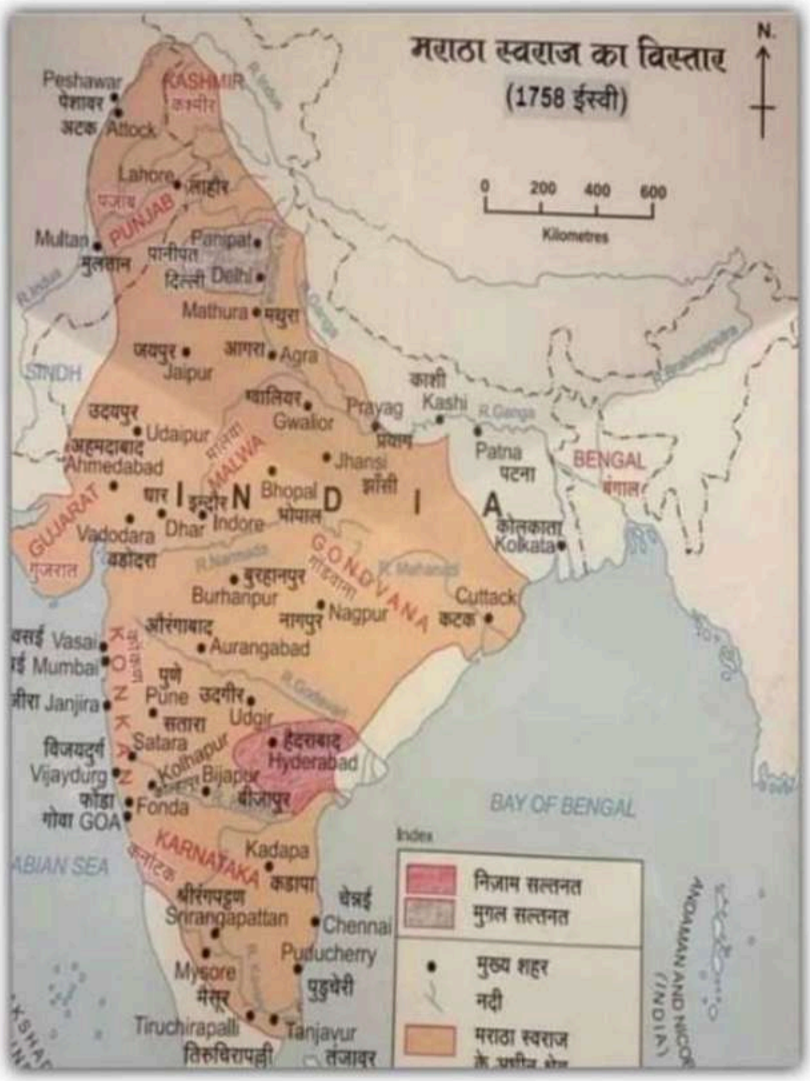
और उन्होंने राजपूत शासकों के साथ सफल कूटनीतिक अभियानों में भी भाग लिया , और उत्तर में मराठा स्थिति स्थापित करने भी वही गए , उन्हें दिल्ली पर आक्रमण (१७३७) के लिए उत्तरदायी बनाया , जिसे उनके सैन्य जीवन का चरम बिंदु कहा जा सकता है , और तब उन्होंने दिल्ली को लूटा और अपना राज्य वहां भी स्थापित किया , उन्होंने भोपाल के युद्ध (१७३७) में मुगलों , अवध और निज़ाम-उल-मुल्क की संयुक्त सेनाओं को हराकर मालवा के महत्वपूर्ण क्षेत्र को आधिकारिक रूप से सुरक्षित कर लिया , और 'हिंदवी स्वराज्य' को अटक से कटक पहुंचने में इनका बहुत योगदान था और इस लिए इन्होंने दिल्ली भी जीता था , और १७४० में एक भयंकर बुखार से पीड़ित होने के बाद उनकी मृत्यु हो गई और उनके सबसे बड़े पुत्र 'बालाजी बाजीराव' ने उनका उत्तराधिकारी बनाया ।

बालाजी बाजीराव , जिन्हें अक्सर नाना साहेब प्रथम के नाम से जाना जाता है, यह मराठा साम्राज्य के ८वें पेशवा थे , उन्हें १७४० में अपने पिता , पेशवा बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद पेशवा नियुक्त किया गया था , उनके कार्यकाल के दौरान सत्ता पेशवाशाही में परिवर्तित होने लगी , और मराठा साम्राज्य में होल्कर , सिंधिया और नागपुर राज्य के भोंसले अधिक शक्तिशाली हो गए थे (जो मराठा साम्राज्य के आधीन राज्य कर रहे थे) , और बालाजी बाजीराव के कार्यकाल के दौरान , मराठा क्षेत्र अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया , हालाँकि , इस विस्तार का एक बड़ा हिस्सा मराठा साम्राज्य के व्यक्तिगत सरदारों के नेतृत्व में था , और बालाजी बाजीराव का प्रशासन उनके चचेरे भाई 'सदाशिवराव भाऊ' के साथ मिलकर काम करता था और राज्य में नई विधायी और वित्तीय व्यवस्थाएँ लागू करता था, उनके नेतृत्व में हिंदवी स्वराज्य (मराठा साम्राज्य) की सीमाएँ वर्तमान पाकिस्तान के पेशावर , कर्नाटक के श्रीरंगपट्टनम और पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर तक विस्तृत हुईं ,....

और तब ‘अटक से कटक’ पहुंचाया था हिंदवी स्वराज्य को , और नानासाहेब के समय में राजधानी पुणे थी , और मराठा साम्राज्य के अन्य भागों में यात्रियों के लिए नहरें , पुल , मंदिर और आवास बनवाए उन्होंने , और पेशवा के रूप में अपने २० वर्षीय शासनकाल में , नानासाहेब ने तीन प्रमुख शक्तियों को अपने अधीन कर लिया , अर्थात् उत्तर में मुगल , दक्षिण में निज़ाम और बंगाल सल्तनत को उन्होंने अपने आधीन कर लिया था , इसके साथ ही उन्होंने पंजाब पर अफ़गानों के नियंत्रण को भी कमज़ोर किया , और दिल्ली पर उनके बार-बार होने वाले आक्रमणों को रोका , और राजपूतों और रोहिल्लाओं को अपने अधीन किया और अवध राज्य को निष्प्रभावी कर दिया , और अखंड भारत पर शासन किया ।

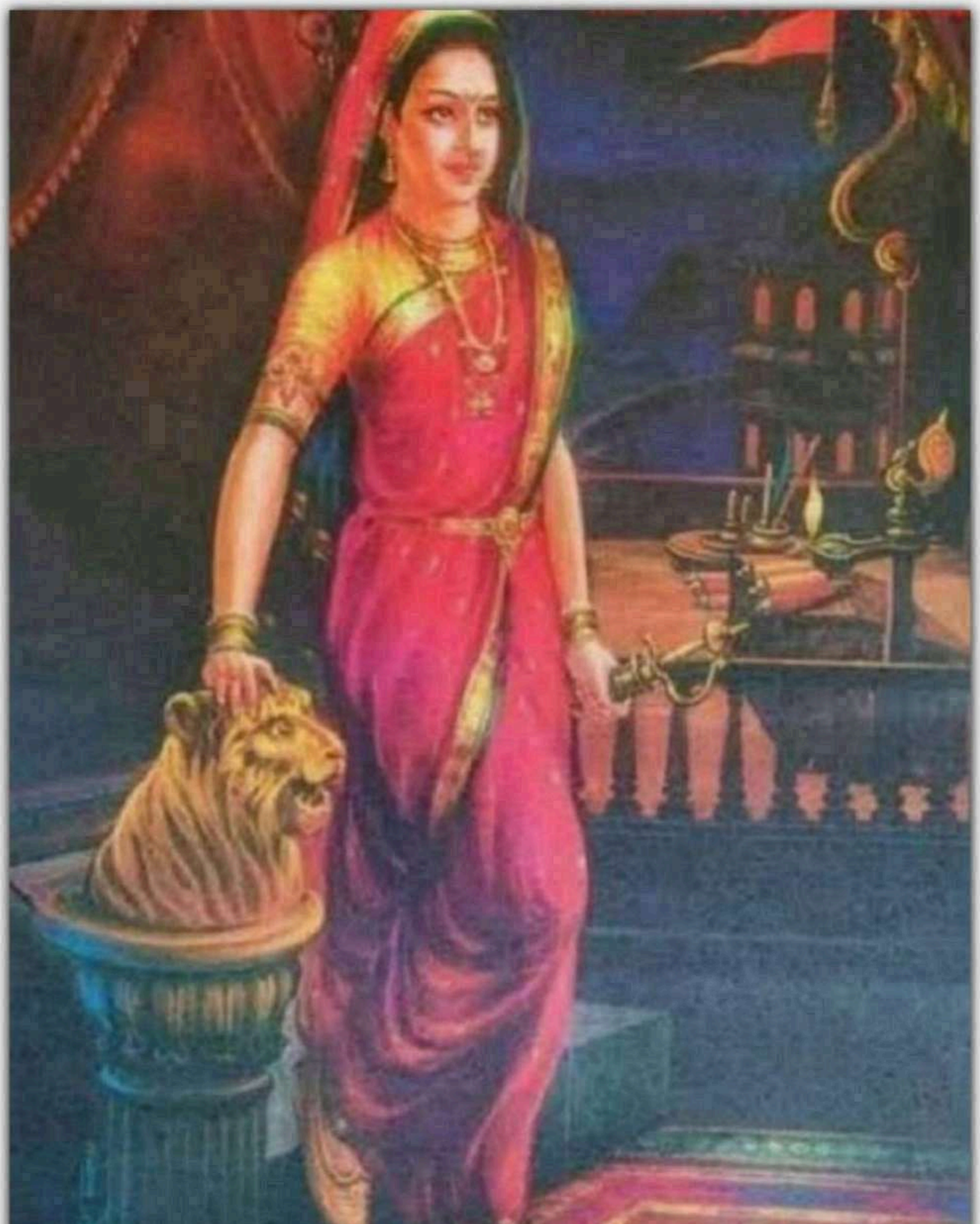


• बालाजी बाजीराव का साम्राज्य

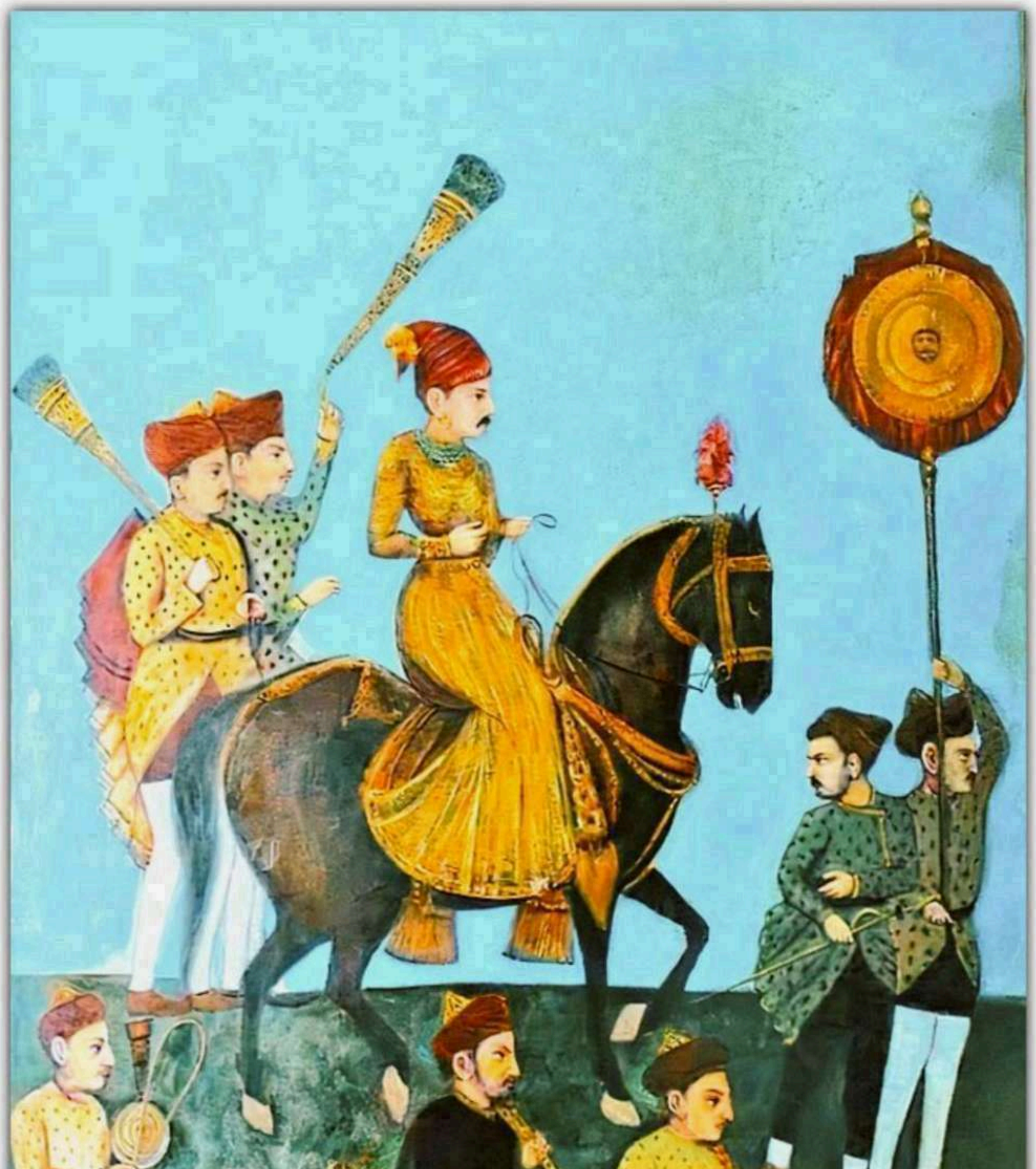


पानीपत का यह तीसरा युद्ध था , जो १४ जनवरी १७६१ को मराठा साम्राज्य और दुर्रानी साम्राज्य की हमलावर सेना के बीच हुआ था , यह युद्ध दिल्ली से लगभग ९७ किलोमीटर उत्तर के पानीपत शहर और उसके आसपास हुआ था , यहां अफगानों को भारत में तीन प्रमुख सहयोगियों का समर्थन प्राप्त था , नजीब उद-दौला जिन्होंने रोहिल्ला प्रमुखों , गिरते मुगल साम्राज्य के तत्वों , और शुजा-उद-दौला के आधीन अवध राज्य के समर्थन को राजी किया , मुगल साम्राज्य के कई उच्च पदस्थ रईसों ने मुगल साम्राज्य के एक पुराने हिमालयी सहयोगी , कुमाऊं साम्राज्य के महाराजा दीप चंद को युद्ध में अफगान पक्ष का समर्थन करने के लिए राजी कर लिया , और मराठा सेना का नेतृत्व सदाशिवराव भाऊ ने किया , और मराठा सेना का बड़ा हिस्सा पेशवा के साथ दक्कन में तैनात था , और युद्ध हुआ मगर युद्ध में ही बहुत धोखे मिले हमे इस वजह से हम पानीपत का यह युद्ध हार गए , और वो धोखे नहीं मिलते तो नक्की हम वो युद्ध जीतते , इस युद्ध में विश्वासराव जी को गोली लगी थी , और उनके साथ सदाशिवराव भाऊ और शमशेर बहादुर जैसे बड़े योद्धाओं की मृत्यु हुई ।

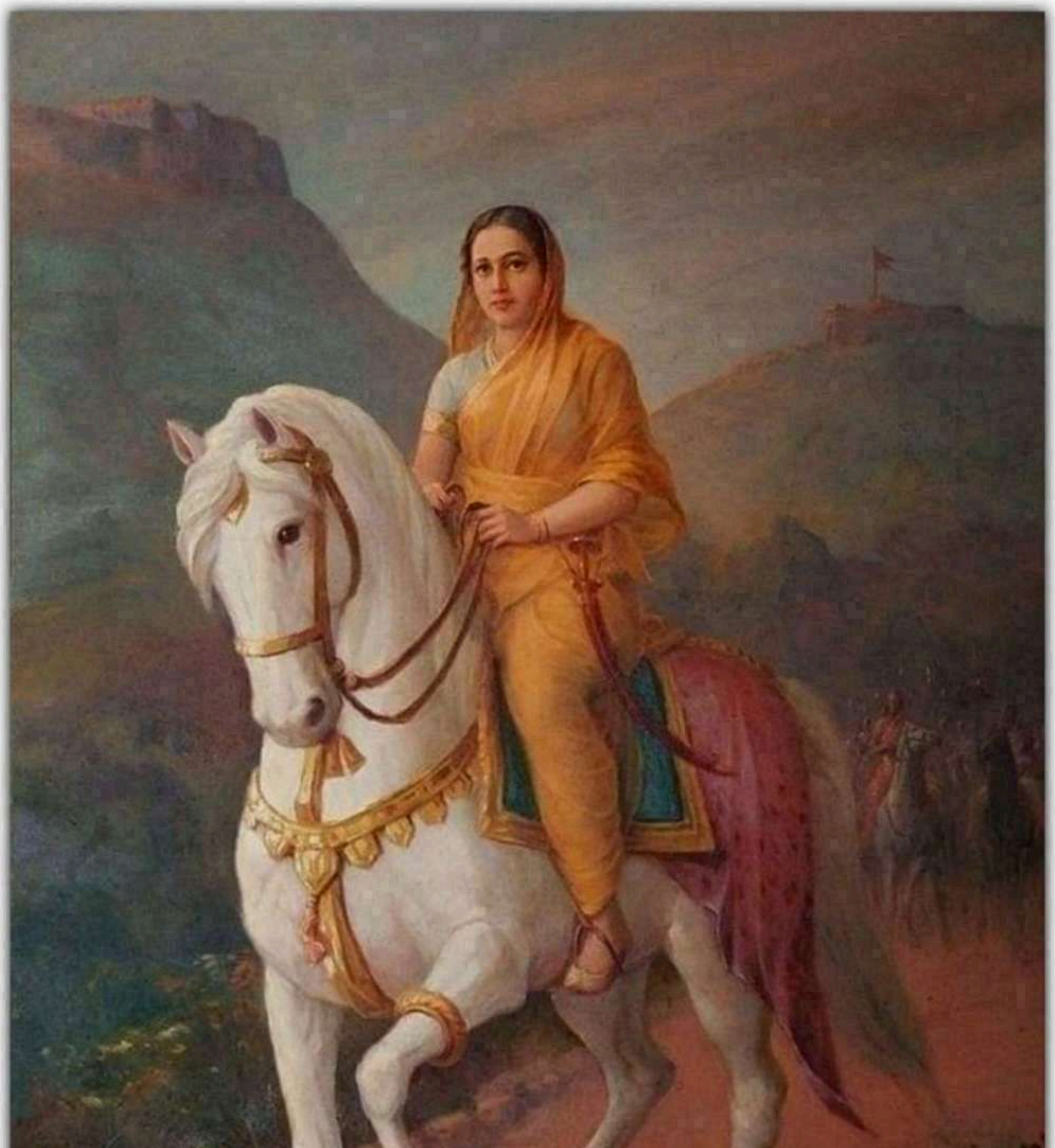
इस युद्ध से भी बड़ा धक्का तब लगा जब इस युद्ध के कुछ ही महीनों बाद बालाजी बाजीराव की मृत्यु हुई , तब प्रजा के ऊपर से उनका हाथ हता तो हमारा साम्राज्य छोटा होने लगा , इनके बाद पेशवा बने माधवराव (मगर इनके चाचा रघुनाथ राव को पेशवा बनना था , इस वजह से उनके मन में इनसे मतभेद था) , इन्होंने हिंदवी स्वराज्य पुनः स्थापित करने का प्रयास किया , जहां इनके साथ महादजी शिंदे भी थे और तब पानीपत के युद्ध के बाद भी मराठों ने ३ बार दिल्ली पर कब्जा किया , मगर माधवराव की मृत्यु के बाद पेशवा इनके छोटे भाई नारायण राव को पेशवा बनाया गया , इससे उनके चाचा 'रघुनाथ राव' बहुत चिढ़ गए और इनके विरुद्ध षड्यंत्र करने लगे तो इन्हें कारावास दिया गया , इतने में ही इनकी पत्नी ने सैनिक खरीदे और नारायण राव को मारने के पैसे उन्हें दिए , और ऐसे जो शनिवार वाडा के चौकीदार थे जो तब मराठा नहीं थे , इन्होंने नारायण राव को मार दिया और ये करने से रघुनाथ राव ने उन्हें रोका भी नहीं , इस वजह से कहते है कि आज भी शनिवार वाडा में नारायण राव को आत्म घूमती है और कहते है “काका मला वाचवा (चाचा मुझे बचाओ)", इनकी मृत्यु के बाद तो साम्राज्य हाथ से निकल ही गया , और तब पतन जैसा ही हो गया हिंदवी स्वराज्य का , फिर इससे अंग्रेज भारत में प्रमुख शक्ति बनकर उभरे , और उन्होंने भारत देश को लूटा , यहां सबको उनका गुलाम बनाया , देश का विभाजन भी कराया , और फिर सत्ता उन्हीं के मित्रो यानी कांग्रेस पटरी के गांधी-नेहरू को दे दी , और नेहरू के राज से सच के देश का और नुकसान हुआ , मगर अब परिस्थिति अच्छी होती जा रही है , मगर अब भी हमें जागरूक होने की आवश्यकता है , क्यों कि अगर हम जागरूक नहीं हुए तो ये देश नहीं रहेगा , इस लिए "जागरूक हो सनातनियों ।"



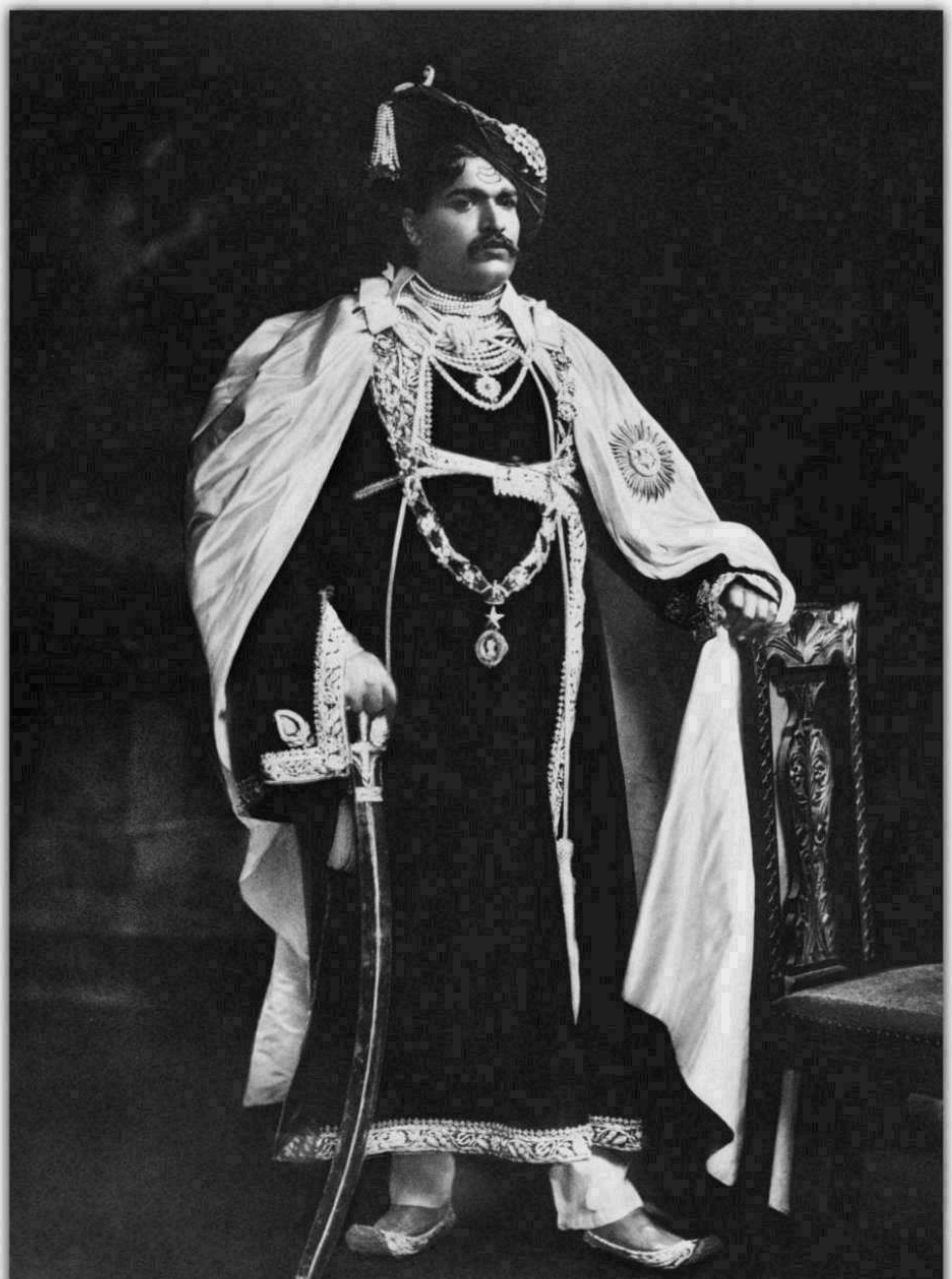
• महारानी येसुबाई



• राजाराम महाराज



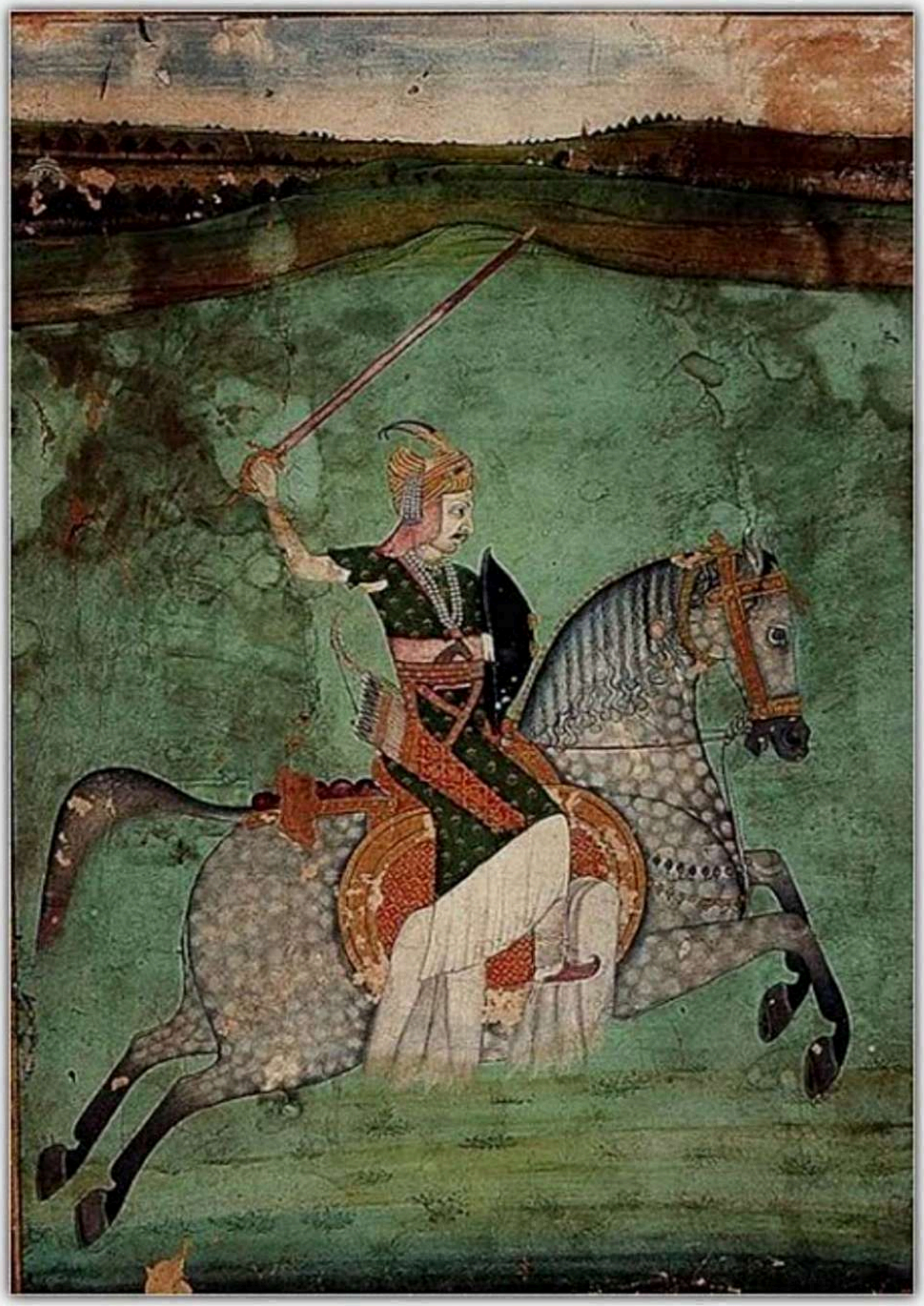
• महारानी ताराराणी बाई



• छत्रपति शाहू महाराज



• बालाजी विश्वनाथ



• बाजीराव प्रथम



• बालाजी बाजीराव



• माधव राव



• नारायण राव

लेखक परिचय

यह पुस्तक 'हर्षित मनोज जगताप' ने लिखी है , उन्होंने इस पुस्तक को लिखने से पूर्व 'सनातन संहिता' नामक पुस्तक लिखी थी , यह भारत के सच्चे इतिहास और सनातन संस्कृति के इतिहास पर आधारित है , इसमें 'एक लाख पचहत्तर हजार (१७५०००)' शब्द हैं और इस पुस्तक में ७८५ पृष्ठ हैं , यह पुस्तक भारतीय इतिहास की सच्ची जानकारी देती है , यह हर्षित मनोज जगताप द्वारा १५ वर्ष की आयु में लिखी गई थी , और उन्होंने १३ वर्ष की आयु में पुस्तक लिखना शुरू किया और १५ वर्ष की आयु में अपनी पुस्तक प्रकाशित की, और इस पुस्तक के पीछे उन्होंने २ वर्ष तक इतिहास पर शोध किया था और फिर पुस्तक में इतिहास के बारे में जानकारी दी थी ।

छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रपति संभाजी महाराज और उनके वजह से कई वीरों की वजह से आज हमारा अस्तित्व है , और हम उन्हें ही नहीं जानते , यहां तक कि कई लोगों ने छत्रपति शिवाजी महाराज को भुला दिया , उनके असली किस्सों को भुला दिया और उनका इतिहास भुला दिया , और इसी वजह से कई फिल्में भी आज–कल झूठ बताती है , उदाहरण के लिए अभी फिल्म आ रही है 'खालिद का शिवाजी' , जहां शिवराय को पंथनिरपेक्ष दिखाया है और वहां बहुत झूठ दिखाए है , और इस वजह से हर्षित मनोज जगताप ने छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके हिंदवी स्वराज्य के सत्य को उजागर करने के लिए यह पुस्तक लिखी , और इस पुस्तक का हर भाग और हर वाक्य सत्य है ... ।



• हर्षित मनोज जगताप